आर.एन.आई. नं. 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 अप्रैल 2022
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 अप्रैल 2022
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 60 अंक : 01
मूल्य : 10/- पृष्ठ संख्या : 76
डाक पंजीयन संख्या BIKANER/022/2021-23 Office
Posted At R.M.S., Bikaner

राम चमक रहे भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

# श्रमणोपासक

धार्मिक पाक्षिक

59 वर्ष

## श्रमणोपासक

60 प्रवेश

अहिंसा परमोधर्मः

सुविचार

# बिन्दु से सिंधु तक

- श्रावक की वृत्ति भी वृक्ष के समान हमेशा परोपकारमयी होनी चाहिए।
- शिक्षा वही सार्थक है जो मन को बल दे, मनोबल बढ़ाए।
- साधना के लिए आलम्बन का शुद्ध होना आवश्यक है।
- आत्मा को दोष रहित बनाना ही साधक का लक्ष्य रहना चाहिए।
- किसी के द्वारा कहे जाने वाले शब्दों से स्वयं को नहीं तौलना चाहिए।
- नया दिन या नया क्षण तो हमारे लिए वह साबित हो सकेगा, जिसमें हमारी जिन्दगी में नया मोड़ आए।
- भगवान की वाणी का एक सूत्र भी जीवन में रम जाए तो पूरा जीवन आगममय, ज्ञानमय बन जाएगा।
- मैं क्या कर रहा हूँ, इस पर गौर करने की बजाय मैं क्या सोच रहा हूँ, उस पर ध्यान देना चाहिए।
- जिम्मेदारी से भागने वाला तभी तक जिम्मेदारी से डरता है, जब तक उसका उससे मुकाबला नहीं हो जाए।
- प्रतिकूल स्थितियाँ आएंगी यह मानकर ही चलना चाहिए। सड़क पर चलते हुए अन्य कोई वाहन न आए ऐसा संभव नही है।
- कोई व्यक्ति कितना भी दोषी, क्रोधी, अभिमानी हो सकता है, किन्तु हमारी आँख निर्मल–पवित्र होनी चाहिए।
- जो कष्टों में भी अचल–अटल हिमालय की भाँति खड़ा रहता है, वह व्यक्ति साधना के क्षेत्र में भी ऊँचाई प्राप्त कर सकता है।
- यदि ऊँची सोच विकसित करने का इरादा हो तो छोटी–छोटी बातों में उलझ कर शक्ति को व्यर्थ न गवाएं।
- अहंकार का भाव व्यवहार में उत्कर्ष है, पर आन्तरिक रूप से उसके भीतर बड़ी कमजोरी होती है।
- आग में ईंधन डालने से आग भड़कती है, इसी प्रकार प्रतिशोध से प्रतिशोध ही भड़केगा।

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

राम चमक रहे भानु समाना

# आगमवाणी

जह ते न पिअं दुक्खं, जाणिअ एमेव सव्वजीवाणं।
सव्वायरमुवउत्तो, अत्तोवम्मेण कुणसु दयं।।

**–समणसुत्तं (150)**

जैसे तुम्हें दु:ख प्रिय नहीं है, वैसे ही सब जीवों को दु:ख प्रिय नहीं है। ऐसा जानकर पूर्ण आदर और सावधानीपूर्वक, आत्मोपम्य की दृष्टि से सब पर दया करो।

Just as you do not like pain, the other living beings also do not like pain. Knowing this, treat everyone as your equal and be compassionate towards all.

जीववहो अप्पवहो, जीवदया अप्पणो दया होइ।
ता सव्वजीवहिंसा, परिचत्ता अत्तकामेहिं।।

**–समणसुत्तं (151)**

जीव का वध अपना ही वध है। जीव की दया अपनी ही दया है। अत: आत्मकाम (आत्महितैषी) पुरुषों ने सभी तरह की जीव–हिंसा का परित्याग किया है।

To kill the living is to kill the self and to protect the living is to protect the self. Therefore, those desirous of self-emancipation shun violence towards the living.

भूएहिं न विरुज्झेज्जा।

**–सूत्रकृतांग (1/15/4)**

किसी भी प्राणी के साथ वैर–विरोध न बढ़ाएँ।

Do not be violent towards any living being.

तुंगं न मंदराओ, आगासाओ विसालयं नत्थि।
जह तह जयंमि जाणसु, धम्ममहिंसासमं नत्थि।।

**–समणसुत्तं (156)**

जैसे जगत् में मेरु पर्वत से ऊँचा और आकाश से विशाल और कुछ नहीं है, वैसे ही अहिंसा के समान कोई धर्म नहीं है।

Just as there is nothing higher than Mount Meru and vaster than the sky in this world, likewise there is no virtue comparable to non-violence.

**साभार– प्राकृत मुक्तावली**

# मन को बनाइये ''धर्म स्थानक''

**-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.**

धार्मिक क्रियाओं में अपनी अभिरुचि को प्रदर्शित करने के लिए मनुष्य धर्म स्थान को सजा कर रखता है, लेकिन वास्तविक रूप से तो मन को ही धर्म स्थानक बनाइए कि प्रत्येक धार्मिक क्रिया का आराधन सम्पूर्ण मनोयोग के साथ किया जाए। बाहरी धर्म स्थानकों में भी अन्य प्रकार की सजावट आवश्यक नहीं है। इनमें तो धार्मिक क्रियाओं से सम्बन्धित उपकरण- आसन, पूंजनी, रजोहरण, माला वगैरह यथास्थान रखे हुए हों तथा उनका विधिपूर्वक उपयोग किया जाता हो।

यों साधु के लिए तो सभी क्रियाएँ विधिपूर्वक करना अनिवार्य है, परन्तु श्रावकों को भी यथासाध्य बताई गई विधि का अनुसरण करना चाहिए। जिसके मन में परमात्मा की भक्ति करने की तीव्र अभिलाषा होती है, वही मन को साध कर विधिपूर्वक धार्मिक क्रियाओं को सम्पन्न करने का ख्याल रखता है। परमात्मा की इस विधि से भक्ति करने वाला सच्चा आत्मार्थी भक्त यही विचार करता है कि यह संसार नश्वर है, जिसमें प्राप्त धन-सम्पत्ति, ऐश्वर्य आदि भी मृत्यु के समय साथ चलने वाले नहीं हैं। अत: पदार्थ मोह से दूर हटकर त्याग और संयम की आराधना करनी चाहिए। वह सोचता है कि यह जो दुर्लभ मानव जीवन प्राप्त हुआ है, इसका इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही सदुपयोग करना चाहिए। इस प्रकार विचारपूर्वक जो विकारों को नष्ट करता है तथा धार्मिक क्रियाओं को भावपूर्वक अपनाता है, उसके मन के लिए यह कहा जा सकता है कि वह सच्चे अर्थों में धर्म स्थानक बना रहा है।

**साभार- आध्यात्म का कुआँ**

# चारित्र की धज्जियाँ उड़ाता चित्र

**-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.**

कहीं पढ़ा था पिकासो का एक चित्र बहुत ऊँची कीमत में बिका था। चित्र था एक गरीब महिला का। उस चित्र को लेकर रईस गाड़ी में आ बैठा। गाड़ी स्टार्ट होने को ही थी कि एक महिला भीख मांगने आई। रईस उसे दुत्कारते हुए ड्राइवर को गाड़ी स्टार्ट करने के लिए कहता है। गरीब महिला का ध्यान रईस के हाथ वाले चित्र पर गया। वह हैरान रह गई क्योंकि चित्र उसी का था। उसके विचार बने, **चित्र तेरी जय है।** तू रईस की गोद में आदर पा रहा है, जबकि मैं जो इसकी पात्र हूँ, उसी रईस से दुत्कारी जा रही हूँ।

इधर मराठवाड़ा विचरण करते हुए यह अनुभव हुआ कि प्राय: स्थानकों में फोटू-चित्र होते हैं। चारित्री को उनके चलते भले ही विहार करना पड़े, पर चित्र स्थानक की शोभा बनकर वहीं रहेंगे। चित्र के पात्रों ने अपने समय में संत-महापुरुषों को सम्मान दिया था। संतों के पधारने पर उन्हें वात्सल्य से सिंचित किया करते थे। आज उन्हीं के चित्र संतों को वहाँ से विहार करने को मजबूर कर रहे हैं। श्रद्धालु कहते पाए गए कि चित्रों के साथ भावनाएँ जुड़ी हुई हैं। बोलो यहां भी **चित्रों ने जय पाई या नहीं?** चारित्री से भावना जुड़ नहीं पाती, पर चित्रों में हमारे मन अटके पड़े हैं। बोलो, चित्रों का चमत्कार है या नहीं? इसी संदर्भ में मुझे एक और घटना याद आ रही है। घटना है आचार्य पूज्य गुरुदेव श्री नानालालजी म.सा. के अजमेर चातुर्मास की, जो मेरी स्मृति के अनुसार 1971 में था। प्रवेश के समय किसी ने छिप कर फोटू ले ली। उस फोटू ने फोटू बेचने वालों को निहाल कर दिया। लोग टूट पड़े फोटू खरीदने को। आचार्यदेव को जब ज्ञात हुआ कि फोटू की बिक्री हो रही है तो उनका स्पष्ट मत था कि-''समाज में जड़ मान्यता न पनपे।'' उन्होंने अधिवेशन के दिनों में लगभग पाँच हजार जनता के बीच कहा कि मेरी मानते हो तो फोटो को फाड़ कर फेंक दो। पर वाह रे फोटो, चित्र, **तुम्हारी चमक ने वहाँ भी जय पाई।** आचार्य को मानने वाले बहुतों ने आचार्य की नहीं मानी। वाह रे जमाना! जहाँ चारित्र की चांदनी के बजाय चित्र की चमक महत्व पा रही है। चारित्र की धज्जियाँ उड़ाता चारित्री का चित्र।

**16.04.2016, चैत्र शुक्ल 10, शनिवार** **साभार- आरोह**

राम चमक रहे भानु समाना

# अनुक्रमणिका

| | |
|---|---|
| भगवान श्री महावीर | 07 |
| NAMING CEREMONY AND THE SUBSEQUENT DEVELOPMENT | 13 |
| अवसान | 15 |
| अणुव्रतों और महाव्रतों का सम्बन्ध | 19 |
| अक्षय निधि स्वयं की | 20 |
| The Path to Eternal Happiness: Self-discipline | 22 |
| मृषावाद | 26 |
| श्रीमद् भगवती सूत्र | 28 |
| श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र | 29 |

| | |
|---|---|
| धैर्य की देवी दमयन्ती | 39 |
| जागरुक बनें हम तो हिंसा होगी कम | 45 |
| पर्व-दिवस की प्रेरणाएँ | 47 |
| निदान का परिणाम | 49 |
| जीवन को संकीर्ण नहीं सर्वांगीण बनाएँ | 51 |
| वर्तमान संदर्भ में महावीर-दर्शन की प्रासंगिकता | 53 |
| करुणाहीन होता मानव (भाग-2) | 58 |
| तत्त्व बोध | 31 |
| समकित के 67 बोल | 42 |

| | |
|---|---|
| सर्वशक्तिमान : महावीर के मौलिक सिद्धान्त | 56 |
| नमक की व्यथा | 57 |
| नवपद की महिमा | 59 |
| विविध गुरु चरण विहार | 61 |
| गुरु सुदर्शन जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में | 33 |

# सुनहरी कलम से...

*सम्मानित स्नेहीजन,*

*सादर जय जिनेन्द्र!*

प्रकृति का चक्र अव्याबाध है, अनवरत है, जिसके कारण सभी चीजें स्वत: सम्पादित हो जाती है। प्रकृति ने अपने आँचल की जो अनमोल धरोहर हमें दी है उसके लिए हमें प्रतिपल प्रकृति का धन्यवाद करना चाहिए। प्रकृति ने हमें प्राणवायु दी, उदरपूर्ति हेतु भोजन दिया, जीवन अमृत तुल्य जल दिया, अपने एक-एक निखरे स्वरूप के रूप में मनमोहक छटाएँ दी, जो कभी हमारी प्रेरणा बनते हैं तो कभी ताकत। कभी ये छटाएँ नदी की तरह अनवरत चलते रहने की शिक्षा देती है तो कभी अपने हक के लिए चट्टान की तरह अडिग रहने का साहस प्रदान करती है। अपने वन, उपवन, सौन्दर्यता के जरिए समानता का सन्देश देते हुए सभी को खुश रखने व भेदभाव नहीं करने की सीख भी प्रकृति के कण-कण में है।

प्रकृति के ही प्रत्येक अंग से हमारा जीवन है, इस बात से हम अनभिज्ञ नहीं हैं, परन्तु फिर भी रक्षक बनने के स्थान पर हम प्रकृति के भक्षक बने हुए हैं। प्रकृति ने हमें जीवन-यापन हेतु पूर्णत: सामग्री प्रदान की है, परन्तु मानव रूपी दानव अपने संतोष को परे रखकर प्रकृति को लूटने में कोई कसर नहीं छोड़ रहा है। प्रकृति के शोषण का प्रत्येक व्यक्ति साक्षी है। समय की चाल के साथ हम तो आगे बढ़ रहे हैं, परन्तु अपनी मानवता, ईमानदारी, विवेक, दया और संतोष को साथ ले जाना भूल गए और इस भूल की भयावहता हमें अपने मार्ग में वैश्विक महामारी, प्राकृतिक संसाधनों की कमी, प्राकृतिक आपदाएँ, प्रदूषण और अनेक बीमारियों के रूप में नजर आ रही हैं और संदेश दे रही हैं कि ठहर जाओ! संतोष कर लो, नहीं तो तुम्हारा भविष्य अंधकारमय होने के साथ पीड़ादायी भी बन जाएगा और तुम न सार्थक जीवन जी पाओगे और न ही पंडित मरण प्राप्त कर पाओगे। छद्मस्थ मानव आँख पर पट्टी बांधे, सोच पर स्वार्थ के पहिए लगाए द्रुतगति से दौड़ रहा है। कामयाबी के कृत्रिम पंख उसे इतना ऊपर ले जा चुके हैं कि वह नीचे नहीं आ सकता। थक कर, हार कर वह नीचे ही गिरेगा और यह पतन एक ऐसा दयनीय पतन होगा जिसकी हमें उम्मीद भी नहीं होगी।

अभी भी समय है, हम रुक सकते हैं और पीछे भूले हुए अपने मानवता, दया, विवेक, संतोष आदि मूल गुणों को अपने साथ लें और फिर ही आगे बढ़ें। आज हमने प्रकृति को सहेजा तो कल प्रकृति हमें सम्हाल लेगी अन्यथा कल्पना मात्र से भी हम सिहर उठते हैं कि यदि प्रकृति ने हमारा साथ छोड़ दिया या हमारा शोषण शुरू कर दिया तो क्या हम सहन कर पाएँगे?

**''हमारा अस्तित्व प्रकृति में ही है''**

प्रकृति के अमर्यादित हनन से प्राप्त होने वाली प्रत्येक वस्तु से अपने आपको दूर करने की कोशिश करें, क्योंकि शुरूआत ही परिणाम की महत्त्वपूर्ण सीढ़ी है। इन्हीं शुभभावनाओं के साथ...

**सह-सम्पादिका**

# भगवान श्री महावीर

*गतांक 15-16 मार्च 2022 से आगे...*

उस समय सौधर्म सभा में बैठे हुए शक्रेन्द्र ने अवधिज्ञान से भगवान को ध्यानमग्न देखा। वहीं से भगवान को वंदन करके शक्रेन्द्र सभा में भगवान की प्रशंसा करते हुए कहने लगे कि इन ध्यानस्थ परमात्मा को विचलित करने में कोई भी देव, दानव या मनुष्य समर्थ नहीं है। इन्द्र द्वारा की गई भगवान की प्रशंसा सुनकर महामिथ्यात्वी और रौद्रपरिणामी संगम नाम का सामानिक देव इन्द्र से कहने लगा– ''स्वामी! आप बार-बार मनुष्य की प्रशंसा करके हम देवों का अपमान करते हैं। कोई भी मनुष्य हम देवों से अधिक सामर्थ्य न रखता होगा। आप जिनकी प्रशंसा करते हैं उनको मैं अभी विचलित करके आपको बताता हूँ कि देव, मनुष्यों की अपेक्षा कैसे शक्तिसम्पन्न होते हैं।'' संगम देव की बात इन्द्र को अनुचित तो मालूम हुई, लेकिन इन्द्र यह विचार कर चुप रहे कि मेरे कुछ बोलने से इस देव को यह कहने को जगह मिल जाएगी कि इन्द्र की सहायता से ही अरिहन्त तप करते हैं।

दुष्ट प्रकृति वाला संगम देव गर्वपूर्वक भगवान के समीप आया और भगवान को ध्यान से विचलित करने के लिए बड़े-बड़े उपसर्ग देने लगा। **उसने प्रारंभ में रजवृष्टि की, तत्पश्चात् क्रमशः वज्रमुखी चींटियाँ, डाँस, प्रचण्ड चोंच वाली धीमेल, बड़े-बड़े डंक वाले बिच्छू, साँप-नेवले, मूसे, गज, व्याघ्र, पिशाच, सिद्धार्थ राजा, त्रिशला रानी, दावानल, चाण्डालादि क्रूर स्वभाव वाले मनुष्य, तीक्ष्ण चोंच वाले पक्षी, प्रचण्ड वायु, भटोलिया, चक्र आदि उत्पन्न किए। इसी प्रकार, कामदेव के अस्त्ररूप उपवन सहित स्त्रियाँ भी वैक्रिय की और एक ही रात में सब मिलाकर बीस उपसर्ग भगवान को दिए। संगम द्वारा दिए हुए उपसर्गों से भगवान को पीड़ा तो अवश्य हुई, परन्तु भगवान ध्यान से किंचित् भी विचलित नहीं हुए।** जब वह देव अपने कृत्यों में असफल रहा और थक गया तब बहुत लज्जित हुआ। सूर्योदय हो जाने से भगवान प्रतिमा पालकर विहार कर गए तब भी दुष्ट बुद्धि वाला देव ''मैं इन्द्र के सामने किस मुँह से जाऊँगा'' इस विचार से छः महीने तक भगवान के साथ-साथ रहा। वह देव, जहाँ भगवान भिक्षा के लिए जाते, वहाँ पदार्थों को अनैषणिक कर देता और इसी प्रकार अन्य कष्ट भी देता रहा। अनेक उपाय करने पर भी जब वह देव अपने उद्देश्य में सफल न हुआ, तब निराश हो भगवान को नमस्कार करके भगवान से प्रार्थना करने लगा– प्रभो! इन्द्र द्वारा आपकी प्रशंसा सुनकर आपको अप्रशंसनीय बनाने के लिए मैंने गर्वपूर्वक अनेक कष्ट दिए, लेकिन आप उन कष्टों में भी उसी प्रकार धीर बने रहे, जिस प्रकार तपाने पर भी सोना अपनी कांति नहीं त्यागता। अब आप मेरे अपराध क्षमा करिए और आहार लाकर पारणा करिए। इस प्रकार भगवान से क्षमा-प्रार्थना करके वह संगम देव अपने स्थान को गया।

इन्द्रादि देव गीत-नृत्य बन्द करके संगम की चेष्टा का परिणाम देख ही रहे थे। छः मास पश्चात् जब संगम देव असफल होकर मलिन मुख और लज्जित बदन से सुधर्मा सभा में आया तब इन्द्र ने उसकी ओर से मुँह फेर लिया और उच्च स्वर में सब देवताओं से कहा कि यह संगम महापापी है। इसका मुख देखने से भी पाप लगता है। यदि यह यहाँ रहेगा तो इसके पाप पुद्गल हमसे भी चिपटने संभव है। अतः इसे देवलोक से बाहर निकाल दिया जाए। ऐसा कहकर इन्द्र

ने संगमदेव पर वामचरण प्रहार किया। इन्द्र की घोषणा सुनकर आत्मरक्षक देव संगम को धक्के मारने लगे। संगम अपमानित होकर मेरु पर्व की चूलिका पर आकर रहने लगा। इन्द्र ने संगम की देवियों के सिवा संगम के परिवार को संगम का साथ देने से रोक दिया।

इधर भगवान ने गोकुल ग्राम में छ:मासी तप का पारणा किया। देवताओं ने पाँच दिव्य प्रकट करके दान की महिमा की। अनेक इन्द्र और देव भगवान की सेवा में उपस्थित होकर भगवान की दृढ़ता की प्रशंसा करने लगे और फिर भगवान को वन्दन करके अपने-अपने स्थान को गए।

गोकुल ग्राम से विहार करके भगवान विशाला नगरी पधारे। भगवान ने ग्यारहवां चातुर्मास विशाला नगरी में ही बलदेव के मन्दिर में चौमासी तपपूर्वक प्रतिमा धारण करके बिताया। उस विशाला में एक जिनदास नाम का श्रेष्ठी श्रावक रहता था। जिनदास वैभवहीन हो गया था इसलिए लोग उसे जीर्ण सेठ कहते थे। जीर्ण सेठ प्रतिदिन भगवान की सेवा करता हुआ पारणार्थ दान देने की भावना रखता था, लेकिन जब भगवान भिक्षा का समय होने पर भी जीर्ण के यहाँ आहार लेने नहीं पधारे, तब जीर्ण सेठ यह विचार करता कि भगवान के आज भी तप होगा, भगवान कल पधारेंगे। इस प्रकार आशा ही आशा में चार माह बीत गए। चातुर्मास की समाप्ति पर जीर्ण सेठ ने स्वयं भी इस आशा से पारणा नहीं किया कि आज तो भगवान पधारेंगे ही। भगवान को दान देने की अभिलाषा से जीर्ण सेठ भगवान के पधारने की प्रतीक्षा करने लगा। किन्तु भिक्षा के समय पर भगवान ने पूरण श्रेष्ठी के यहाँ पधार कर पारणा किया। देवों ने पाँच दिव्य प्रकट करके दान की महिमा की। देवदुंदुभी की आवाज सुनकर जीर्ण सेठ भगवान के न पधारने से अपने आपको मन्दभागी मानने लगा। भगवान को दान देने के लिए जीर्ण सेठ के परिणाम इतने उत्कृष्ट थे कि यदि जीर्ण सेठ को दुंदुभी नाद एक घड़ीभर न सुनाई देता और उसके उत्कृष्ट परिणामों का प्रवाह न टूट जाता तो केवलज्ञान प्राप्त हो जाता।

पूरण सेठ के यहाँ पारणा करके भगवान ने विशाला से विहार किया। विचरते हुए भगवान कौशाम्बी पधारे। कौशम्बी में तप करके भगवान ने एक महा-कठिन अभिग्रह धारण किया और निश्चय किया कि **यदि अभिग्रह की पूर्ति के साथ मुझे पारणा के दिन आहार मिलेगा तब तो मैं पारणा करूँगा अन्यथा छ: मास तक अन्न-जल नहीं लूंगा। वह अभिग्रह इस प्रकार था- (1) राजा की कन्या हो (2) स्वयं दासीपने को प्राप्त हुई हो (3) अविवाहिता हो (4) तीन दिन की भूखी हो (5) सिर मुण्डा हो (6) कछोटा धारण किए हो (7) एक पाँव चौखट के बाहर हो और एक पाँव चौखट के भीतर हो (8) हाथों में हथकड़ी हो (9) पाँवों में बेड़ी हो (10) उड़द के बाकले हो, जिन्हें वह सूप में लिए हो (11) दान की भावना कर रही हो और (12) एक आँख हर्षपूर्ण तथा (13) दूसरी आँख अश्रुपूर्ण हो। ऐसी कन्या से भिक्षा मिलेगी तभी मैं इस तप के अन्त में पारणा करूँगा।**

इस प्रकार तेरह बोलों का कठिन अभिग्रह लेकर भगवान विचरने लगे। भगवान को विचरते हुए पाँच दिन कम छ: मास हो गए, परन्तु अभिग्रह के अनुसार योग न मिला। कौशाम्बी के राजा शतानिक और उनकी रानी मृगावती ने भगवान का अभिग्रह जानने और भगवान को पारणा कराने की बहुत चेष्टा की, परन्तु वे असफल ही रहे। भगवान जिस घर जाते उस घर के लोग पहले तो हर्षित होते, लेकिन जब भगवान अभिग्रह का योग न मिलने से बिना आहार लिए वापस चले जाते तब लोगों में निराशा और चिन्ता होती।

दोपहर का समय था। सूर्य अपनी प्रचण्ड किरणों से भूमि को तपा रहा था। लोग गर्मी से बचने के लिए अपने-अपने घरों में आनन्द कर रहे थे। ऐसे समय में धनवाह सेठ ने अपने घर के तहखाने में बन्द एक विपदग्रस्त राजकन्या को तहखाने से बाहर निकाला। वह कन्या अत्यन्त रूपवती थी, परन्तु उसका सिर मुँडा हुआ था, हाथों में हथकड़ी और पाँवों में बेड़ी पड़ी हुई थी, काछ लगाए थी तथा तीन दिन की भूखी भूमिगृह में बन्द थी। उस राजकन्या को बाहर निकालकर धनवाह सेठ उससे इस

दशा में पहुँचने का कारण पूछने लगा। राजकन्या ने धनवाह सेठ को उत्तर दिया कि ''पिताजी! आप मेरा समाचार फिर पूछना, पहले मुझे कुछ खाने को दीजिए, मैं बहुत भूखी हूँ।'' धनवाह सेठ ने अपने घर में इधर-उधर देखा तो सब जगह ताले लगे हुए थे। केवल घुड़साल में घोड़ों के लिए उबाले हुए उड़द रखे हुए थे। वहाँ कोई बर्तन भी न था, केवल एक सूप दिखाई दिया। धनवाह सेठ ने उसी सूप में थोड़े-से उड़द रखकर राजकन्या को दिए और स्वयं भोजन सामग्री लाने के लिए बाजार चला गया। उड़द के बाकले रखे हुए सूप को लेकर राजकन्या किसी अतिथि की प्रतिक्षा करती हुई घर के द्वार पर बैठी हुई थी। उसकी आँख से अश्रुधारा बह रही थी। यह राजकन्या वही है, जो आगे जाकर भगवान महावीर की प्रधान शिष्या के रूप में महासती चन्दनबाला के नाम से प्रख्यात हुई।

चन्दनबाला अतिथि की प्रतिक्षा करती हुई द्वार पर बैठी थी इतने में भगवान महावीर वहाँ पधारे। भगवान ने देखा तो उन्हें अभिग्रह की सारी बातें पूरी दिखाई दी। **(टिप्पणी-ऐसी मान्यता प्रचलित है कि चन्दनबाला की आँखों से अश्रुधारा नहीं बह रही थी लेकिन यह मान्यता उपयुक्त नहीं है। स्पष्टीकरण हेतु इसी अंक के पृष्ठ सं. 31 तत्त्व बोध में देखें।)** उसी वक्त धनवाह सेठ के द्वार पर पधारकर भगवान ने करपात्र में चन्दनबाला का 'उड़द बाकले'' का दान ग्रहण किया। भगवान को दान देते ही देवताओं ने चन्दनबाला के हाथ-पाँव की हथकड़ी-बेड़ी को स्वर्णरत्न के आभूषणों में परिणित कर दिया और शरीर को दिव्य अलंकारयुक्त बनाकर रत्नवृष्टि द्वारा दान की महिमा की।

कौशाम्बी से विहार करके भगवान चम्पानगरी पधारे। भगवान ने बारहवां चातुर्मास चम्पानगरी में स्वातिदत्त ब्राह्मण की अग्निहोत्रशाला में रहकर बिताया। चातुर्मास की समाप्ति पर भगवान ने चम्पानगरी से विहार कर दिया और जनपद में विचरने लगे।

भगवान विचरते हुए एक जगह कायोत्सर्ग करके रहे। उस समय त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव में जिस शय्या-रक्षक ने कानों में तपाया हुआ शीशा डलवाया था, उस शय्या-रक्षक का जीव पूर्वभव में ग्वाला हुआ था। भगवान को देखकर ग्वाले ने पूर्वभव का वैर होने के कारण द्वेष करके भगवान के कानों में लकड़ी की खूंटियाँ (कीलें) ठोक दी और किसी को दिखाई न पड़े इसलिए उसने खूंटियों का बाहरी भाग काटकर बराबर कर दिया। भगवान ने इस वेदना को भी धैर्यपूर्वक सहन किया, वे ध्यान से विचलित नहीं हुए। वहाँ से विहार कर भगवान अपापानगरी (मध्यम पावा) पधारे। अपापापुरी में भगवान भिक्षार्थ सिद्धार्थ नाम के वणिक के घर गए। सिद्धार्थ के यहाँ एक वैद्य बैठा हुआ था। भगवान का दुर्बल मुँह देखकर वैद्य समझ गया कि ये मुनि शल्य पीड़ित हैं। ऐसा वैद्य ने सिद्धार्थ से कहा। अन्त में सिद्धार्थ की प्रेरणा से वैद्य ने भगवान के कानों की कीलों को युक्तिपूर्वक निकाल दिया। कानों की कीलें निकलते समय भगवान को घोर वेदना हुई और भगवान के मुँह से सहसा चीख निकल पड़ी। कीलें निकालकर वैद्य ने संरोहिणी औषध द्वारा भगवान के कानों के घाव ठीक किए।

इस प्रकार के उपसर्गों की शृंखला को समभाव से सहते रहने के कारण भगवान के घातिकर्म प्राय: नष्ट हो गए थे। उपसर्ग सहने के साथ ही भगवान ने बारह वर्ष, छ: मास और पन्द्रह दिन घोर तप भी किया। उन्होंने नित्य भोजन या उपवास के पारणे में कभी भोजन नहीं किया। भगवान ने सब मिलाकर तीन सौ उनपचास पारणे किए थे। (तीन सौ उनपचास दिन भोजन किया था) शेष दिन तपस्या में ही बिताए थे। तपस्या में बेले से कम की तपस्या कभी नहीं की। हाँ अधिकाधिक छ: माह तक का तप अवश्य किया था। भगवान ने जितना भी तप किया सब चौविहार किया। भगवान कभी सोए भी नहीं। उनका लगभग समस्त समय विहार या कायोत्सर्ग में ही व्यतीत हुआ।

उपसर्गों को सहते हुए और तप करते हुए भगवान ऋजुबालिका नदी के तट पर स्थित जृम्भक ग्राम में पधारे। वहाँ छठ तप करके भगवान शाम गृहस्थ के खेत में **गोदोहिका आसन** से सूर्य की आतापना लेने लगे। उस समय श्रेणी आरूढ़ भगवान के घातिक कर्म क्षय हो जाने

से वैशाख शुक्ल 10 को दिन के पिछले प्रहर में उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र (हस्तोत्तरा नक्षत्र) में भगवान वर्द्धमान को सम्पूर्ण केवलज्ञान, केवलदर्शन प्राप्त हुआ। भगवान को केवलज्ञान प्राप्त होते ही क्षणभर के लिए त्रिलोक में उद्योत हुआ और नारकीय जीवों को भी शान्ति मिली।

आसनकम्प से भगवान महावीर को केवलज्ञान प्राप्त हुआ जानकर देव तथा इन्द्र अपने-अपने परिवारों सहित भगवान को वन्दन करने के लिए आए। समवसरण की रचना हुई। परन्तु सायंकाल का समय था, इसलिए बारह प्रकार की परिषद के बदले आठ ही प्रकार की परिषद उपस्थित हुई। भगवान ने धर्मोपदेश दिया, फिर भी कोई त्याग-प्रत्याख्यान नहीं हुआ। क्योंकि परिषद में चार जाति के देव और देवियाँ ही उपस्थित थी और देव के चारित्रावरणीय कर्म का क्षयोपशम नहीं होता, किन्तु उदय में ही रहता है। इस कारण भगवान का उपदेश होने पर भी कोई त्याग-प्रत्याख्यान नहीं हुआ। यह आश्चर्य की घटना भी इस अवसर्पिणी काल के प्रभाव से ही घटी, क्योंकि केवलज्ञान उत्पन्न होने के पश्चात् तीर्थंकरों द्वारा दिया गया प्रथम उपदेश सफल होता ही है, निष्फल नहीं होता, लेकिन भगवान महावीर द्वारा दी गई यह देशना फलशून्य रही।

जृम्भक ग्राम से भगवान ने मध्य-अपापानगरी की ओर विहार किया। वहाँ एक बड़ा भारी यज्ञ हो रहा था, जिसके लिए धुरन्धर ब्राह्मण एकत्रित हुए थे। भगवान का समवसरण अपापानगरी के महासेन वन में हुआ। भगवान के उस समवसरण में इन्द्रों और देव-देवियों का आगमन विशेष रूप से होता था।

अपापानगरी में सोमिल ब्राह्मण ने यज्ञ करने के लिए इन्द्रभूति आदि ग्यारह धुरन्धर विद्वानों और हजारों ब्राह्मणों को बुलाया था। वे सब यज्ञ कर रहे थे इतने में ही भगवान के समवसरण में जाते हुए देव उधर से निकले। देवों को देखकर 'इन्द्रभूति' सबसे कहने लगे कि देखो, यज्ञ के लिए मन्त्र से बुलाए हुए देवता प्रत्यक्ष यहाँ आ रहे हैं। इन्द्रभूति की बात सुनकर सब लोग देवों की तरफ देखने लगे, लेकिन देव यज्ञवेदी पर न आकर यज्ञ-स्थल से आगे निकल गए। इस पर इन्द्रभूति गर्वपूर्वक कहने लगे कि मनुष्य तो भूलते ही हैं, परन्तु देव भी भूलते हैं। इतने में ही किसी ने कहा कि महासेन वन में सर्वज्ञ भगवान महावीर पधारे हैं और ये देवगण उन्हीं को वन्दन करने जा रहे हैं। यह सुनकर इन्द्रभूति कहने लगे कि क्या कोई ओर भी सर्वज्ञ हैं? मैं अभी जाकर सर्वज्ञ कहलाने वाले महावीर का गर्व दूर करता हूँ।

**इस प्रकार के उपसर्गों की शृंखला को समभाव से सहते रहने के कारण भगवान के घातिकर्म प्रायः नष्ट हो गए थे। उपसर्ग सहने के साथ ही भगवान ने बारह वर्ष, छः मास और पन्द्रह दिन घोर तप भी किया। उन्होंने नित्य भोजन या उपवास के पारणे में कभी भोजन नहीं किया। भगवान ने सब मिलाकर तीन सौ उनपचास पारणे किए थे। (तीन सौ उनपचास दिन भोजन किया था) शेष दिन तपस्या में ही बिताए थे। तपस्या में बेले से कम की तपस्या कभी नहीं की। हाँ अधिकाधिक छः माह तक का तप अवश्य किया था। भगवान ने जितना भी तप किया सब चौविहार किया। भगवान कभी सोए भी नहीं। उनका लगभग समस्त समय विहार या कायोत्सर्ग में ही व्यतीत हुआ।**

अपने पाँच सौ शिष्यों को साथ लेकर इन्द्रभूति भगवान महावीर के समवसरण में आए। भगवान की शान्त मुद्रा देखकर इन्द्रभूति के विचार कुछ और ही हो गए। इतने ही में भगवान के मुख से 'हे इन्द्रभूति गौतम तुम आए?' यह सुनकर इन्द्रभूति आश्चर्य में पड़ गए कि ये मेरा नाम कैसे जानते हैं? फिर यह विचार कर उन्होंने आश्चर्य मिटाया कि मेरा नाम प्रसिद्ध है, इसलिए ये जानते हैं तो कोई आश्चर्य नहीं। मेरा नाम बता देने के कारण ही मैं इन्हें सर्वज्ञ नहीं मान सकता। सर्वज्ञ तो तभी मान सकता हूँ जब ये मेरे हृदय के संशय को जानकर उसे मिटावे। इन्द्रभूति

इस प्रकार का विचार कर ही रहे थे कि भगवान ने कहा- ''हे इन्द्रभूति! तुम्हारे हृदय में जीव विषयक शंका है कि जीव है या नहीं? परन्तु वास्तव में जीव है और इन-इन प्रमाणों से जीव का अस्तित्व सिद्ध है।'' अपने हृदय का संशय और उसका समाधान सुनकर इन्द्रभूति भगवान को नमस्कार करके कहने लगे कि ''हे प्रभो! मैंने अज्ञानवश गर्व किया था, परन्तु आपने मेरा अज्ञान मिटा दिया, जिससे मेरा गर्व भी दूर हो गया। अब आप कृपा करके मुझे अपना शिष्य बनाइए। इस प्रकार भगवान से प्रार्थना करके अपने पाँच सौ शिष्यों सहित इन्द्रभूति गौतम भगवान के समीप संयम लेकर प्रव्रजित हो गए।

शिष्यों सहित इन्द्रभूति के संयम में प्रव्रजित होने का समाचार सुनकर अग्निभूति विचारने लगे कि मेरे भ्राता इन्द्रभूति मायावी द्वारा छले गए हैं। अत: मैं जाकर उस मायावी को जीतूँगा और अपने भाई को लेकर लाऊँगा। इस प्रकार विचार कर अपने पाँच सौ शिष्यों सहित अग्निभूति भी भगवान के पास आए, लेकिन अपने हृदय के कर्म विषयक संशय का समाधान भगवान से सुनकर अपने शिष्यों सहित अग्निभूति भी संयम में प्रव्रजित हो गए। इन्द्रभूति और अग्निभूति की ही तरह यज्ञ कराने के लिए आए हुए ग्यारह विद्वानों में से शेष नौ विद्वान् भी अपने-अपने शिष्यों सहित भगवान के पास अपने-अपने हृदय के संशय का समाधान पाकर संयम में प्रव्रजित हो गए। भगवान ने इन ग्यारह विद्वान् शिष्यों को त्रिपदी का उपदेश दिया, जिससे उन्होंने द्वादशांगी (बारह अंगशास्त्र) की रचना की। भगवान ने उन सभी को गणधर पद प्रदान किया।

जिसके हाथ से उड़द के बाकले लेकर भगवान ने पारणा किया था, उस सती चन्दनबाला ने यह प्रण किया था कि भगवान महावीर को केवलज्ञान होते ही मैं भगवान महावीर के पास दीक्षा लूँगी। देवों ने चन्दनबाला को भगवान की खबर दी तो वह सेवा में उपस्थित हुई। वहाँ उपस्थित अन्य स्त्रियों सहित चन्दनबाला ने भगवान का उपदेश सुना, जिससे उन सब स्त्रियों को संसार से वैराग्य हो गया और उन्होंने चन्दनबाला के नेतृत्व में भगवान के पास संयम स्वीकार किया।

पश्चात् भगवान जनपद में विचरने लगे। एक समय भगवान विचरते हुए ब्राह्मण कुण्ड ग्राम में पधारे। वहाँ की परिषद भगवान को वन्दन करने के लिए आई, जिसमें ऋषभदत्त ब्राह्मण और उसकी पत्नी देवानन्दा भी थी। सब लोग भगवान को वन्दना करके बैठ गए। उस समय देवानन्दा को आप ही आप ऐसा हर्ष हुआ कि रोमांच हो आया और उसके स्तनों से दूध की धारा निकल पड़ी। देवानन्दा की प्रसन्नता और उसके स्तनों से निकलती हुई दूध की धारा देखकर श्री इन्द्रभूति गणधर ने भगवान से इसका कारण पूछा। भगवान ने उत्तर में फरमाया कि ''हे इन्द्रभूति गौतम! यह देवानन्दा मेरी माता है। दसवें स्वर्ग का आयुष्य पूर्ण करके मैं इन्हीं के गर्भ में आया था। बयासी रात तक देवानन्दा के गर्भ में रहा। पश्चात् इन्द्र की आज्ञा से हरिणगमेषी देव ने मुझे त्रिशला देवी के गर्भ में पहुँचाया।

भगवान के मुख से यह वृत्तान्त सुनकर ऋषभदत्त और देवानन्दा को बड़ा ही आश्चर्य और हर्ष हुआ। वे अपने मन में कहने लगे कि पूर्व-पुण्य की न्यूनता से हम इस विभूति को अपने यहाँ न रख सके। अन्त में संसार की अनित्यता को समझकर ऋषभदत्त और देवानन्दा संयम में प्रव्रजित हो गए और कर्मक्षय करके दोनों ने सिद्ध पद प्राप्त किया।

गोशालक भगवान के पास से तभी से पृथक् हो गया था, जब भगवान छद्मस्थ थे। तेजोलेश्या की लब्धि और अष्टांग निमित्त के ज्ञान से गर्वित गोशालक अपने आपको सर्वज्ञ कहता और जिनेश्वर मानता हुआ श्रावस्ती में आया था। इधर विचरते हुए भगवान भी श्रावस्ती पधारे। भगवान के शिष्य आनन्द नाम के स्थविर मुनि श्रावस्ती नगरी में गए थे। वहाँ उन्होंने यह सुना कि गोशालक सर्वज्ञ हैं। वे भगवान के पास आकर भगवान से पूछने लगे- ''हे प्रभो! क्या गौशालक सर्वज्ञ है? भगवान ने गोशालक का समस्त पूर्व वृत्तान्त प्रकट कर दिया। भगवान द्वारा प्रकट किया हुआ गोशालक का पूर्व वृत्तान्त श्रावस्ती नगरी में फैल

गया, जिससे गोशालक बहुत क्रुद्ध हुआ और जब आनन्दमुनि गोशालक के निवास स्थान के पास से निकले तब गोशालक ने उनसे कहा कि ''तेरा धर्माचार्य सभा के मध्य मेरी निन्दा करता है, परन्तु वह मेरी शक्ति को नहीं जानता। मैं तेरे धर्माचार्य को उसके शिष्यों सहित जलाकर भस्म कर दूँगा।'' आनन्दमुनि ने लौटकर गोशालक की कही हुई बात भगवान से कही और भगवान से प्रश्न किया कि ''हे प्रभो! क्या गोशालक आपको जलाने में समर्थ है?'' भगवान ने उत्तर दिया कि ''सर्वज्ञ तीर्थंकर पर गोशालक की शक्ति नहीं चल सकती। हाँ, वह संताप अवश्य दे सकता है। इतने ही में गोशालक भगवान के पास आया और भगवान को अनाप-सनाप बोलने लगा। भगवान के शिष्य सुनक्षत्र और सर्वानुभूति मुनि को गोशालक की बात बुरी लगी, इससे उन्होंने गोशालक से कहा कि ''रे गोशालक! जिन गुरु की कृपा से तू जीवित रह सका है, उन्हीं गुरु को इस प्रकार बोलता है। सुनक्षत्र और सर्वानुभूति मुनि का कथन सुनकर गोशालक का क्रोध बढ़ गया। उसने इन दोनों मुनियों पर तेजोलेश्या छोड़ी, जिससे दोनों मुनि मृत्यु को प्राप्त हुए और देवगति में उत्पन्न हुए। पश्चात् जब भगवान ने गोशालक को शिक्षा रूप कुछ कहा, तब गोशालक ने भगवान पर भी तेजोलेश्या का प्रयोग किया, लेकिन भगवान पर तेजोलेश्या अपना भस्म करने का प्रभाव न दिखा सकी। वह भगवान की प्रदक्षिणा करके वापस लौट गई और उसे छोड़ने वाले गोशालक में ही प्रवेश कर गई, जिससे गोशालक को पीड़ा हुई और वह सातवें दिन मर गया। गोशालक की छोड़ी हुई तेजोलेश्या की हवा की झपट लगने से भगवान के शरीर में भी छ: मास तक रक्तस्राव की पीड़ा रही, जो रेवती श्राविका के यहाँ से लाए बिजोरापाक से शमन हुई।

जमाली जो भगवान के भानजे और जामाता थे; उन्होंने भी संसार से विरक्त होकर भगवान के पास दीक्षा ली थी, लेकिन जब वे बीमार हुए तब उनकी श्रद्धा पलट गई। अन्त में वे भगवान के वचन से प्रतिकूल हो गए और काल करके किल्विषि में उत्पन्न हुए।

भगवान श्री महावीर साढ़े छ: मास कम तीस वर्ष तक केवली पर्याय में रहे। भगवान के इन्द्रभूति आदि ग्यारह गणधर थे। चौदह सहस्र मुनि थे। चन्दनबाला आदि छत्तीस सहस्र आर्यिका थी। शंख आदि एक लाख उनसठ हजार श्रावक थे और सुलसा, रेवती आदि तीन लाख अठारह हजार श्राविकाएँ थी। भगवान के मुनियों में से तीन सौ मुनि पूर्वधारी, चार सौ चर्चावादी, पाँच सौ मन:पर्ययज्ञानी, सात सौ केवलज्ञानी, सात सौ वैक्रिय लब्धिधारी, आठ सौ अनुत्तर विमानगामी और तेरह सौ अवधिज्ञानी थे। आर्यिकाओं में से चौदह सौ आर्यिका केवलज्ञानी हुई।

चतुर्थ आरे के तीन वर्ष काल से साढ़े आठ मास शेष रहे तब कार्तिक कृष्णा अमावस्या की रात को स्वाति नक्षत्र आने पर छठ भत्त के अनशन में भगवान महावीर सोलह प्रहर तक निरन्तर उपदेश देते हुए अयोगी अवस्था को प्राप्त हो, सब कर्मों को क्षय करके निर्वाण पधारे। इन्द्र, देवताओं और मनुष्यों ने अश्रुपूर्ण नेत्र से भगवान के त्यागे हुए शरीर का अन्तिम संस्कार किया।

जिस रात में भगवान महावीर सिद्ध गति को प्राप्त हुए उसी रात में इन्द्रभूति गौतम को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। नव गणधर, भगवान के मोक्ष पधारने से पहले ही मोक्ष पधार चुके थे। इसलिए भगवान के पट्ट पर सुधर्मा स्वामी नाम के पंचम गणधर को नियुक्त किया गया। सुधर्मा स्वामी की परम्परा ही आज विद्यमान है, जो पंचमकाल के अन्त तक रहेगी।

भगवान महावीर अठाईस वर्ष तक गृहस्थाश्रम में रहे। दो वर्ष तक भाव-यतिपने में रहे। बारह वर्ष साढ़े छ: मास छद्मस्थ अवस्था में और कुछ कम तीस वर्ष केवली पर्याय में रहे। इस प्रकार सब बहत्तर वर्ष का आयुष्य भोगकर भगवान श्री पार्श्वनाथ के निर्वाण के ढ़ाई सौ वर्ष बीत जाने पर निर्वाण पधारे।

**साभार- तीर्थंकर चरित्र (बालचन्द श्रीश्रीमाल)**

# NAMING CEREMONY AND THE SUBSEQUENT DEVELOPMENT

## Golden Glimpse of ACHARYA SHRI HUKMICHANDJI M.S.

**Under the 'Achar Vishudhi Mahotsav' the english translated series of 'Pujya Hukmesh' is presented below to make the readers aware about the life of ACHARYA SHRI HUKMICHAND JI M.SA.**

Continued from 15-16 March 2022-

**Dear children!**

After that everyone gathered at one place and started thinking of naming the child. Then came a Pandit ji well-versed in astrology and made his Panchang (almanac) based on the time of birth and the positioning of the planets. The first letter of the name was deduced as "Hu" (हु) based on the results of the horoscope. Pandit ji asked everyone to choose a name based on the letter. Hearing this, ecstatic Motibai said that – "Ever since this child came in the womb, I have experienced that when everyone in the family agrees on something, a common word that is heard from everyone's mouth is- "जो हुक्म". Every time I hear these words, my heart fills with joy and after thinking I concluded that all this is the result of the virtuous effect of the baby in the womb. Hence, its my hearty wish to name this boy Hukmichand". As soon as everyone agreed, Panditji was informed and after chanting a few mantras the boy was named – "**Hukmichand**".

While uttering the new name, everyone in the family gave their blessings, and wished that child Hukmichand spread immense glory and bring fame to his mother, father and the Chaplot family. May he live a long life and make everyone proud. Everyone gave gifts, congratulated the parents and the family members and left the place.

Now the house of honourable Ratanlal ji was filled with the joyous screams of baby Hukmichand. Mother Motibai was never tired of looking at her beloved son. To save her son from evil eye, she used to put kajal on his face, sometimes apply kajal in his eyes and sang sweet lullabies while feeding him. Baby Hukmichand started growing up under the affection of his parents and family members just like how vine grows in a valley.

Child Hukmichand crossed infancy and entered into childhood. He started spreading his hands and feet in the courtyard as he played. After sometime, he began walking with the support of his parents and family members. In a few months, he slowly took steps on his own without support and even walked outside the house. He even started pronouncing words with stammer. When he was three-four years old, he started developing his personality and appearance and started ruling over his peers. Due to his virtues, all the children around him made him their

leader and followed his every instruction. Boy Hukmichand always gave only those instructions, which awakened the rites of humility and discretion in children. He showed full affection to those children who remained disciplined and virtuous. Ones who misbehaved, he explained them as well with great love. If some children still didn't listen/obey after explanation, then he abstained himself from keeping any relation with them until they accept their mistake and learn.

When he was admitted to the school, he impressed his teachers and classmates with his charisma. Considering him as their leader, the classmates were always ready to follow him at every step.

This way, within a short span of time, child Hukmichand exhibited meritorious performance in the existing education system. As a result, the teachers were elated. They went to Ratanchand ji and endlessly applauded and glorified his talented son and honourable Ratanchandji on hearing his beloved son's praise started fantasying his son's future and decided to train him to become efficient in the field of business as well.

**Continued...**

## प्रेरक कथा

अलार्म बजते ही प्रेरणा ने सोचा कि आज तो बच्चों के स्कूल की छुट्टी है। आज तो आराम से उठूंगी, पर ये क्या पति परमेश्वर के नहाने की आवाज बाथरूम से आ रही थी। तभी अचानक प्रेरणा को याद आया, अरे! आज तो भगवान महावीर जन्मकल्याणक है। प्रभातफेरी में जाना है। उसके पश्चात् जुलूस में और सामूहिक भोज में। आज ही के दिन तो मौका मिलता है समाज के सभी लोगों से मिलने का। इतने में पतिदेव नहाकर निकले और प्रेरणा भी बच्चों को जगाने में लग गई। प्रेरणा ने अपनी सबसे अच्छी महंगी वाली केसरिया साड़ी निकाली और पति व बेटे के लिए चमकदार सफेद कुर्ता-पायजामा। सभी लोग सज-धज कर तैयार हो निकल लिए एक अनूठा महावीर जन्मकल्याणक बनाने को। घूमे-फिरे, लोगों से मिले, खाया-पीया और आ गए अपने-अपने घर।

प्रेरणा के बेटे ने एक अनोखा प्रश्न किया- मम्मा! आज महावीर भगवान का जन्मदिन है, पर हमने तो उनको ना याद किया, ना विश किया। हम तो घूम-फिर कर आ गए। यह सुनते ही मानो प्रेरणा को ऐसा लगा कि किसी ने उसे उसकी बहुत बड़ी गलती का अहसास करा दिया। वह सोचने पर मजबूर हो गई कि क्या वास्तविकता में उसको सुबह से एक बार भी भगवान महावीर का स्मरण आया? नहीं...।

बेटे के फिर से झकझोरने पर अपने आपको संभालते हुए प्रेरणा ने अपने बेटे से कहा- सॉरी बेटा! सच में हम सबने ना भगवान महावीर को याद किया, ना उनको विश किया, पर अभी बर्थडे खत्म कहाँ हुआ है। यह कहकर प्रेरणा व उसका बेटा दोनों सामायिक लेकर बैठ गए। भगवान महावीर के सिद्धान्तों व उनके जीवन के कष्टों को बताते हुए प्रेरणा ने अपने बेटे को सत्य, अहिंसा, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के बारे में बताया तथा भगवान महावीर जो कहकर गए वह सत्य और नि:शंक है इसकी प्रेरणा दी।

**शिक्षा- आज प्रेरणा के परिवार की तरह हमारा भी यही हाल है कि हम भगवान महावीर के भौतिक महोत्सव में इतने सराबोर हो जाते हैं कि हम उनका आध्यात्मिक महोत्सव मना ही नहीं पाते और जाने-अनजाने इस महोत्सव में अनेक कर्मबंध कर लेते हैं। अत: प्रेरणा की कथा से प्रेरणा लेकर भगवान महावीर का वास्तविक आध्यात्मिक रूप से जन्मकल्याणक मनाएँ।**

जीवनी अंश - परम पूज्य
आचार्य प्रवर 1008
श्री श्रीलालजी म.सा.

# अवसान

*गतांक 15-16 मार्च 2022 से आगे...*

आषाढ़ बदी 14 के दिन बलूंदे से विहार कर पूज्यश्री जैतारण पधारे। वहाँ आहार-पानी कर स्वाध्यायादि नित्य-नियम से निवृत्त हो पूज्यश्री ने दोपहर का व्याख्यान फरमाया। दूसरे दिन आषाढ़ बदी 30 के दिन नित्य-नियम से निवृत्त हो पूज्यश्री ने प्रतिलेखन किया और प्रमार्जन कर अपने हाथ से ही कांजा निकाला तथा पाटिया लगा व्याख्यान फरमाने लगे। श्री भगवतीजी सूत्र में से गांगेय अणगार के भांगे फरमा रहे थे। आधा घण्टा पढ़ने के बाद महाराजश्री को अचानक चक्कर आने लगे और आँखों में भी तकलीफ हो गई। महाराजश्री ने अपने हाथ में से सूत्र के पन्नों सहित पाटी नीचे रख अपने दोनों हाथों से आँखें थोड़े समय तक ढके रखी। फिर ऐनक लगाकर सूत्र पढ़ने का प्रयत्न किया, परन्तु नहीं देख सके। उसी समय दोबारा चक्कर आया तथा सिर में असह्य पीड़ा होने लगी। तब महाराजश्री ने फरमाया कि अब मेरी आँखें काम नहीं कर रही हैं अत: मुँह से ही व्याख्यान देता हूँ। पूज्यश्री ने उसी समय मौखिक सूत्र की गाथा फरमाकर उसका रहस्य समझाना प्रारम्भ किया। इतने में फिर से चक्कर आए तथा दर्द का जोर और भी बढ़ गया। तब दूसरे साधु गब्बुलालजी को व्याख्यान देने की आज्ञा देकर आप अन्दर पधार गए और मुनि श्री मनोहरलालजी इत्यादि के समक्ष कहा कि ''मैंनें ज्ञानी लोगों से सुन रखा है कि बैठे-बैठे आँख की दृष्टि एकाएक बन्द हो जाए तो मृत्यु समीप समझनी चाहिए।'' इसलिए भारत के इस महान संत ने बिना हिचकिचाहट के स्वेच्छा से यह निर्देश दिया कि 'मुझे संथारा करा दो और मुनि श्री हरकचन्दजी आ जाएं तो मैं आलोचना कर लूंगा'। ऐसा कर पूज्यश्री ने चतुरसिंहजी नामक एक साधु को आज्ञा दी कि तुम अभी ब्यावर की ओर विहार करो। श्रावकों को यह समाचार मिलते ही उन्होंने एक श्रावक को रेल से ब्यावर रवाना कर दिया। वह श्रावक मुनिश्री से पहले ही ब्यावर पहुँच गया और मुनि श्री हरकचन्दजी महाराज को वस्तुस्थिति निवेदन की। श्री हरकचन्दजी म.सा. यह सुनकर उसी समय आषाढ़ सुदी 1 के दिन बारह कोस का विहार कर निमाज पधारे और वहाँ चिंताग्रस्त स्थिति में रात्रि निर्गमन कर दिन निकलते ही निमाज से विहार कर आठ बजे जैतारण पहुँच गए। उनसे महाराजश्री ने कहा कि 'मेरी आँखें तुम्हारा चेहरा भी नहीं पहचान सकती। अब मुझे शीघ्र संथारा कराओ। जीव और काया भिन्न होने में अब विशेष विलम्ब नहीं है'। श्री मूलचन्दजी महाराज ने कहा कि महाराज संथारा कराने जैसी बीमारी आपको नहीं है तब हम लोग संथारा कैसे करावें? शिष्यों के हृदय को भारी धक्का लगा और वे हताश हो गए। पूज्यश्री ने उन्हें हिम्मत बंधाते हुए कहा कि 'मृत्यु अवश्यंभावी है। तीर्थंकर भी इसके अपवाद नहीं हैं। यह नियम सबके लिए समान है। इस समय आप लोगों से जो बन पड़े उतना धर्म-ध्यान सुनाओ, यही आपका कर्तव्य है।'

पूज्यश्री के सिर में तीव्र वेदना हो रही थी। दर्द

बढ़ता ही जा रहा था, परन्तु उपस्थित साधु वर्ग इस असहनीय वेदना का पूज्यश्री की अद्वितीय सहन शक्ति के कारण सही अनुमान नहीं लगा सका और पूज्यश्री के बार-बार कहने पर भी उन्होंने संथारा नहीं कराया। ज्यों-ज्यों दर्द बढ़ता गया, वैसे-वैसे पूज्यश्री समाधिस्थ होते गए। ऐसी तीव्र वेदना में भी उनकी शान्ति और धैर्य अनुपम था। कायरता प्रतीत हो ऐसा एक शब्द भी इस सिंह समान शूरवीर, धीर महापुरुष के मुँह से कभी नहीं निकला।

पूज्यश्री की बीमारी के समाचार जैतारण के श्रावकों ने तार द्वारा अनेक शहरों में मुख्य-मुख्य श्रावकों को पहुँचा दिए थे। अत: कई श्रावक वहाँ पहुँच गए थे। आषाढ़ शुक्ला 1 के दिन ब्यावर से कई भाई आए और उसी दिन शाम को उज्जैन से भाई चुन्नीलालजी कल्याणजी भी पधारे। लेखक मोरवी था वहाँ भी तार पहुँचा था किन्तु इतनी दूरी से पहुँचना संभव नहीं था। चुन्नीलालजी ने महाराजश्री से उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछा तब वे बोले कि ''भाई मेरा अन्तिम समय यानी संथारे का समय आ गया है। पुद्गल दु:ख दे रहे हैं।' उस समय वहाँ कई श्रावक व साधु उपस्थित थे। महाराजश्री ने फिर 'घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं' उत्तराध्ययन के इस सूत्र को कहकर सबको इसका अर्थ समझाया।

भिन्न-भिन्न श्रावक भिन्न-भिन्न औषधियाँ बतलाने लगे, परन्तु पूज्यश्री ने फरमाया कि ''बाह्योपचार करने की अपेक्षा अब आंतरिक उपचार करने दो और आरंभ-समारंभ मिश्रित औषधियाँ मत सुझाओ''।

इस समय युवराजश्री उपस्थित होते तो पूज्यश्री को विशेष शान्ति रहती, क्योंकि वे उन्हें कई विधि संघ के संबंध में अपनी अन्तिम इच्छाओं से अवगत करा देते, परन्तु हिम्मत एवं बहादुरी के धनी ये महाभटवीर अचानक आई मृत्यु के बुलावे से तनिक भी विचलित नहीं हुए। शिष्य समुदाय को अपनी शय्या के पास बुलाकर सबके सिर पर हाथ रखा मानो अन्तिम विदा ले रहे हों और कहने लगे- 'मुनिराजो! संयम से रहना, संघ के साथ रहना, पंडित श्री जवाहरलालजी म.सा. की आज्ञा में विचरना। वे दृढ़धर्मी, चुस्त, संयमी और मुझसे भी तुम्हारी अधिक सार-सम्हाल करने वाले हैं। मैं और वे एक समान हैं, ऐसा समझना। उनकी सेवा करना। श्री हुक्मीचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय की ज्योति को प्रज्वलित रखना, शासन की शोभा बढ़ाना। मैं आप सबको खमाता हूँ, क्ष-मा-क-र-ना। इतना कह कर पूज्यश्री की वाणी बन्द हो गई। पास बैठे हुए मुनि-मण्डल के चक्षु अश्रुपूर्ण हो गए। एक मुनिराज ने उत्तर दिया- 'पूज्यश्री आपकी आज्ञा हमें शिरोधार्य है। आप निश्चिंत रहें। हम बालकों को आप क्या खमाते हैं। क्षमा तो हमें मांगनी चाहिए कि आपके उपकार के बदले में हम आपकी किंचित् सेवा का भी लाभ न ले सके।' इससे अधिक वे भी न बोल सके।

समय के ज्ञाता पूज्यश्री ने समय की नाजुकता को पहचान कर ही श्रीसूत्र की गाथा कहना प्रारंभ कर दिया और विषाद के इन क्षणों को शान्ति में बदल दिया। शिष्य समुदाय भी मंदस्वर से इन गाथाओं के उच्चारण में सम्मिलित हो गया।

दूसरे दिन आषाढ़ शुक्ला 2 को प्रात: ही अजमेर से श्री गाढ़मलजी लोढ़ा तथा ब्यावर से अनेक लोग आ पहुँचे। उस दिन पूज्यश्री के शरीर में व्याधि बढ़ गई थी और वे नित्य-नियम भी न कर सके थे। **पूज्यश्री बार-बार फरमाते थे कि जिस दिन मुझसे नित्य-नियम न हो, उस दिन समझना कि मेरा अन्त समय समीप है। इस पर उनके शिष्यों को बहुत चिन्ता होने लगी। द्वितीया के दिन उन्हें सागारी संथारा करा दिया गया। उसी रात के पिछले प्रहर में करीब 5 बजे इस नाशवान शरीर को मिट्टी के कच्चे घड़े की भाँति त्याग कर पूज्यश्री की अमर आत्मा स्वर्ग सिधार गई। जैन-शासनरूप आकाश में से एक दैदीप्यमान नक्षत्र विलुप्त हो गया। चतुर्विध संघ का महान आधार स्तम्भ टूट गया। उस समय साधुओं के 12 ठाणे आचार्यदेव की सेवा में उपस्थित थे।**

पूज्यश्री जब तक जीवित रहे, अपने लिए न रहकर सकल संघ के लिए ही जीवित रहे। अन्त समय में उनकी चिकित्सा में कोई कमी नहीं रखी गई। कई स्थानों पर

तपश्चर्या प्रारंभ की गई, दान दिया गया, प्रतिज्ञाएँ ली गई तथा पूज्यश्री के स्वास्थ्य लाभ की कामनाएँ की गई, परन्तु इस आत्मा को तो परमात्मा में मिलना था। अत: असंख्य श्रावकों को शोक सागर में डूबता छोड़कर समाज का यह सितारा अदृश्य हो गया। इतना अवश्य है कि यदि संथारा इतना थोड़ा न होता तो इस अवसर पर और भी लोग उपस्थित होते और इसमें तन, मन, धन से योगदान करते।

विश्व का नियम बड़ा विचित्र है। मृत्यु का उपचार नहीं है। जैन समाज को दैदीप्यमान करने वाली यह पवित्र आत्मा अनेक कष्ट झेल, दु:खित हृदय लिए श्री शासनदेव के दरबार में अर्ज करने स्वर्गलोग सिधार गए।

कौन-सा वज्र हृदय ऐसा होगा जो इस वियोग का सही रूप से वर्णन कर सके। कौन कवि ऐसा होगा जो विरह का वर्णन करने का साहस जुटा सके। एक भक्त द्वारा प्रकट उद्‌गार इस प्रकार थे कि ''उनका शरीर गया, मूर्ति अदृश्य हो गई। उनके दर्शन दुर्लभ हो गए, स्थूल दुनिया में उनका स्थूल स्वरूप नष्ट हो गया किन्तु यश-कीर्तिरूप शरीर अभी तक मौजूद है, जो सदैव श्रीसंघ को सही मार्गदर्शन करता रहेगा।''

**रोई रोई आंसूड़ानी नदिओं बहे तोये।**
**गयुं ते गयुं, शुं आवी आंशु लुछवानुं शाणा।।**

यही सही है कि अब नेत्रों से तो उनके स्मितपूर्ण मुखचन्द्र के दर्शन नहीं हो सकेंगे एवं उन श्री के विशाल भालयुक्त मुख-कमल से झरते हुए मधुर प्रोत्साहक अमृत के पान से भी अब हम पवित्र नहीं हो सकेंगे। परन्तु हाँ, धर्माराधना, जीवदया एवं त्याग-प्रत्याख्यान द्वारा जीवनशुद्धि ही उनकी आत्मा का एकमात्र ध्येय था। अत: यदि हम उन्हीं श्री के इन सद्‌विचारों को ग्रहण करेंगे व उन्हें अपने जीवन में उतारेंगे तो वे प्रत्येक के हृदय में विराजमान दृष्टिगत होंगे।

पूज्यश्री की मात्र नश्वर काया ही विलुप्त हुई है, उनका प्राणवान आत्मसाधना रूप चरित्र धर्म तो आज भी उतना ही शाश्वत है और समय के साथ विस्तार पाएगा। पूज्यश्री की उत्कृष्ट वैराग्य भावना, वीतराग वाणी के प्रति गहरी निष्ठा, साधुत्व के नियमों एवं मर्यादाओं को कठोरता से पालन करने में दृढ़ आस्था, जीवदया के क्षेत्र में गहरी निष्ठा एवं कुव्यसनों का त्याग-प्रत्याख्यान कराने एवं तप व संयम के मार्ग में लोगों को प्रेरित करने की अपरिमित क्षमता, उनका बलिष्ठ आत्मबल एवं परीषहों को सहन करने की उनकी क्षमता युगों-युगों तक चतुर्विध संघ के लिए प्रेरणास्रोत बनी रहेंगी।

भारत का दुर्भाग्य है कि हमारे धर्मगुरुओं की वय सामान्यत: कम होती है। जिस उम्र में नई-नई बातें सीखने व जनमानस का अधिकारिक रूप से विशिष्ट मार्गदर्शन करने की प्रेरणा देने का समय आता है उसी उम्र में वे भगवान को प्यारे हो जाते हैं। मृत्यु के समय स्वामी विवेकानन्द 39 वर्ष, श्री केशवचन्द्र सेन 45 वर्ष, जस्टिस तैलंग 48 वर्ष व गोपालकृष्ण गोखले 49 वर्ष के ही थे। पूज्यश्री अवसान के समय 51 वर्ष के थे। इस अवसर पर ग्लेडस्टन और एडीसन याद आए बिना नहीं रहते।

अंतिम कसौटी पर तपकर शुद्ध कुन्दन होने में पूज्यश्री को असह्य परिश्रम करना पड़ा था। पूज्यश्री की कीर्ति समाप्त करने के कई प्रयास किए गए किन्तु ये प्रयास सूर्य के प्रकाश को कम करने के लिए उस की ओर धूल फेंकने वाली स्थिति में ही रहे। पूज्यश्री के शुद्ध संयम के तेज में विरोधियों की ईर्ष्याग्नि भी पिघल जाती। ईर्ष्या के वेग में चरित्रहनन करने वालों को वे दया की दृष्टि से देखते थे और उन्हें सचेत करते थे कि कहीं जैन शासन के मुख्य स्तम्भ रूप में साधुधर्म ही समाप्त न हो जाए।

श्री डाह्या भाई के निम्न शब्दों से यह प्रसंग समाप्त किया जाता है- 'जिन्होंने हमारे लिए इतना कष्ठ उठाया और हम उन्हें जीते-जी विशेष आराम न दे सके। उनके दु:ख में, उनके जीते-जी हमने हाथ नहीं बँटाया बल्कि इसके विपरीत किसी-किसी कृतघ्नी ने तो व्यर्थ में उनकी टीका तक कर डाली। ऐसे इन महात्मा, संत, नरम हृदय के दयालु पुरुष का कुछ सहयोग न कर उनका दिल दुखाया, यह याद आने पर हृदय फट जाता है। अलबत्ता हमारा यह अहोभाग्य है कि ऐसे महारथी की जगह लेने वाले भी उनके समान ही तपोबली, महान पंडित, ज्ञानी

एवं परोपकारी हैं और सम्प्रदाय के सेनापति का जोखिमभरा पद उन्होंने स्वीकार किया है। हमारी यही शुभकामनाएँ हैं कि उन्हें सदा यश, कीर्ति एवं सफलता मिले।

लगभग बत्तीस वर्ष तक चारित्र-प्रव्रज्या पालकर एवं उसमें से बीस वर्ष तक आचार्य पद को सुशोभित कर अनेक भव्य प्राणियों को प्रतिबोध देकर पूज्यश्री ने जीवन सार्थक किया है। आपका जन्म, आपका शरीर, आपकी प्रव्रज्या, आपका आचार्य पद - यह सब जनकल्याण के लिए ही समर्पित रहा है। आपने अपनी नेश्राय में एक भी शिष्य न करने की प्रतिज्ञा ली थी, परन्तु कई व्यक्तियों को दीक्षा देकर उनका उद्धार किया और कई मुनिवरों पर अवर्णनीय उपकार किया था। आपका चरित्र अत्यन्त ही अलौकिक था और आप अपार गुणराशि के स्वामी थे। विद्वान् लेखक तथा आशुकवि कई अर्से तक आपके गुणानुवाद करते रहें तब भी आपके चरित्र का तथ्यात्मक निरूपण होना या आपके गुण समूह का पार पाना असम्भव है। आपके ज्ञान, दर्शन, चारित्र की शुद्धि, आपके अतीत काल में किए गए शुभ कर्मों के उदय का अपूर्व प्रभाव, वर्तमान की शुभ प्रवृत्तियों तथा भविष्य के प्रति कल्याणकारी व दूरदर्शी दृष्टिकोण इत्यादि इतने प्रबल थे कि उनकी उपमा देना असम्भव है। इस पंचमकाल के जीवों में से आपकी समानता कर सके ऐसा व्यक्तित्व खोज पाना असम्भव है। फिर भी धैर्य धारण करने को यह बात भी सत्य है कि आपके समान ही अनुपम आत्मिक गुण, अद्वितीय आकर्षण, दिव्य तेज एवं अपार साहसिकता, आत्मबल के धनी आचार्यश्री 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा. आपके पट्टधर आचार्य पद को सुशोभित कर रहे हैं। हमारी यह हार्दिक अभिलाषा है कि आपके ज्ञान, दर्शन, चारित्र के पर्यायों में समय-समय पर अभिवृद्धि होती रहे और दीर्घ आयुष्य पाकर जैनधर्म की उदार एवं पवित्र भावनाओं का प्रसार एवं प्रचार करने के कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त करें।

**साभार- अद्भुत योगी**

**-क्रमशः**

## आत्म-ज्ञान की शिक्षा

**-संकलित**

एक जिज्ञासु व्यक्ति एक संत के पास गया और कहा- मुनिवर! मुझे आत्म-ज्ञान की शिक्षा दीजिये। सन्त ने कहा कि यह शिक्षा ऐसे नहीं दी जाती। तपस्या करनी पड़ती हैं, शरीर को तपाना पड़ता है, तब कहीं जाकर आत्म-ज्ञान, आत्म-अनुभव की शिक्षा दी जायेगी। बात उस जिज्ञासु के मन को छू गई। वह जंगल में गया और कठोर तप किया। शरीर सूख कर कांटा हो गया। अस्थियों का मांस सूख गया केवल अस्थि कंकाल रह गया। जब वह चलता तो हड्डियाँ खड़-खड़ करती। अन्त में वह आत्म-ज्ञान की शिक्षा लेने उस सन्त के पास पहुंचा। उसके शरीर को देख कर सन्त को हंसी आ गई। उस जिज्ञासु व्यक्ति ने सन्त को कहा- मुनिवर! अब मुझे आत्म-ज्ञान की शिक्षा दीजिये। सन्त वही अपना पुराना वाक्य दोहरा कर कहा- अभी तुम्हें और तपना होगा। यह कहने के साथ ही उसने तत्काल अपनी एक अंगुली तोड़ दी। यह देखकर सन्त-प्रवर ने कहा- भाई! तुमने अभी तक शरीर को सुखाया है, तपाया है। जबकि तुम्हारे भीतर अभी तक क्रोध है, काम है, माया है, आसक्ति है। वास्तव में तपाना तो इनको है, शरीर को थोडे.ही तपाना है। यदि तुम सौ वर्षों तक शरीर को सुखाओगे तब भी तुम योग्य पात्र न हो पाओगे।

आत्म-ज्ञान एवं आत्म-शुद्धि के लिए बाह्य तप और शारीरिक तप महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण है भीतरी तप तथा आभ्यन्तर तप। प्रायश्चित की आवश्यकता है, विनय की आवश्यकता है, वैयावृत्य सेवा की अपेक्षा है, स्वाध्याय, ध्यान और व्युत्सर्ग की अनिवार्यता है। यदि व्यक्ति आभ्यन्तर तप करने के लिये बाह्य तप को माध्यम बनाता है तो उसे बाह्य तप बाधक और अवरोधक नहीं होगा, अपितु सहायक होगा। सन्त का उपदेश सुनकर जिज्ञासु व्यक्ति अपनी भूल पर पश्चाताप करता हुआ सन्त से क्षमा मांगने लगा।

# अणुव्रतों और महाव्रतों का सम्बन्ध

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा.

जैसे जल के अभाव में कमल नहीं होता, उसी प्रकार श्रावकधर्म के अभाव में साधुधर्म भी नहीं रह सकता। श्रावकधर्म रूपी जल की विद्यमानता में ही साधुधर्म रूपी कमल विद्यमान रह सकता है।

आज कई श्रावक अणुव्रतों को जानते नहीं हैं और कई जानते-समझते हुए भी उनकी ओर से उदासीन हैं। इसी से साधुधर्म में गड़बड़ है। उदाहरणार्थ, श्रावकों में आवश्यक विवेक न रहने से साधुओं को शुद्ध आहार-पानी मिलने में कठिनाई हो रही है। जब श्रावक ही मशीन का पिसा हुआ आटा और चर्बी मिला घी खाने लगे तो साधुओं को शुद्ध आहार कहाँ से मिलेगा? श्रावक अगर रजोगुणी और तमोगुणी भोजन करने लगे तो साधुओं को सतोगुणी भोजन किस प्रकार प्राप्त होगा?

जिसके यहाँ खाने-पीने की व्यवस्था नहीं है, उसका मन भी शुद्ध रहना कठिन होता है। मगर खेद है कि लोग स्वाद के आगे विवेक को भूल जाते हैं।

प्राय: लोग सीधी चीज लाने में पाप से बचना मानते हैं, पर एकान्त रूप से ऐसा समझना भूल है। कई बार सीधी चीज से अधिक पाप होता है। छोटीसादड़ी में ब्राह्मणों ने बाजार से मैदा लाकर हलुवा बनाया। उन्होंने ज्यों ही मैदा सेक कर उसमें पानी डाला, वैसे ही बहुत-सी लटें पानी के ऊपर तिर आई। ब्यावर के सतीदासजी गोलछा सीधी चीज लाने के बहुत पक्षपाती थे। एक बार वे बाजार से पिसी मिर्च लाए। घर पर उस मिर्च को तार की छलनी से छाना तो उसमें से बहुत-सी लाल रंग की लटें (इल्लियाँ) निकली। इस प्रकार कई लोग सीधा खाने से पाप से बच जाने का विचार करके और अधिक पाप में पड़ जाते हैं।

तात्पर्य यह है कि श्रावकधर्म और साधुधर्म का घनिष्ठ सम्बन्ध है। श्रावकों में विवेक होगा तो साधु भी अपने धर्म का भली-भाँति पालन कर सकेंगे।

अणुव्रत और महाव्रत का सम्बन्ध कैसा है, यह बात एक उदाहरण देकर समझाता हूँ। किसी जगह कुछ लड़के खेल रहे थे। उनमें एक लड़का वजीर का पुत्र था। बादशाह ने अपनी लकड़ी से एक लकीर खींच दी और सब लड़कों से कहा- इस लकीर को बिना मिटाए छोटी कर दो तो जानें।

लड़के सोच-विचार में पड़ गए। बिना मिटाए लकीर छोटी हो तो कैसे हो? परन्तु वजीर के लड़के ने बादशाह के हाथ से लकड़ी ली और उस लकीर के पास एक बड़ी लकीर खींच दी। बादशाह की खींची लकीर छोटी हो गई। तब उस लड़के ने कहा- लीजिए, आपकी लकीर छोटी हो गई है।

बादशाह ने लड़के की पीठ थपथपाकर कहा- शाबास, बाप के संस्कार बेटे में आते हैं।

मतलब यह है कि जैसे उन दो लकीरों में छोटापन और बड़ापन सापेक्ष था अर्थात् बड़ी लकीर होने से दूसरी छोटी कहलाई और छोटी होने से दूसरी बड़ी कहलाई। उसी प्रकार अणुव्रत और महाव्रत भी परस्पर सापेक्ष हैं। अणुव्रतों की अपेक्षा महाव्रत, महाव्रत कहलाते हैं और महाव्रतों के कारण अणुव्रत, अणुव्रत कहलाते हैं। अणुव्रत तभी होंगे जब महाव्रत होंगे और महाव्रत तभी महाव्रत कहलाएँगे जब अणुव्रत होंगे।

**साभार- श्री जवाहर किरणावली-21**

# अक्षय निधि स्वयं की

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008
श्री नानालालजी म.सा.

कोई दस-बारह वर्ष का बच्चा, घर-घर से भीख मांगता हुआ इधर-उधर घूम रहा था। सामने से एक सामुद्रिक लक्षणों का ज्ञाता विद्वान् आ रहा था। उसने जब इस बच्चे को देखा और साथ ही उसके चेहरे पर उभर रहे लक्षणों पर उसकी दृष्टि पड़ी तो विस्मय में पड़ गया। विचार करने लगा- अहो! इसके शरीर के लक्षण तो यह बतला रहे हैं कि यह करोड़ों का मालिक है, किन्तु प्रत्यक्ष में तो यह भीख मांग रहा है। क्या सामुद्रिक शास्त्र गलत है? नहीं..... नहीं। ऐसा तो कभी नहीं हो सकता। आज तक जितने भी लक्षण मैंने देखे हैं, वे सही निकले हैं, फिर यह क्या रहस्य है? विद्वान् ने बच्चे को अपने पास बुलाया और उससे कहा कि तेरे चेहरे को देखते हुए ऐसा लगता है कि तुम करोड़ों के मालिक हो, किन्तु मैं देख रहा हूँ कि तुम भीख मांग रहे हो। यह कैसे, क्या बात है? बच्चे ने कहा- विद्वान् महाशय! आप मुझ बच्चे का मजाक क्यों उड़ाते हैं। करोड़ों की बात तो जाने दीजिए, मेरे पास दो जून खाने के लिए भोजन भी नहीं है। विद्वान् महाशय ने कहा- नहीं बच्चे, मैं तुम्हारा मजाक नहीं उड़ा रहा हूँ, बल्कि सत्य कह रहा हूँ। तब बच्चा कुछ गम्भीर होकर बोला- आपका कहना आज नहीं, तब सत्य था, जब तक मेरे माता-पिता थे। उस समय मेरे पिता के पास करोड़ों की सम्पत्ति थी, लेकिन पिता के अचानक स्वर्गस्थ हो जाने से व्यापारिक सम्पत्ति मुनिमों आदि ने दबा ली, घर खर्च के लिए माता ने घर में रही हुई सम्पत्ति भी खर्च कर दी। कुछ समय बाद माता का स्वर्गवास भी हो गया। कर्जदारों ने मकान बेचकर अपना-अपना कर्ज अदा कर लिया और मुझे घर से बाहर निकाल दिया। तब से मैं घर-घर जाकर भीख मांगकर पेट भरता हूँ। अब इस समय तो मेरे पास फूटी कौड़ी भी नहीं है।

विद्वान् महाशय ने सोचा- यह नहीं हो सकता। इसके पास अभी भी कम से कम एक करोड़ की सम्पत्ति है। लेकिन है कहाँ? उन्होंने ध्यान से उसके शरीर का निरीक्षण करना प्रारम्भ किया तो उन्हें उसके गले में बंधा हुआ एक डोरा दिखलाई दिया। डोरा देखकर वे बोले- बच्चे जरा यह डोरा हमें दिखलाओ।

तब बच्चा बोला- नहीं, नहीं यह तो मैं नहीं खोल सकता, क्योंकि मेरे पिता ने बचपन में ही मेरे गले में बांध दिया था और कहा था कि इसे कभी मत खोलना, तभी से यह मेरे गले में है।

विद्वान् महाशय विचार करने लगे कि गले में यह डोरा तो तन्त्र से संबंधित लगता है और इसके नीचे मादलिया भी लटका हुआ है। किन्तु इसके पिता ने यह कैसे बांधा? अगर बांधता तो कोई तन्त्र-ज्ञाता ही बांधता। जरूर इसमें कोई रहस्य होना चाहिए।

विद्वान् महाशय बच्चे को अपने विश्वास में लेकर वह डोरा उसके गले में से निकाल कर उसे इधर-उधर देखने लगे। फिर जो मादलिया था उसे खोलने लगे। उस पर कपड़े के पर्त लगे हुए थे, एक के बाद एक पर्त उखाड़ते-उखाड़ते चार पर्त खोलने के बाद लोहे की डिब्बिया निकली, उसे खोलने पर क्रमशः पीतल, चाँदी और सोने की डिबिया निकली। जब सोने की डिबिया को खोला तो उसमें से जगमग-जगमग करता हीरा चमक उठा। वह हीरा सवा करोड़ रुपये की कीमत का था। जिसे देखते ही सामुद्रिक शास्त्रीजी पुलकित हो उठे। अरे वाह ! वास्तव में यह बच्चा करोड़पति है, मेरे सामुद्रिक शास्त्र ने

सब कुछ सच-सच बतला दिया।

विद्वान् महाशय ने उस बच्चे को वह हीरा देते हुए कहा कि लो यह सवा करोड़ का हीरा। मैंने तुम्हें कहा था कि मेरा सामुद्रिक शास्त्र कहता है कि तुम करोड़पति हो। देख लो, तुम्हारे पास सवा करोड़ का हीरा है।

विद्वान् महाशय की बात सुनकर बच्चा पुलकित हो गया। उसने बहुत-बहुत उपकार माना और इन्हीं की सहायता से पुनः अपना मकान खरीद लिया। पढ़-लिखकर व्यापार प्रारम्भ किया तो पुनः करोड़ों का मालिक बन गया।

### निज का बोध : अनन्त सुख प्रदायक

बन्धुओ! यह तो एक रूपक है। जो यह संकेत देता है कि जब तक उस बच्चे को खुद की सम्पत्ति का ज्ञान नहीं था, तब तक वह भिखारी बना रहा किन्तु जब उसे अपनी सम्पत्ति का ज्ञान हो गया तो वह करोड़ों का मालिक बन बैठा। वैसे ही जब तक आत्मा का ज्ञान नहीं होता तब तक आत्मा भी इस संसार में भिखारी की तरह इधर से उधर भटकती रहती है। जब आत्मा को अपने निज स्वरूप का भान होता है और वह उसे पाने के लिए प्रयत्नशील बनती है तो उस आत्मा में अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्तसुख और अनन्तशक्ति प्रकट हो जाती है। वह शाश्वत सुख की मालिक बन जाती है। करोड़पति तो एक दिन फिर कंगाल बन सकता है, किन्तु जो आत्मा एक बार घनघातिक कर्मों का सर्वथा क्षय कर डालती है, वह फिर संसार के प्रपंचों में नहीं उलझती।

**-साभार- परदे के उस पार**

## गौरव के क्षण

### श्रमणोपासक के 59 वर्ष पूर्ण

# 60वें वर्ष में प्रवेश

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ बीकानेर का मुखपत्र श्रमणोपासक अपनी गौरवमयी 59 वर्ष की अनुभवगम्य यात्रा को पूर्ण कर अप्रैल 2022 में 60वें वर्ष में प्रवेश करने जा रहा है। यह संघ से जुड़े हर एक व्यक्ति के लिए आत्मिक उल्लास का विषय है। अपने शैशवकाल में मात्र 8 पेज में प्रकाशित होने वाला यह मुखपत्र आज अपनी पूर्ण यौवनावस्था में विस्तृत रूप से पाठकों के हाथ में पहुँचता है, जिसमें धार्मिक, सामाजिक सहित संघ व समाज की प्रत्येक विधा को सम्मिलित करने का प्रयास किया जा रहा है। यह गौरव हमें संघ व समाज के साथ-साथ जैनेत्तर पाठकों व लेखकों के सहयोग के बिना मिलना संभव नहीं था। अतः इस पावन बेला में हम आप सभी को हार्दिक साधुवाद देते हुए कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

श्रमणोपासक का प्रकाशन बीकानेर के रांगड़ी चौक स्थित कार्यालय से प्रारम्भ हुआ तत्पश्चात् कार्यालय बीकानेर के ही समता भवन, रामपुरिया रोड़ पर स्थानांतरित होने से प्रकाशन का कार्य वहाँ से अनवरत जारी रहा। कालान्तर में संघ के उत्थान के साथ-साथ श्रमणोपासक का उत्थान भी अवश्यंभावी था। अतः वर्ष 2011 में गंगाशहर में संघ के नवीन केन्द्रीय कार्यालय का लोकार्पण होने के पश्चात् श्रमणोपासक का प्रकाशन कार्य गंगाशहर स्थित केन्द्रीय कार्यालय से हो रहा है। पुनश्चः हम श्रमणोपासक के विकास में सहयोगी रहे प्रत्येक जन को हार्दिक साधुवाद ज्ञापित करते हुए आशा करते हैं कि आप सभी का सहयोग इसी प्रकार हमें मिलता रहेगा।

**श्रमणोपासक के इस नए सफर में हमारा भाव है कि इसे और अधिक जनोपयोगी, ज्ञान-प्रदीप्त, बाल, युवा पीढ़ी एवं नारी शक्ति के उन्नयन में सहायक व भगवान महावीर की वाणी का संवाहक बनाएँ। इसके लिए सुज्ञ विविध विषय लेखकों का सहयोग विशेष अपेक्षित है। आप अपनी कलम से निकले भावों को श्रमणोपासक में सजाने हेतु अवश्य भिजवाएँ ताकि आपके ज्ञान से अन्य लोग भी लाभान्वित हो सकें। आप अपनी रचनाएँ (लेख, कविता, भजन, कहानी आदि) मो.नं. 9314055390 एवं ईमेल : news@sadhumargi.com पर हिन्दी या अंग्रेजी में भिजवाने का लक्ष्य रखें। श्रमणोपासक में प्रकाशित करने हेतु आपके संघ सम्बन्धित समाचार मो.नं. 8955682153 एवं उपरोक्त ईमेल एड्रेस पर प्रेषित कर सकते हैं।**

**समस्त साधुमार्गी संघ को बधाई**

**प्रधान सम्पादक** **सह-सम्पादिका**

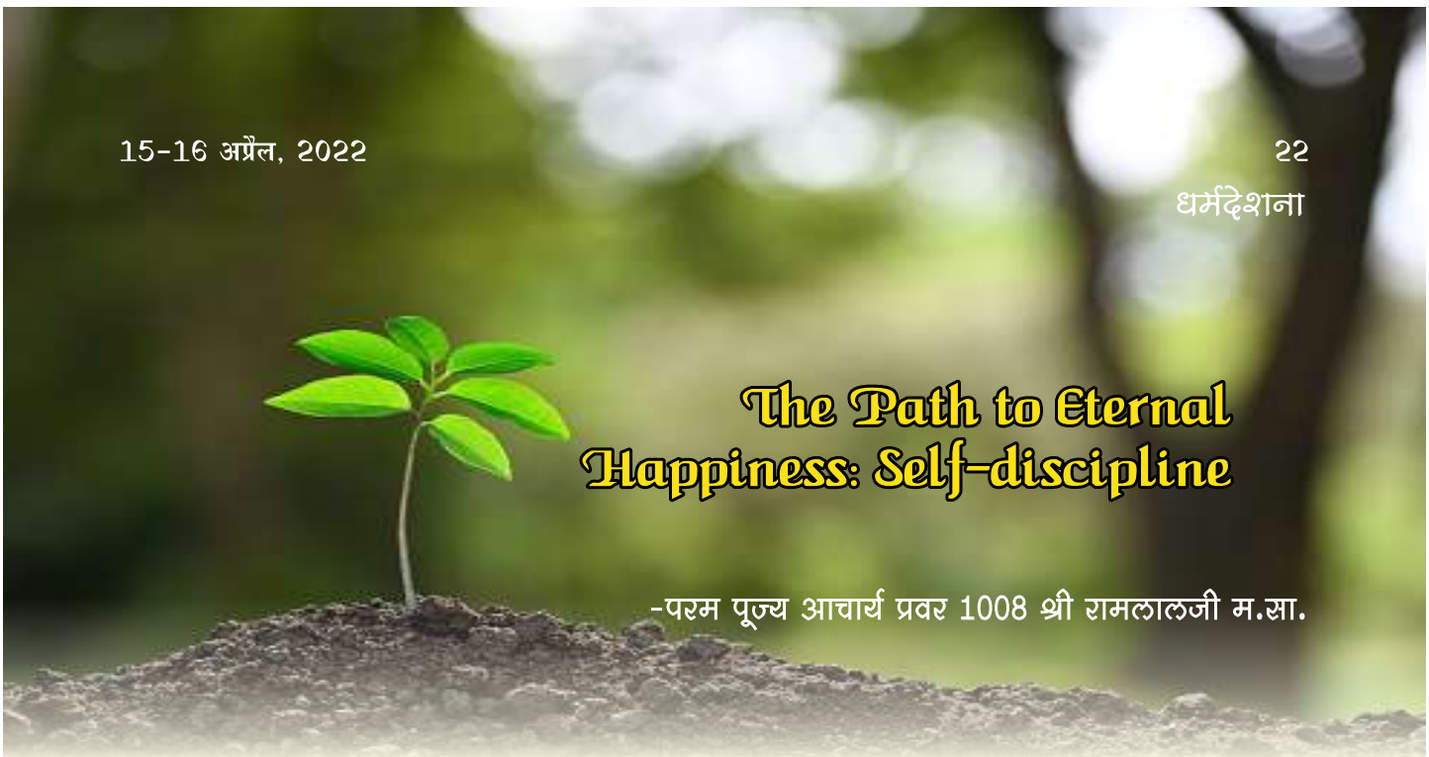

# The Path to Eternal Happiness: Self-discipline

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

The basic state of grief is imposed by lack of knowledge or ignorance (avidya) and is centred in it. A person is not able to see the comprehensive and vast form of ignorance, such that, it is all pervasive and covers not only one part of the soul but all the regions of the soul. There is also a proclamation in Agam . **'सव्वं सव्वेण बंधई'**

It is linked to every part of the soul. Lord Mahaveera has said- **'अप्पा कत्ता विकत्ता'** which means. **The soul is the doer, the experiencer.** It is the soul which helps us evolve to get rid of ignorance (avidya). If this process of evolution is successful, then the path of self-realization is paved. But if it is futile then it can also become suicidal. From this perspective, the teachings that Lord Mahaveer bestowed on us has been very important. He founded a very special form of evolution and gave a new message to the era. During his time, it was believed that even a leaf could not move without god's permission. God was accepted as the most powerful authority and that the soul cannot become God; it will always be dependent. The soul cannot do anything without the will of God. In such an era, Mahaveer propounded the philosophy that explained **the independent existence of every soul.** He clarified that the soul is the doer and experiencer and that sorrow or suffering is not conferred by God. Nothing happens because of God. We are the sole doer of our actions and we only have to bear the consequences of our doings.

About 50 years ago, a western philosopher Nietzsche on the basis of his research said that – "God is dead, God is no more in this world". Whatever may be the nature or purpose of Nietzsche's thinking, but the inherent fact is that upon development of the soul, it becomes God, the existence of God cannot be accepted separately. Nietzsche who said that God is dead, he implicitly assumed that God once existed, but is not present today. At the present time, upon seeing the brutal orgy of incest, this idea can be confirmed that God

doesn't exist anymore. If his powerful authority still existed, then tyranny, incest, violence, crime etc. wouldn't have prevailed. These situations explicitly convey that even if God ever existed, he is now dead. In both situations he has lost his control.

God said – "There is no God"; Nietzsche said – "He is dead". These statements conclude two aspects: **1. Freedom (स्वतंत्रता), 2. Free-will/Liberty (स्वछंदता).** The matter is not to be overlooked, if we pay attention, then we will be able to catch the meaning. Lord Mahaveera has said – "God does not exist", so he showed the soul- the path to freedom and said; **"why do you get frustrated, you yourself are the doer, then why are you afraid?** You bear the consequences of your actions, so be careful. If you are cautious, then the future will be bright. If you are careful now, the key to the future will be in your hands." Consider that- if the scooter is parked on the road and the key is in your pocket, then you will be certain about its safety, but if the key remains in the scooter itself and you take samayik, you will constantly think about the key you left behind. As a result, you will not be focused in samayik. If some other person starts their own scooter too, you will be doubtful that if he is taking your scooter. If the key is with you, then you will be at peace. **Hence Lord Mahaveer said that if you take care of the present, then the key to the future will automatically come in your hand. You will not have to worry about the future. You can create the future as per your wish. If you don't handle the key yourself and give it to someone else to handle it for.**

You, then you will have to move according to their will. Your life will be mechanically controlled. You will not be able to awaken virility. This way, you will kill the vigour inside you and become guilty of committing violence against yourself. Therefore, if you want to avoid this violence, then awaken the hidden courage in you; once virility awakens, then the spirit of non-violence rises; hence the first requirement is not to do violence to yourself. If you are stuck in laziness, then you will never be able to work hard. This is violence itself, so try to save yourself first. The proclamation of freedom exists here because, when revolution occurs it paves the way for freedom. **Freedom is valuable, while free-will (liberty) is discardable.** Former helps in lifting us while latter brings us down. Both freedom and free-will are so similar that when viewed from a distance, they look the same, hence it becomes difficult to distinguish.

Just imagine - there is a shop in which there are two dummy idols. A customer looks at both the idols, which are similar in appearance. He was enchanted by the beauty of art and said– "Oh! What a beautiful artwork!" But on seeing the price at the bottom, he notices that the price on one of them is 'five rupees' while on the other is 'fifty thousand rupees'. The customer started thinking- "What's the matter! Why such a difference in price? Has there been a mistake in writing the price by the shopkeeper?" When the customer asked, the shopkeeper said – "No mistake has been made". His statement was correct. Similar idols, but the price is different, this is a fact. How is it true? The shopkeeper presented the certificate. When he inserted a rod in the ear of one of the idols, it came

out of the other ear. But when he put the same rod in the ear of the second idol, it did not come out of the other ear, but entered the heart; that is the point of importance. The shape and structure of the two idols is similar, but one is reaching the depths of the heart and the other is just superficial. The same is true in the context of the statements of Lord Mahaveer and Nietzsche. Although both the statements seem similar, a person usually does not understand what is the difference between freedom and free-will? Free-will helps in superficial soaring, while freedom engages in self-knowledge. Nietzsche said - God is dead. Then people can think that we are free to do as we wish, to eat, drink, have fun, there is no restriction.

Let's take an example. A father had two children. When the father passed away, one child started thinking that- "He was so old, he used to scold for everything, and didn't allow me to have fun. He is no more to interfere now. I can have fun, enjoy, drink liquor without any restrictions". While the other child thought that – "Since father is no more, now all the responsibility is on me. If there were mistakes in my conduct and behaviour, father would've corrected me, since my father is not present with me anymore, I have to be more careful. No one is there to keep a check on me, so I have to awaken self-control. The key/bridle should be in my hand. I should not deviate on the wrong path, but move in the right direction." It is for us to ponder that, Is God doing everything? Without him even a leaf cannot move, so is God the one who does sinful acts? Is this brutal orgy and feeling of egoism also created by God? We can say that it is not created by God. If there is freedom to do karma, then why is there no freedom in experiencing the deed? Why does he create and end the world? From the views of another side, it does not accept God as the creator, but it believes that Lord Mahaveer has spoken about **self-discipline** that- Be independent but rein of self-discipline should always be in your hands. Poet Anandghanji has said- "निज स्वरूप जे किरिया साधे.. ...."

The action which can be done with self-discipline and knowledge, that spiritual action will be for self-realisation. If there is no control or guidance of a parent or coach, then it is like a horse running in an open field. In such a situation, very few people are able to make a right decision. Usually, after forgetting the sense of duty, we swell in happiness and wither in sorrow. As it is said – "As you sow, so shall you reap." If babool tree is sown then only thorns will grow. But if you take the key in your hand, improve your present, then your future will definitely enhance. If you get stuck in laziness and laxity, then the beautiful dreams of the future will remain as dreams. If your present is not in your hands, then the future will also be not in your hands. It is not like a flying bird. There is still a possibility to catch a flying bird, but the future is invisible. It is in your hands to make it good. The light and the fan are hung up against the wall and roof, your hand does not go up till that height, but your hand reaches the switch on the wall. If the switch is pressed, you will receive light and air. Similarly, the key is here, the future is not reachable, but the control is in our hands, we can get light whenever we want. **If the present is strengthened and the soul is disciplined, then the future cannot be spoiled.** Then we can build the future at our

own will.

If a person wants to build a house, he must first make a map. The foundation has to be laid according to the size of the house. If the house is to be made circular, then the foundation also has to be laid round. It is not possible to lay the foundation of a different shape and build the house of another shape. Lord has called the foundation of present as – "Our freedom should be self-disciplined; it should not be dominated by ignorance (avidya)." If the rein is in our hands, then we can overtake it. How is the person's life today? How are his actions- is it to win over his own self or to indulge the four gatis **(गति)**?

**If we stay in this world, we will be the masters of the four gatis, but if we attain salvation then we get the ownership of siddh gati.**

The meaning of what Lord Mahaveer said is that- Attain one. There is also a proverb - **''एके साधे सब सधे''**. If we attain one, then we will stay in one form. But if we keep moving in these 4 gatis, then our liberty (free-will) will increase. By holding the reins of self-discipline, with present moment in hand and moving forward in right direction, one will be entitled to eternal happiness. All it requires is sincere dedication towards the goal! This surrender should be omnipresent. After surrendering, no feelings should rise and there shouldn't be any space for desire. If this sincere and honest dedication is absent, then the free-will shall increase and the horses of 4-gatis will make us collapse into the pit. Nietzsche could not control himself, so he went mad. Whereas Lord Mahaveer, due to the accomplishment of self-control and self-discipline, removed ignorance (avidya) and became entitled to eternal happiness. That is why it is a matter to understand that if victory over own self is attained, then the vine of ignorance will not spread and there will be no obstacle in the attainment of eternal happiness. It is necessary that **we ensure our efforts are in the right direction.**

Date : 22.10.1996
(Translated)

## कर्म सिद्धान्त - (जवाहर वाणी)

- जिस प्रकार मुंह को मीठा करने और जलाने का गुण मिश्री और मिर्च में है, उसी प्रकार शुभ और अशुभ फल देने की शक्ति कर्म में है।
- मंगल से मंगल और अमंगल से अमंगल होता है। आघात का प्रत्याघात होता रहता है। आज जो पाप तुम दूसरे से करवा रहे हो वही तुम्हें भी कभी करना पडेग़ा।
- कभी मत समझो कि करने वाला दूसरा है और आपत्ति हमारे सिर पर आ पड़ी है। बिना किया कोई भी कर्म भोगा नहीं जाता।
- हम अपने ही किये कर्म का फल भोगते हैं यह जान लेने पर शान्ति ही रहती है, अशान्ति नहीं होती। अपनी आंख में अपनी ही अंगुली लग जाय तो उपालंभ किसे दिया जाये।
- कृत कर्मो से, उनका फल भोगे बिना छुटकारा नही मिल सकता। अतएव फल से बचने की कामना करना व्यर्थ है।

**–संकलित**

# ''मृषावाद''

गतांक 15-16 मार्च 2022 से आगे...

''ऐसी वाणी बोलिए'' का धारावाहिक आपके समक्ष प्रतिमाह आ रहा है। प्राय: दैनिक व्यवहार के भाषाचार में हम जाने-अनजाने असत्य कथनों का उपयोग कर लेते हैं। ऐसे असत्य कथनों से कैसे बचा जा सकता है उसका सही तरीका ग्रहण करने हेतु प्रस्तुत है। आप सुधी पाठकगण असत्य कथन के 8 बिन्दु पढ़ चुके हैं, अब मृषावाद पर कुछ और ध्यातव्य बिन्दु इस प्रकार हैं-

## मृषावादी के लिए लोग क्या कुछ नहीं सोचते

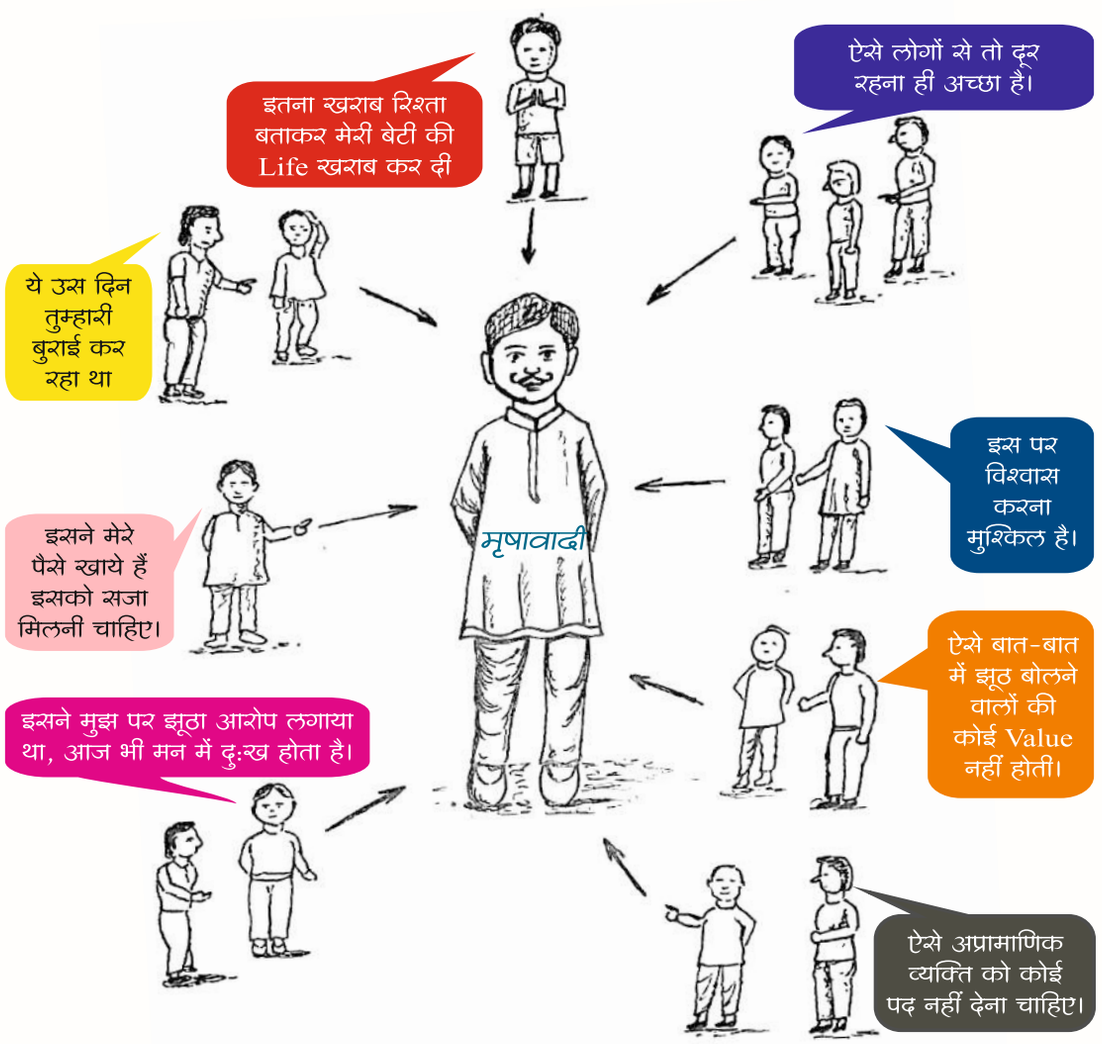


*कहीं आपने तो ऐसा कोई काम नहीं किया ना*
*कि लोग आपके बारे में भी ऐसा सोचें?*

# मृषावाद का भयंकर परिणाम

असत्य बोलने का विचार जब मन में उत्पन्न होता है तभी आत्मा मलीन हो जाती है और पाप कर्मों का बंध शुरू हो जाता है। दूसरे को धोखा देकर कदाचित् उसका अहित हम कर सकें या न कर सकें, स्वयं का अहित निश्चित कर लेंगे।

## भगवान ने मृषावाद का भयंकर परिणाम बताया है :-

(1) मृषावादी जन नरक तिर्यंच योनि में लम्बे समय तक घोर दु:खों का अनुभव करते हैं, फिर वहाँ से निकल कर भी दुर्गति प्राप्त करते हैं।

(2) वे पुनर्भव में भी पराधीन होकर जीवन यापन करते हैं, सदा दु:खी रहते हैं।

(3) वे कुरूप, खराब भोजन वाले, मैले-कुचैले, फटे-पुराने कपड़ों वाले होते हैं। मृषावाद के परिणामस्वरूप उन्हें न अच्छा खाने को मिलता है, न अच्छा पहनने को।

(4) वे अस्पष्ट व विफल वाणी वाले होते हैं, यानी न तो स्पष्ट उच्चारण कर सकते हैं और न उनकी वाणी सफल होती है।

(5) वे संस्कार रहित, सत्कार रहित होते हैं। उनका कहीं सम्मान नहीं होता।

(6) वे काक के समान अनिष्ट स्वर वाले, धीमी और फटी हुई आवाज वाले होते हैं।

(7) वे दूसरों द्वारा सताए जाने वाले होते हैं।

(8) वे अंधे, गूंगे, तोतले होते हैं।

(9) उन्हें नीच (निम्न) लोगों का सेवक बनना पड़ता है।

(10) वे सर्वत्र विरोध, धिक्कार एवं दोषारोपण के पात्र बनते हैं।

(11) वे सिद्धान्त के श्रवण एवं ज्ञान से रहित होते हैं।

(12) अंत में न उन्हें शारीरिक सुख प्राप्त होता है, न मानसिक शांति ही मिलती है। सहस्त्र वर्षों तक उन्हें दु:ख ही दु:ख भोगना पड़ता है।

असत्य भाषण को साधारण जन सामान्य या हल्का मानते हैं, पर प्रभु महावीर ने असत्य वचन का बहुत भयंकर दुष्परिणाम फरमाया है और यह भी फरमाया है कि इसके परिणाम भोगे बिना छुटकारा नहीं है, क्योंकि मायापूर्वक झूठ बोलने से, चालाकी करने से, गाढ़े कर्मों का बंध होता है। अत: मृषावाद के इस भयंकर फल को जानकर विवेकवान पुरुष इसका त्याग करें और सत्य बोलने का अभ्यास करें।

*श्रीमद् प्रश्न व्याकरण सूत्र, श्रुत स्कन्ध 1, अध्ययन 2*

**क्रमश:**

# श्रीमद् भगवतीसूत्र

गतांक 15-16 मार्च 2022 से आगे...

संकलनकर्ता– कंचन काँकरिया, कोलकाता

## आशीविष श. 8 उ. 2

**पूर्वापर संबंध– प्रकारांतर से पुद्गल परिणाम को ही प्ररूपित करने के लिए आशीविष का वर्णन किया जा रहा है। इस प्रकार दोनों उद्देशकों का परस्पर संबंध है।**

**प्र. 2279 आशीविष किसे कहते हैं ?**

उत्तर आशी शब्द का अर्थ डाढ़ है। जिसके डाढ़ में विष होता है, उसे आशीविष कहते हैं।

**प्र. 2280 आशीविष लब्धि (प्राप्ति) किस भाव में मानी जाती है ?**

उत्तर यह अंतरायकर्म के क्षयोपशम एवं पराघात नामकर्म के उदय भाव में होने की संभावना है।

**प्र. 2281 भंते ! आशीविष कितने प्रकार का है ?**

उत्तर गौतम ! आशीविष दो प्रकार का है। यथा– जाति–आशीविष और कर्म–आशीविष।

**प्र. 2282 जाति–आशीविष किसे कहते हैं ?**

उत्तर साँप, बिच्छु आदि प्राणी जाति (जन्म) से ही आशीविष वाले होते हैं। इसलिए उन्हें जाति–आशीविष कहते हैं।

**प्र. 2283 भंते ! जाति–आशीविष कितने प्रकार के हैं ?**

उत्तर गौतम ! चार प्रकार के हैं। यथा–

1. बिच्छु–जाति–आशीविष
2. मेंढक–जाति–आशीविष
3. साँप–जाति–आशीविष
4. मनुष्य–जाति–आशीविष।

**प्र. 2284 भंते ! बिच्छु–जाति–आशीविष का कितना विषय है ? (अर्थात् कितना सामर्थ्य है)**

उत्तर गौतम ! अर्द्ध भरतक्षेत्र प्रमाण शरीर को विषयुक्त करने में समर्थ है, परन्तु सम्प्राप्ति द्वारा अर्थात् क्रिया रूप में किसी ने किया नहीं, करता नहीं और करेगा नहीं। (असत् कल्पना से कोई मनुष्य अर्द्ध भरतक्षेत्र प्रमाण अपना शरीर बनाए, उसके पैर में बिच्छु डंक दे तो उसके मस्तक तक जहर चढ़ जाता है।)

**प्र. 2285 भंते ! मेंढक–जाति–आशीविष का विषय कितना है ?**

उत्तर गौतम ! भरतक्षेत्र प्रमाण शरीर को विषयुक्त करने में समर्थ है। किन्तु सम्प्राप्ति द्वारा किसी ने किया नहीं, करता नहीं और करेगा नहीं।

**प्र. 2286 भंते ! साँप–जाति–आशीविष का कितना विषय है ?**

उत्तर गौतम ! जंबूद्वीप प्रमाण शरीर को विषयुक्त करने में समर्थ है। किन्तु सम्प्राप्ति द्वारा किसी ने किया नहीं, करता नहीं और करेगा नहीं। (असंज्ञी सर्प में विष कम होता है)

**प्र. 2287 भंते ! मनुष्य–जाति–आशीविष का विषय कितना है ?**

उत्तर गौतम ! समयक्षेत्र (अढ़ाई द्वीप) प्रमाण शरीर को विषयुक्त करने में समर्थ है। किन्तु सम्प्राप्ति द्वारा किसी ने किया नहीं, करता नहीं और करेगा नहीं।

साभार– श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

–क्रमशः

# श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र

## नवमं नमिपव्वज्जा अज्झयणं।।9।।

(गतांक 15-16 नवम्बर 2021 से आगे...) संकलनकर्ता- सरिता बैंगानी, कोलकाता

इस अध्ययन का नाम नमिप्रव्रज्या है। अष्टम् अध्ययन के साथ इसका सम्बन्ध इस प्रकार से है- अष्टम् अध्ययन 'कापिलीय' में 'लोभ छोड़ देना चाहिए' ऐसा कहा गया है, क्योंकि लोभ रहित पुरुष ही इस भव में इन्द्र आदि देवों द्वारा पूजित होते हैं। इस बात को समझाने के लिए नवम् अध्ययन में नमिराजा के प्रतिबोध का कथन किया जा रहा है। प्रतिबोध प्राप्त होने पर ही मुनि बना जाता है। प्रतिबोध तीन प्रकार से प्राप्त होता है-

**(i) स्वयंबुद्ध-** किसी के उपदेश के बिना स्वयं बोधि प्राप्त करना। जैसे- कपिल केवली।

**(ii) प्रत्येकबुद्ध-** किसी बाह्य घटना के निमित्त से बोधि प्राप्त करना। जैसे- नमिराजा।

**(iii) बुद्धबोधित-** बोधि प्राप्त व्यक्तियों के उपदेश से बोधि प्राप्त करना। जैसे- 18वें अध्ययन में संजय राजा।

इन तीन प्रकारों में से इन अध्ययन में प्रत्येक बुद्ध मुनिराज नमिराजर्षि है इसके संबंध में यहाँ सर्वप्रथम प्रकट किया गया है-

मालव देश में मणिरथ नाम का राजा था। उसका छोटा भाई युवराज युगबाहु और युगबाहु की पत्नी का नाम मदनरेखा था। मदनरेखा अत्यन्त रूपवती होने के साथ-साथ जिनवचनों पर परम श्रद्धायुक्त थी। उसका चन्द्रयश नाम का एक पुत्र था। एक समय मदनरेखा ने स्वप्न में चन्द्रमा देखा तब उसके पति ने स्वप्न सुनकर कहा- 'चन्द्र के समान सुखप्रद पुत्र को तुम प्राप्त करोगी।' यह सुनकर मदनेरखा बहुत हर्षित हुई। गर्भ के प्रभाव से मदनरेखा को दोहद उत्पन्न हुआ कि मैं मुखवस्त्रिका धारण करने वाले निर्ग्रन्थ मुनिवरों को वंदना करूँ, जिनवाणी द्वारा भाषित तत्त्वों का श्रवण करूँ एवं सुपात्रदान, अभयदान तथा करुणादान दूँ। युवराज ने अपनी पत्नी के सभी दोहद की बहुत अच्छी तरह पूर्ति की। दोहद की पूर्ति से मदनरेखा का मन बहुत खुश रहने लगा और गर्भ भी आनन्द के साथ बढ़ने लगा।

एक दिन राजा मणिरथ ने मदनरेखा को देखा तो वह मदनरेखा के रूप पर आसक्त हो गया और उसने छल से अपने छोटे भाई को जहर से लदी तलवार से मार दिया। मदनेरखा अपने घायल पति को धैर्य से कहने लगी-''हे नाथ! आप घबराएं नहीं, क्रोध भी न करें। यह सब कर्मों का ही फल उदय में आया है। आप सभी जीवों से अपने अपराधों की क्षमा मांगे और आप उनके अपराधों को क्षमा दें। अपने जन/परिवार, धन आदि की जरा भी चिन्ता न करें तथा ममत्व न रखें। इस समय से चारों आहारों का त्याग कर दें और चार शरणों का आश्रय लें। आत्मकल्याण हेतु पंचपरमेष्ठी मंत्र का स्मरण करते रहें। इस तरह धर्म श्रवण करते हुए प्राणों का परित्याग किया और मृत्यु के समय क्षमा व श्रद्धा युक्त शुभ अध्यवसायों के कारण युगबाहु का जीव पाँचवें वैमानिक देवलोक में उत्पन्न हुआ। मणिरथ उसके पति को मार कर भाग रहा था तब साँप के डसने से उसकी वहीं मृत्यु हो गई और उसके ज्येष्ठ पुत्र चन्द्रयश को मालव देश का राजा बना दिया गया

गर्भवती मदनरेखा श्रमणोपासिका थी। अपनी शील की सुरक्षा के लिए वह अपने पुत्र, धन एवं घर को छोड़कर वन में चली गई। वहाँ उसने पुत्र को जन्म दिया। किसी कारणवश वह अपने दूसरे पुत्र से बिछुड़ गई। कुछ समय बाद मदनेरखा ने दीक्षा ग्रहण कर ली। वन से उसके छोटे पुत्र को मिथिला नरेश पद्मरथ ने अपने राज्य में ले जाकर अपनी रानी को देकर पुत्र जन्मोत्सव मनाया तथा उसका नाम 'नमि' रखा। योग्य अवसर आने पर राजा पद्मरथ ने नमिकुमार को राज्य का भार

सौंपकर दीक्षा ग्रहण कर ली। नमिराजा बड़ी योग्यता के साथ राज्य का संचालन न्याय अनुसार कर रहे थे।

एक बार नमिराजा के शरीर में भयंकर दाहज्वर रोग उत्पन्न हो गया। एक वैद्य ने चन्दन का लेप शरीर पर लगाने के लिए कहा। रानियाँ चन्दन घिसने लगी। चन्दन घिसते समय हाथों में पहने हुए कंगनों के टकराने की आवाज से नमिराजा व्याकुल होने लगे। उन्होंने पूछा- 'यह आवाज कहाँ से आ रही है? इस आवाज को बंद करवाओ'। रानियों ने राजा के आशय को जानकर सौभाग्य चिह्न स्वरूप एक-एक कंगन रखकर शेष सभी उतार दिए। आवाज बन्द हो जाने पर राजा ने मंत्री से पूछा- 'कंगनों की आवाज क्यों नहीं सुनाई दे रही है? क्या चन्दन घिसना बन्द कर दिया?'

मंत्री ने कहा- 'स्वामी! आपको कंगनों के टकराने की आवाज अप्रिय लग रही थी। अत: रानियों ने सुहाग के प्रतीक रूप एक-एक कंगन हाथ में रखकर शेष सभी उतार दिए हैं।''

**राजा को यह बात सुनकर एक नई प्रेरणा मिली। वे सोचने लगे कि जहाँ अनेक हैं वहाँ संघर्ष, दु:ख, पीड़ा, राग-द्वेष आदि हैं। जहाँ एक है वहीं सच्ची सुख-शान्ति है। इसलिए जब तक मैं स्त्रियों में, खजानों में, मन में, परिवार में, शरीर में, इन्द्रियों में एवं राज्य भोगों में रहूँगा, तब तक मैं दु:खी रहूँगा। यदि इन सबको छोड़कर एकाकी हो जाऊँ तो दु:खी न होकर सुखी हो जाऊँगा। इसलिए मैं यदि इस रोग से मुक्त हो जाऊँगा तो सर्व संग का त्याग कर दीक्षा ग्रहण करूँगा।**

इस प्रकार विचार करते हुए नमिराजा को रात्रि में अच्छी निद्रा आई। इस घटना से राजा के मन में वैराग्य भाव जागा। निद्रा में नमिराजा ने स्वप्न में सफेद हाथी पर चढ़कर मेरु-पर्वत पर चढ़ने का विशिष्ट स्वप्न देखा। प्रात:काल जब जागे तो विचार करने लगे कि ऐसा पर्वत मैंने पहले भी देखा है। इस प्रकार बार-बार विचार करते हुए उनको जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया। इस ज्ञान के प्रभाव से उन्होंने जान लिया कि उन्होंने पूर्वभव में दीक्षा लेकर शुद्ध संयम की पालना की थी और मरकर सतरह सागरोपम की स्थिति वाले पाँचवें देवलोक में गया था। उस समय मेरु पर्वत पर नंदनवन में गया था।

उत्तम पुरुषों को जो स्वप्न आते हैं, वे असाधारण होते हैं। उनके स्वप्न के पीछे कोई न कोई प्रयोजन जरूर होता है। भगवान महावीर स्वामी ने इस अध्ययन नमिराजा के स्वयं प्रबुद्ध होने के सम्बन्ध में पहली गाथा में इस प्रकार फरमाया-

चइऊण देवलोगाओ, उववण्णो माणुसम्मि लोगम्मि।
उवसंत-मोहणिज्जो, सरइ पोराणियं जाई।।1।।

**भावार्थ-** देवलोक से च्यव कर मनुष्यभव लोक में उत्पन्न हुए तथा उपशान्त दर्शन मोहनीय कर्म वाले नमिराजा को अपने पूर्वभव की जातियों की स्मृति याद आ गई।

**''सरइ पोराणियं जाइं''**- अर्थात् पूर्वजन्म की स्मृति या जातिस्मरणज्ञान।

**नोट-** जाति स्मरण ज्ञान मतिज्ञान का एक भेद है। जीव यदि लगातार अनेक भवों तक संज्ञी पर्याय में हो तो जातिस्मरणज्ञान से अधिकतम 900 भव तक स्मृति कर सकता है। जातिस्मरणज्ञान दो प्रकार से उत्पन्न होता है-

**(i) 'उवसन्त-मोहणिज्जो'** अर्थात् मोहकर्म के उपशान्त होने से। मोहनीय कर्म जीव के सम्यग्दर्शन का बाधक होता है अर्थात् (मोह) राग-द्वेष के उदय को निष्फल करने वाले जीव के अध्यवसायों में निर्मलता के कारण मतिज्ञानावरणीय का क्षयोपशम होने से जो जातिस्मरण ज्ञान प्रकट होता है वह सम्यक्त्व ज्ञानरूप होता है।

**(ii)** ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न जातिस्मरणज्ञान मिथ्यारूपी (अज्ञान रूप) होता है।

**-क्रमश:**

# तत्त्व बोध

अंगारमर्दक आचार्य आदि कुछ कथाओं को प्राचीन ग्रन्थों से पढ़ने, समझने पर ज्ञात होगा कि कालप्रवाह कथाओं में किस तरह का व्यापक बदलाव ले आता है, जिससे अनेक बार कथा का मूल शरीर ही परिवर्तित हो जाता है। यहाँ चन्दनबाला की सुप्रसिद्ध कथा में कालक्रम से आए एक ऐसे ही परिवर्तन को स्पष्ट किया जा रहा है। श्री नेमिसूरिजी समुदाय के आचार्य श्री विमलप्रद्युम्नसूरिजी ने स्वसम्पादित 'कल्पान्तर्वाच्य' के सम्पादकीय में तथा अभी भी केसरसूरिजी के समुदाय के मुनि श्री सौम्यप्रभविजयजी ने 'चन्दना' की बहुप्रचलित कथा के विषय में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य को उद्घाटित किया है तथा प्राचीन आधारों से यह प्रमाणित किया है कि बहुप्रचलित होने पर भी यह सत्य नहीं है कि भगवान महावीर छद्मस्थ अवस्था में चन्दना के द्वार पर आए तब चन्दना की आँखों में आँसू नहीं थे किन्तु आँसू न होने के कारण अभिग्रह पूर्ण न हो पाने पर भगवान लौट गए एवं भगवान को द्वार से लौटता देख चन्दना की आँखों में आँसू आ गए। सत्य यह बताया गया है कि चन्दना के पहले से ही आँसू थे। वह पहले ही रो रही थी एवं भगवान उसके द्वार पधारे एवं अभिग्रह की सारी बातें मिलने से वहीं अभिग्रह पूर्ण हो गया। इस विषय में मुनि श्री सौम्यप्रभविजयजी का लेख उद्धृत किया जा रहा है–

अत्यारे वधु प्रचलित कथानक मुजब अभिग्रहनी अन्य बधी ज शरतो पूर्ण थती होवा छतां पण चन्दनबालानी आंखमां आंसू न होवाना एकमात्र कारण थी प्रभु वीरे तेना हाथे भिक्षा ग्रहण न करी अने त्यांशी प्रस्थान कर्युं। परन्तु त्यार बाद प्रभुना आवी रीते जता रहेवाथी शोकाकुल थयेली चंदनबाला रडवानो आवाज सांभलीने प्रभु परत आव्या अने तेना हाथे अडदनां बाकलां वहोर्यां।

परन्तु आ संबंधे विविध ग्रन्थों तपासतां ध्यान पर आव्युं के महत्तम शास्त्रग्रन्थों 'प्रभुवीरना आवतां पूर्वे ज चंदनबाला पोतानी दु:खी अवस्थाने लीधे रडती व्ती' अेणुं जणावे छे–

ताहे सा हत्थिणी जहा कुल संभारिऽमारद्धा एलुगं विक्खंभइता तेहिं पुरओकएहिं हिययब्भंतरओ रोवति, सामी य अतियओ, ताए चिंतियं सामिस्स देमि।।

–आवश्यक सूत्र नी चूर्णि, हरिभद्रि वृत्ति, मलयगिरिया वृत्ति, उपदेशमाला

**हेयोपदेशावृत्ति**

**इय णिथयावत्थं णिंदिऊण सुकुलुग्गयं च सविसेसं।**
**पुणरूत्तणेंतबाहंबुणिब्भरं रूयइ सा बाला।।**

**–श्री शीलांकाचार्य रचित चउपभमहापुरुसचरियं–249**

**परूमुण्डितमुण्डां च भिक्षुकीमिव चन्दनाम्।**
**अश्रुशरितनेत्राब्जामीक्षाञ्चके धनवाह:।।**

**–त्रिषष्टि – 10.4.566**

**सा तयवत्था सुमरिय पिडगेहं हत्थिणि त्व नियजूहं।**
**मुत्ताहलसरिसाइं रोयइ अंसूइं मुयमाणी।।**

**–श्री नेमिचन्द्रसूरिजी रचित महावीर चरित्र–1311**

**चंदणा वि करिणि व्व विंझंपिडहरं सुमरिउं रोयइ**
**ईईसी मम अवत्था दहिवाहणधूयाए वि होऊण।**

**–श्री जिनेन्द्रसूरिजी रचित कथाकोश**

**तओ दट्ठूण उच्छंग–गय–सुप्पकोण–कय–**
**कुम्मासे अहिणवालाण–बद्धकरि व्व विंझं नियकूल**
**सरिऊण रोविउमारद्धा।।**

**–श्री वर्धमानसूरिजी रचित मनोरमा कथा**

**तत्तद्बद्धं गृहद्वारं द्रागुद्घाट्य धनावह:।**
**रूदतीं क्षुत्पिपासार्तां दीनां चैक्षत चन्दनाम्।।**

**–उपदेशमाला– कर्णिका वृत्ति 1063**

**मग्ना दु:खार्णव इव रुदव्यश्रुजलाविला।**

दर्शं दर्शं च तन्माषान् पुनरेवं व्यभावयत्।।
नोल्लङ्घ्य देहलीं गन्तुं चन्दना निगडैः क्षमा।
तत्रस्थैवाऽद्भुताभक्तिः स्वामिनं स्माऽडह सार्द्रदृक।।

–श्री चन्द्रप्रभसूरिजी रचित श्री तिलकसूरिजी रचित वृत्तियुक्त सम्यक्त्व प्रकरण–78116

कुत्र सर्वोत्तमं पात्रं क्व च दातव्यमीदृशम्।
इति साधु सरवेदं च चन्दना गद्गद्स्वरम्।।

–श्री वर्धमानसूरिजी रचित स्वोपज्ञवृत्तियुक्त धर्मरत्नकरंडक प्रकरण–137

इय दुव्वह सागभरावरुद्धं कंठक्खलंतवयणा सा।
निवडंतसलिलाबाहप्पवाह धोयायणा बाला।।
तण्हाछुहाकिलामियकवोलमह पाणिपल्लवे ठविउं।
वयणं खणंतरं रोविऊण दीहं च नीससिउं।।

–श्री गुणचन्द्रसूरिजी रचित महावीर चरित्र–4, 5

आ सिवाय श्री सोमप्रभाचार्य रचित कुमारपाल प्रतिबोध जेवा ग्रंथों मां पण चन्दनबाला पहेली थी ज रडतां हतां तेवी बात छे। परन्तु बहु ज थोड़ा ग्रन्थों मां प्रभु ना जता रहेवार्था आंसू आव्या तेवी पण बात जोवा मले छे–

बुभुक्षिता सत्यपि रोदनं न करोति, ततः स्वामिना करो न प्रसारितः, तदा अहो ममाऽभागिन्या हस्तादयं मुनिरप्याहारं न गृहणातीति चिन्तयन्ती सा रूदनं चकार।।

–श्री देवेन्द्रसूरिजी रचित दानादिकुलक संग्रह (वृत्ति)

मदीयोऽभिग्रहः संपूर्णः परं सा रूदति नास्ति, अत्तो न गृहणामीति बुद्धया पश्चाद् बलितो भगवान। तदा वसुमत्यश्रुजालाविललोचना चिन्तयति–धिग् मन्दभाग्याऽहं मद्गृहमागतोऽपि भगवान मामवधृत्य गतः, तदा भगवताऽभिग्रहं पूर्णं जातं दृष्ट्वा पश्चाद् वलिव्वा माषभिक्षा गृहीता।।

–उपदेशमाला श्री रामविजयगणि रचित वृत्ति

भगवान महावीर : एक अनुशीलन (आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी, पृ. 343) तथा 'तीर्थंकर महावीर' (लेखक– श्री मधुकरमुनि, श्री रतनमुनि, श्रीचन्द सुराणा 'सरस' पृ. 120) में भी ये भाव व्यक्त किए हैं कि प्रभु का लौट जाना और वापस मुड़ना – किसी प्राचीन चरित्र ग्रन्थ में देखने को नहीं मिलता।

तदनुसार इस विषय में ऐसा समझना चाहिए कि आँसुओं के न होने से भगवान लौटे एवं फिर आँसू आए ऐसी बात नहीं है। अपितु पहले से ही चन्दना की आँखों में आँसू थे एवं भगवान के पहली बार पधारते ही अभिग्रह फलित हो गया।

साभार– जैन सिद्धांत मंजूषा

**प्रिय पाठको,**

सादर जय जिनेन्द्र!

आप सभी को सूचित किया जाता है कि श्रमणोपासक में प्रकाशन हेतु किसी भी जानकारी व आपके क्षेत्र के समाचार प्रेषित करने हेतु मोबाइल नम्बर– **8955682153** पर सम्पर्क करें। यह मोबाइल नम्बर सिर्फ श्रमणोपासक प्रकाशनार्थ सामग्री भेजने हेतु उपयोग में लेवें। अगले अंक हेतु आपके क्षेत्र के समाचार इसी मोबाइल नम्बर पर ही भिजवाने का कष्ट करें। आप अपने समाचार हमें ई–मेल : **news@sadhumargi.com** द्वारा भी भेज सकते हैं। श्रमणोपासक के लिए उपरोक्त मोबाइल नम्बर व ई–मेल पर भेजे गए समाचार ही मान्य होंगे।

–सह–सम्पादिका

# गुरु सुदर्शन जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में

## साम्प्रदायिकता मुक्त जीवन : गुरु सुदर्शन

**(संघ संचालक श्रद्धेय श्री नरेशमुनिजी म.सा. उत्तर भारत में जिनशासन की भव्य प्रभावना करने वाले गुरुवर श्री सुदर्शन के संघ के वर्तमान संघ संचालक हैं। हाल ही में संघ संचालक श्री नरेशमुनिजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती बहुश्रुत श्री जयमुनिजी म.सा. आदि ठाणा व साधुमार्गी संघ के आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. आदि ठाणा का अद्‌भुत आध्यात्मिक मिलन मदनगंज–किशनगढ़ (राज.) में हुआ। गुरुवर श्री सुदर्शन के संघ के साथ साधुमार्गी संघ के तृतीय पट्टधर आचार्य श्री उदयसागरजी म.सा. के समय से वंदन व्यवहार है। दूरदृष्टा स्मृतिशेष आचार्य श्री सुदर्शनलालजी म.सा. के जन्मशताब्दी वर्ष (4 अप्रैल 2022–4 अप्रैल 2023) के पावन प्रसंग पर श्रमणोपासक टीम की ओर से श्रद्धासिक्त भावांजलि।)**

**इस स्वर्णिम अवसर पर बहुश्रुत श्री जयमुनिजी म.सा. की भावांजलि प्रस्तुत हैं।**

हर युग में, हर इलाके में, हर धर्म, समाज को कुछ ऐसे महापुरुषों का मार्गदर्शन मिला है, जिनके कारण वे युग, क्षेत्र और धर्म समाज रूपान्तरित भी हुए हैं, कृतार्थ भी हुए हैं तथा आदर्श स्थिति में भी पहुँचे हैं। पिछली सदी में उत्तर भारत में स्थानकवासी समाज को ऐसे ही एक दिव्य युगपुरुष का अवलम्बन मिला था। जिनका नाम भी सुदर्शन था तथा काम भी सुदर्शन था। संघशास्ता, शासन प्रभावक, गुरुदेव श्री सुदर्शनलाल जी महाराज आचार और प्रचार के समन्वित सेतु थे। नवीनता और प्राचीनता के तटि प्रेक्षक थे। परम्परा और अग्र गामिता के संरक्षक थे। निश्चय व्यवहार संयम, द्रव्य भाव साधना, बाह्याभ्यन्तर तपस्या उनमें विलक्षण रूप से एकीकृत हो गई थी।

**''थे आदर्श पुरातनता के**
**और प्रेमी नवता के**
**बन्धु थे वे प्राणिमात्र के,**
**आश्रय मानवता के''।।**

उनके जीवन के किसी भी पक्ष को निहार लें, कहीं भी नकारात्मकता नहीं थी। उनकी सोच सकारात्मक थी, भाषा सकारात्मक एवं व्यवहार भी सकारात्मक। उनकी मान्यता थी कि धर्म हमें सकारात्मक दृष्टिकोण से भरपूर करता है। स्वाभिमान और आस्तिकता को वे पयार्यवाची मानते थे। वे हर धर्म, पंथ, मजहब, परम्परा की अच्छाई देखते, कहते और प्रचारित करते थे। वे अक्सर कहते थे कि हर आदमी में, हर परम्परा में दोष भी होते हैं, गुण भी होते हैं। दोषों का प्रतिशत कम होता है और गुणों का प्रतिशत ज्यादा। आस्तिक व्यक्ति गुणात्मक अंश को पकड़ता है तो नास्तिक आदमी दोषात्मक अंश को। क्योंकि वे स्वयं में हार्डकोर पॉजिटिव थे, इसलिए दुनिया के हर धर्म दर्शन के प्रवक्ता बन पाए थे। उन्होंने किसी धर्म संप्रदाय या परम्परा की आलोचना, विरोध या खण्डन नहीं किया। विशुद्ध रूप से वे एक सम्प्रदायातीत सन्त थे। उनकी घरेलू पृष्ठभूमि की ओर ही झाँक लें – उनके पूर्वज विशुद्ध वैष्णव धर्मी थे। उनके दादा श्री जग्गूमल जी पक्के चुस्त जैन थे। पिताश्री चंदगीराम जी वकील जैनागमों तथा मागधी भाषा के ज्ञाता थे तो माँ सुन्दरी पीहर में सनातनी, ससुराल में जैन थी। इनकी माँ इन्हें ठाकुर द्वार ले जाती तो दादा गुरु दर्शन करवाने स्थानक लाते थे। इनके बचपन को ध्यान में रखकर शायद ये पंक्तियाँ लिखी गई होंगी–

**''इनकी नजरों में एक हैं मंदिर मस्जिद गुरुद्वारे**
**बच्चे मन के सच्चे सारे जग की आंख के तारे''।।**

जैनों की स्थानकवासी परम्परा से नवकार मंत्र,

तिक्खुत्तो, करेमि भंते, पच्चीस बोल सीखे, तो दिगम्बर स्कूल में मा. शिवराम रचित भगवान के भक्ति के गीत भी याद किए। रोहतक में स्थिर वासी श्री रामनाथ जी म. की चरणरज ली तो बगीची में पधारने वाले दिगम्बर ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद वर्णों को वन्दना कर धन्य भी बने। इस प्रारम्भिक उदारता ने बाद में जिन-जिन क्षितिजों को निहारा, जिन-जिन प्रसंगों को जीया, जिन-जिन व्यक्तित्वों को जाना, जिन-जिन दर्शनों साहित्यों को खंगाला, उस-उस की नकारात्मकता उपेक्षित की और सकारात्मकता संजोली। ऐसी इन्द्रधनुषी चिन्तनधारा के कारण उनका हर पहलू सप्तरंगी नहीं, शतरंगी बन सका था। उन रंगों का सौन्दर्य इतना अनूठा रहा है कि उनका चाक्षुष प्रत्यक्ष करने हर दिशा से, हर कोने से जनता उमड़ कर आती थी। उस जीवन की विविधता का आकलन अनेकान्तवादी विचारक सम्यक् प्रकार से कर सकता है। चूंकि प्रत्येक जैन को अनेकान्तवाद विरासत में मिला है अत: प्रत्येक जैन उनके जीवन का महत्त्व सहजता से कर पाएगा। उनका जन्म हरियाणा प्रान्त के रोहतक शहर में सन् 1923 चार अप्रैल को हुआ। उनके माता पिता के परिचय से ज्यादा आवश्यक उनके पितामह का परिचय है। उनके पितामह थे श्री जग्गूमल जी जैन (अग्रवाल, गर्ग गौत्रीय)। श्री जग्गूमल जी जन्मना सनातन वैष्णव थे, पर परिवार में जैन संस्कार भी आने शुरू हो गए थे। वे जैन संस्कार प्रगाढ रूप से श्री जग्गूमल जी में समाए। प्रतिदिन सामायिक के अलावा स्थानक में साधु साध्वियों की सेवा में निरन्तर उपस्थित रहते थे। जब भरी जवानी में पत्नी का देहान्त हो गया तो आजीवन शीलव्रत ले लिया तथा रात्रिभोजन त्याग के साथ कच्ची पक्की हरी वनस्पति का प्रत्याख्यान भी ले लिया। अपने तीनों सुपुत्रों में भौतिक शिक्षा से ज्यादा धर्मध्यान के संस्कार भरे। बच्चे अपने पैरों पर खड़े हो गए तो 51 वर्ष की आयु में दीक्षा अंगीकार कर ली। पितामह से प्राप्त इस सुदृढ़ भूमिका के अलावा गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. को पिता श्री चंदगीराम जी एवं माता श्रीमती सुन्दरी देवी का वात्सल्य प्राप्त हुआ। पिताजी गोल्ड मेडलिस्ट वकील होते हुए भी आगमज्ञ तत्वज्ञ श्रावक थे। समग्र उत्तराध्ययन सूत्र उन्हें कण्ठस्थ था। माता श्रीमती सुन्दरी, शान्ति समता सेवा में आकण्ठ डूबी रहने वाली महिला थी।

लेकिन प्रकृति का प्रकोप कहें या संसार का स्वभाव सुन्दरी देवी और सुदर्शन का साथ लम्बा नहीं चल सका। श्री कृष्ण महाराज ने आजीवन माँ के हाथ से भोजन खाया पर बालक सुदर्शन को माँ का भोजन कुल चार साल मिला। 1927 में सुन्दरी देवी दिवंगत हो गई। भले ही बालक सुदर्शन माँ की गोद के प्यार से वंचित हो गया पर जीवन निर्माण के लिए, साधना मार्ग पर अग्रसर होने के लिए जरूरी संस्कार पर्याप्त मात्रा में मिले।

बाबा जग्गुमल जी ने स्थानक ले जाने की आदत डाली तो स्वयं ही स्थानक, साधु, सामायिक, स्वाध्याय से जुड़ गए। इन संस्कारों में गहराई आई दो कारणों से 1. पढाई के उद्देश्य से रोहतक से दिल्ली में चाचा मास्टर शाम लाल जी के पास शिफ्ट हुए वहाँ बारादरी स्थानक में उच्चकोटि के महामुनियों के प्रवचन मिले। 2. बाबाजी ने स्वयं दीक्षा ले ली और इशारा कर दिया कि अब तेरा नम्बर है। विचार तो परिपक्व हो गए पर दीक्षा के लिए परिवार की अनुमति मिलना अशक्य हो गया। आज्ञा न मिलने का मुख्य कारण बालक के प्रति रागभाव नहीं या अपितु सामाजिक अप्रतिष्ठा का खतरा था।

चूंकि इनकी माँ का देहान्त हो चुका था अत: समाज का गैर जिम्मेदार तबका परिवार पर लांछन लगा सकता था कि बिना माँ के बेटे को घर से निकाल दिया। आज्ञा न मिलने पर कुछ-कुछ निराशा बनती पर अपने पुरुषार्थ पर अटल विश्वास कायम रखा। उस विश्वास पर सफलता की मुहर लगी तब, जब उन्हें दिवंगत जननी से परोक्ष सहायता मिली। फिर तो वीर सुदर्शन धर्मवीर बनकर व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी म. पितामह श्री जग्गूमल जी म. के पावन सान्निध्य के अधिकारी बन गए।

18 जनवरी 1942 के दिन संगरूर में दीक्षा हुई तो

जैन गगन में कई-कई सूर्यों की आभा छिटक गई। धरा धन्य हुई, जिनवाणी जयवंत हो गई। युगों-युगों के बाद कोई विलक्षण युवा जिनशासन में दीक्षित हुआ था।

उत्तर भारत के फलक पर श्री हरिदास जी म. लाहौरी ने स्थानकवासी आचार विचारों की बुनियाद रखी थी। उनके बाद 15 पीढ़ियों में उत्तमोत्तम आचार्य हुए थे, महामुनिराज हुए थे, प्रभावक संत रत्न हुए थे। मगर उनकी सोलहवीं पीढ़ी के तौर पर दीक्षित श्री सुदर्शन मुनि जी कुछ विशिष्ट अतिविशिष्ट योग्यताएं लेकर आए थे। इस दीक्षित युवा मुनि ने दादा गुरुदेव श्री नाथूलाल जी म.सा. को दाद दिलवाई, गुरुदेव श्री मदन लाल जी म.सा. को महिमान्वित किया, पितामह श्री जग्गूमल जी म. को इतिहास में जगह दिलवाई।

अपने प्रतिभाबल से जैन आगमों का तलस्पर्शी अध्ययन किया, संस्कृत प्राकृत अंग्रेजी के गहन ग्रन्थ पढे। विविध विषयों का परायण किया। अपना बौद्धिक क्षितिज तो व्यापक बनाया ही तीन साल बाद अपने गुरुभ्राताओं को अध्यापन कराने का दायित्व भी वहन किया। 1947 में श्री मयाराम गण के गणावच्छेदक श्री बनवारी लाल जी म. की इतनी सेवा शुश्रूषा की कि उन्होंने कहा- 'सुदर्शन, तेरी सेवा से मेरी आत्मा अत्यन्त संतुष्ट है'। आजादी का वर्ष देश विभाजन का वर्ष भी था। विभाजन की विभीषिका में धराए मुस्लिम परिवारों की रक्षा करवाई। मुनक समाज के भव्य निर्माण का कल्पनातीत कार्य संपादित किया।

फिर उनके जीवन में एक विशेष स्थान का जुड़ाव हुआ। वह था- दिल्ली चांदनी चौक, बारादरी महावीर भवन, वहाँ 9 साल तक ठहरे। देहदृष्टि से ही ठहरे पर वे पूरे काल में गति-प्रगतिशील रहे। ठहरे इसलिए कि उनके बाबा श्री जग्गूमल जी म. विहार करने में असमर्थ हो चले थे। उनकी सेवा का दायित्व वहन किया।

अपने आध्यात्मिक, बौद्धिक, मानसिक विकास के लिए उन्होंने तत्रस्थित विशाल पुस्तकालय के बहुमूल्य ग्रन्थों का अध्ययन किया। स्थानीय विशाल संघ में धर्मानुष्ठान, ज्ञान ध्यान को विस्तार व गहनता प्रदान की बालकों युवकों को कुव्यसनों से दूर रखा देश के भिन्न-2 भागों से आने वाले त्यागी संयमी साधु संतों के साथ आत्मीयता स्थापित की उनकी सेवा का लाभ लिया। सबको सम्मान दे सम्बन्धों में मधुरता घोली मयाराम गण, मदन गुरु परिवार की श्रीवृद्धि में नए-2 मील पत्थर कायम करते हुए उच्च घरानों के युवकों को वैराग्य भावित कर प्रव्रजित किया।

ऊर्जा पुंज उस महान आत्मा ने बाबाजी म. के देवलोक के बाद उत्तरभारत के अन्य प्रदेशों में सघन विचरण कर धर्म क्रान्ति की अलख जगाई। यू.पी., हरियाणा, पंजाब, हिमाचल में सात्विक संयमीय परम्पराओं का परचम फहराकर युवा पीढ़ी को सम्यक् दिशा प्रदान की।

फिर उनके जीवन में नया मोड़ आया। 1963 में जब उनके गुरुदेव व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी म.सा. ने अपने देवलोक गमन से पूर्व मुनि संघ का भार उन पर डाल दिया। धीरे-धीरे समाज में विशुद्ध चारित्र पालना के लिए पहचान बन गई समाजों में प्रेम एकता भ्रातृभाव की स्थापना में अग्रणी स्थान पाते गए।

वाणी व्यवहार विचार की मधुरता इतनी गजब की थी कि उनका समग्र जीवन ही जादुई चुम्बक बन गया जो एक बार निकट आया वह सार्वकालिक सेवक बन गया। अपरिचित जन समीप आने लगे। धर्मध्यान के मेले उनके सान्निध्य में लगने लगे। हाँ, उनकी धर्मध्यान, प्रसार शैली पूर्णत: सिम्पल और साधारण रही। तड़क-भड़क आडम्बर उनकी प्रकृति के अनुरूप ही नहीं था। श्रावकों को सामायिक से जोड़ने की उनके पास बेजोड़ कला थी पूर्ण गणवेश। गणवेश वाली सामायिक को ही वे प्रोत्साहित करते थे। चातुर्मास, पर्युषणों, संवत्सरी पर पौषधों की बहारें भी उनके दरबार की खास पहचान थी। उनका विहार क्षेत्र बहुलतया उत्तरी भारत रहा। हाँ, एक बार दो साल के लिए राजस्थान का एक छोर जयपुर,

अलवर, हिण्डौन, सवाई माधोपुर, टोंक, भरतपुर उन्होंने अवश्य छूआ था। अपने प्रथम शिष्य श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. को दूर-दूर क्षेत्रों में विचरण हेतु दो बार प्रेषित भी किया, पर उनकी गहन उपस्थिति का मेघ उत्तरभारत में ही बरसा। इस कारण यहाँ का जनमानस उनकी विचार आचारशैली का कायल रहा। स्थानकवासी घरों में उन्हें भगवान जैसा दर्जा मिला। दिगम्बर तेरापन्थ घरों में भी श्रद्धेय वन्दनीय रहे। सनातन, आर्य समाजियों में भी सम्माननीय नमनीय रहे।

हरियाणा संभाग के अग्रवाल जैन स्थानकवासी जैन, दिगम्बर, तेरापन्थ इन तीन धाराओं के परिपालक है। तीनों समुदायों के लोग इनके सान्निध्य में आए। कारण कि ये सबका, सबकी व्यवस्थाओं का मान रखते थे। उनका ये प्रयास कभी भी नहीं रहा कि अन्य सम्प्रदाय के आगन्तुकों को अपने खेमे से जोड़ना और उनके मूल ठिकाने से तोड़ना ये न उनकी प्रकृति थी, न विचारधारा। हर व्यक्ति अपने मूल से जुड़ा रहकर इतर वर्ग से लाभ ले तो विस्तार है। पर जोड़-तोड़ में लगे रहना जैनत्व की हानि है।

उन्होंने दिगम्बर मुनियों की आहारचर्या पर कभी अनुचित टिप्पणी नहीं की। न मूर्ति तथा विविध अनुष्ठानों पर कटाक्ष किया। इसी तरह तेरापन्थ के नूतनाभिमुखी दृष्टिकोण पर भी गुरुदेव ने व्यंग्य या विरोध नहीं किया। दरअसल दूसरों के घर पर पत्थर फेंकने में उनको रस ही नहीं आता था। उदारता उनकी पहचान थी। सबको अपने घर की सारसंभाल का अधिकार है। किसी के द्वारा दखल देकर औरों की शान्ति भंग करने को उन्होंने अहमकाना माना था। अपनी सम्प्रदाय, अपनी मान्यता को सर्वोत्कृष्ट सिद्ध करने के लिए दूसरों की मान्यता के दोष गिनना उन्हें गंवारा नहीं था। वे अपने सम्प्रदाय संरक्षण में तत्पर रहे, पर इतर सम्प्रदायों पर छींटाकशी से दूरतर भी रहे।

और नजदीक झाँकते हैं तो स्थानकवासी सम्प्रदाय में भी उनका सम्बन्ध पंजाब परम्परा के मुनि मयाराम गण से था 1952 तक पंजाब सम्प्रदाय संगठित रूप से चलता रहा था। बाद में व्याख्यान वाचस्पति भी मदनलाल जी म.सा. को युगीन परिस्थितियों के कारण मुख्य संगठन श्रमण संघ से तथा पंजाब के श्रमणसंघीय मुनियों से पृथक् व्यवस्था बनानी पड़ी थी। उसी पृथक् व्यवस्था का नेतृत्व पूज्य गुरुदेव ने संभाला था। नए संघ के विस्तार के उस सूत्रधार ने कभी भी साम्प्रदायिकता का रंग समाजों में, व्यक्तियों में नहीं भरा। अपने के लिए श्रावकों का संगठन निर्मित करके समाज विभाजन नहीं किया। समग्र उत्तर भारत के प्रत्येक परिवार को अपना माना किसी श्रावक की किसी परिवार की निष्ठा या लगाव यदि अन्य मुनि से रहा तो भी उसे उपेक्षित नहीं किया, पराया नहीं माना। अपने पास अधिक आने वाले को किसी पद से नहीं नवाजा गुरुधारणा के नाम पर किसी मस्तिष्क में ये जहर नहीं घोला कि किसी अन्य स्थान पर या संत के सानिध्य में नहीं जाना किसी साधु साध्वी के संयमी व्यवहार को शिथिलाचार का ठप्पा लगाकर उनसे दूर रहने का संकेत नहीं किया। अपनी समाचारी का पालन सुदृढ़ता से करते रहे। यथा बिजली का प्रयोग वर्जित रखा। ध्वनियंत्र में नहीं बोले, पंखों की सुविधा नहीं ली, फोटोग्राफी से बचे रहे। जो इनका प्रयोग करते हैं वे असाधु है तथा असाधु को वंदना करना, आहार बहराना मिथ्यात्व का पोषण है, इन संकीर्णताओं को बढ़ावा देते तो उत्तर भारत का स्थानकवासी समाज कट्टरताओं का शिकार हो जाता। कट्टरता के खौफनाक मंजरों से बचाने का अधिकतम श्रेय पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म.सा. को जाता है। यदि वे संकीर्ण विचारधाराएं जनता में भरते तो श्रावक श्राविकाएं गुरुओं की निंदा चुगली में भी धार्मिकता मान लेते। उन्हें पता था कि सामान्य मानव के भावुक मन को किसी भी मुद्दे पर गुमराह किया जा सकता है। उसे साम्प्रदायिक रूप से कट्टर बनाने में ज्यादा जोर नहीं लगता। उदार बनाने में जोर लग सकता है, कट्टर बनाने में नहीं। उन्होंने अपनी ताकत उदार बनाने में लगाई, कट्टर बनाने में नहीं।

उन्हें जिस परिवेश में परवरिश मिली, जिन महापुरुषों की संगति मिली, जैसा साहित्य पढ़ा गया, उसने भी उन्हें

सम्प्रदाय भावना से मुक्त होने में मदद दी।

साधुमार्गी संघ के षष्ठम आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. का जब हरियाणा, दिल्ली, यू.पी. में विचरण हुआ था तब बालक सुदर्शन को उनके मुखारविन्द से गुरुधारणा सम्यक्त्व ग्रहण का प्रसाद मिला था। उनके उत्तराधिकारी आचार्य श्री गणेशलाल जी म.सा. के पावन सान्निध्य में इन्हें 1950 का चातुर्मास बिताने का बहुमूल्य अवसर मिला था। उस वर्ष परस्पर की निकटता इतनी प्रगाढ़ हो गई थी कि आचार्यश्रीजी अपने भक्तों को कहा करते कि सुदर्शन मुनि वाचस्पति जी के शिष्य हैं तो मेरे भी शिष्य हैं।

गुरुदेव भी उन्हें गुरु मानकर अपने मन के प्रत्येक रहस्य को उनके सामने उड़ेल दिया करते। उनके ही शिष्य श्री नानालाल जी म.सा. जब अगले वर्ष 1951 में दिल्ली, कोल्हापुर में विराजे, तब गुरुदेव भी उनका साथ निभाने की दृष्टि से वहाँ चले गए थे। इस तरह दो वर्ष तक उनके साथ घनिष्ठ संबंध बना और जब वे अपने संघ के अधिष्ठाता बने, इधर यही दायित्व गुरुदेव जी म. को मिला, तब से लेकर आखिरी समय तक दोनों महापुरुषों में आत्मीयता बनी रही। दोनों एक-दूसरे की रीति-नीति के समर्थक और पोषक रहे। एक दूसरे के निर्णयों को भी मान्य करते रहे।

सन् 1988 के प्रारम्भ में पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. सोनीपत में विराजमान थे। उन्हें ज्ञात हुआ कि आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. के वरिष्ठ शिष्य श्री शान्तिमुनि जी म.सा. पधार रहे हैं। घुटनों के दर्द को भुला शिष्यों को साथ लिया और दूर तक स्वागत करने पहुँच गए। किसी भी संघ में ये प्रथा नहीं होने से भी श्री शान्तिमुनि जी म.सा. सहित सब मुनियों के लिए अद्वितीय घटना थी। अत: सब भौचक्के रह गए। कहने लगे 'आप आगे क्यों पधारे'? तब गुरुदेव जी म. ने अपनी विचारधारा स्पष्ट करते हुए बताया कि आपका स्वागत करके मैं आपके आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. का स्वागत कर रहा हूँ। आप विशाल परिवार के प्रतिनिधि बनकर आए हो अत: सकल परिवार को मैं अपना मानता हूँ। कई दिनों तक उनका सोनीपत में विराजना रहा। बड़ी गहरी अंतरंगता बनी रही। दूरियों का नामोनिशां नहीं रहा। जहाँ दिलों में उदारता हो फिर दूरियाँ रहती ही कहाँ हैं। श्री शान्तिमुनि जी म.सा. उन पलों को कभी भूल नहीं पाते। उनके स्मृति कोष में वो पल अमूल्य निधि के रूप में सुरक्षित हैं।

शायद कुछ लोग ये भी सोच सकते हैं कि अपने अनुयायियों को कट्टर बनाए बगैर अपनी सम्प्रदाय की सुरक्षा नहीं हो पाती। लोग अपनी परम्पराओं को छोड़ अन्य परम्पराओं की ओर फिसल जाते हैं। अपनी मान्यताओं का ह्रास होने का खतरा हो जाता है। इस भय की भावना से ग्रस्त होने पर साधु समाज अपने भक्तों में कट्टरता के संस्कार डालना शुरू कर देता है। कहीं हमारे अनुयायी दूसरों के सम्पर्क में आकर उन जैसे न बन जाएं। इस असुरक्षा की भावना ने बाड़े बंदियों को जन्म दिया है। जबकि गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म.सा. इस तर्क से कम सहमत थे। उनका विचार था यदि आपका आचार-विचार श्रेष्ठ है तो सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति का आपसे प्रभावित होना भी संभव है, वह आपके साँचे में ढल सकता है; बजाय इसके कि वह आपको बदल डाले। यह एक सार्वभौम सत्य है कि सैंकड़ों अजैन बन्धु जैन बन्धुओं के सम्पर्क में आ जैनत्व के संस्कारों में रूपान्तरित हुए थे। जबकि उनके साँचे में ढलने वाले जैन बन्धु कम थे। गुरुदेव जी म.सा. ने विशुद्ध धार्मिकता का प्रसार किया न कि भयभीत मानसिकता वाली धार्मिकता का। उनको मानने वाले स्थानकवासी श्रावक-श्राविकाएं बेशक भाईचारे के नाते या अपनी कामनाओं के वशीभूत होकर जैन सनातन मंदिरों में, तीर्थों पर जाते रहे, पर उन्होंने कभी भी अपने क्षेत्रों में मंदिरों का निर्माण नहीं किया। जबकि मारवाड़ मेवाड़ के विशाल क्षेत्रों में स्थानकवासी जैन बन्धु मंदिरों का धड़ाधड़ निर्माण करवा रहे हैं। नाकोड़ा भैरों के मंदिरों की शृंखला उत्तर भारत के सरल क्षेत्रों की बजाय राजस्थान के ज्ञान क्रिया बहुल इलाकों में हुई है। इससे स्पष्ट हो रहा है कि गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. की असांप्रदायिक दृष्टि संप्रदाय सुरक्षा का ज्यादा कारगर

उपाय है, न कि कट्टरतावादी विचारधारा।

गुरुदेव जी म.सा. ने सबसे इतर प्रान्तों से आने वाले साधु-साध्वियों को सदा सम्मान दिया। भले ही आगन्तुक मुनिवर्ग सम्प्रदायवाद का पोषक हो या अपोषक उन्होंने अपने शिष्यों के परिवार जनों को भी अन्य संघों में जाने से या दीक्षित होने से नहीं रोका। अन्यथा ऐसी घटनाएं कभी-कभी कटुताओं को जन्म दे देती हैं। उन्होंने कटुताएं घटाई थी बढ़ाई नहीं उन्हें ये चिन्ता नहीं थी कि मेरे निकटवर्ती अन्यत्र जा रहे हैं या मेरा अनुयायी वर्ग कम हो जाऐगा। इतनी छोटी सोच उनकी होती तो वे भी संप्रदायवादी संतों में से एक होते, पर नहीं, वे उनसे बिल्कुल अलग और उनसे बहुत ऊपर थे।

यहाँ ये नहीं समझना चाहिए कि पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शनलालजी म.सा. असम्प्रदायिकता उदारता के हिमायती होकर अनुशासनहीनता, चारित्रभ्रष्टता को बढ़ावा देते थे। उन्होंने कभी भी संयमविरोधियों का साथ नहीं दिया। जो सन्त या संघ स्वनिर्मित समाचारी का तिरस्कार करते हैं, उनको कभी प्रश्रय नहीं दिया, गले नहीं लगाया। जर, जोरु, जमीन की गिरफ्त में रहने वाले तथाकथित गुरुओं को सन्त-महन्तों को उन्होंने खुलकर लताड़ा। मुनिवेष धारण करके जो सुविधाभोगी और परिग्रहग्रस्त हो जाते हैं ऐसे तथाकथित गुरुओं को मानने वालों के लिए वे अच्छे कठोर शब्दों का प्रयोग करते थे। वे कहते थे तुम्हारा ये सिर यों ही किसी जगह नहीं झुकना चाहिए। वे संयम मर्यादाओं के संरक्षक थे। हर मोड़ पर समाज को बचाते रहे। उनका इतना अच्छा प्रभाव था कि उनके निकट आने वाला अधिकांश जैन समाज असंयमी व्यवस्थाओं को नकारने में अग्रणी रहा है।

संयम के लिए उनकी निष्ठा को देखकर ही समग्र उत्तरभारत उनका मुरीद रहा है। उन्होंने गाँव-गाँव, कस्बा-कस्बा, नगर-नगर घूमकर धर्मध्यान का बिगुल बजाया था। दिल्ली, यू.पी., हरियाणा तथा पंजाब के समृद्ध कुलीन परिवारों के बालकों को वैराग्यभाव से भरपूर कर दीक्षा दी। लाखों युवकों की जिन्दगी को जुआ, मांस, अण्डा, मद्यपान आदि से बचाकर उनके जीवन में सुख, संपन्नता का संचार किया। उनकी महान जिन्दगी का अन्तिम पड़ाव दिल्ली शालीमार बाग में हुआ। 25 अप्रैल 1999 को वे इस धरा से विमुक्त हो गए। तब से लेकर आज तक उत्तर भारत उनकी यादों में डूबा ही रहता है। उनकी संयम प्रधान जीवनशैली उदारता पूर्ण प्ररूपणाएं आज भी अप्रासंगिक नहीं हुई हैं।

आज भी जबकि उन्हें धराधाम से गए हुए 23 वर्ष हो चुके हैं, उत्तरभारत एक ही व्यवस्था में जी रहा है। यहाँ किसी संप्रदाय ने एस.एस. जैन सभा के समानान्तर स्वतन्त्र स्थानकों का निर्माण नहीं किया। जबकि उत्तर भारत से बाहर उन्हीं सांप्रदायिक शक्तियों ने अपनी पृथक् स्थानकें बनाली, हैड ऑफिस बना लिए, घरों के बंटवारे कर दिए, सन्तों की घेरेबन्दी कर ली। उत्तर भारत में एक ही स्थानक में किसी वर्ष गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म.सा. के सन्तों का चातुर्मास होता है तो अन्य वर्ष में श्रमणसंघीय मुनियों का फिर किसी और वर्ष में राजस्थानी साधुओं का इस समन्वित समरसता के पीछे गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म.सा. का बहुत बड़ा हाथ है। आज आवश्यकता है कि उत्तरभारत उनकी इस विरासत को संभाल कर रखे तथा उत्तरभारत से बाहर का इलाका कुछ सबक सीखे।

आज का युवा वर्ग भी बहुलतया इस दृष्टिकोण का हिमायती है। उन्हें आपसी प्रेमभाव के प्रत्यक्ष उदाहरणों की जरूरत है। वे सम्प्रदायवाद के विभाजक रूप से उकताते जा रहे हैं। उनकी श्रद्धा की सुरक्षा के लिए भी आओ, गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म.सा. के दृष्टिकोण को सम्यक्तया समझें और अपनाएं।

**-जयमुनि (गुरु सुदर्शन संघ के बहुश्रुत श्री जयमुनि जी म.सा)**

# धैर्य की देवी दमयन्ती

*गतांक 15-16 मार्च 2022 से आगे...*

''बेटी! जब से तुम्हारे वनवास का समाचार सुना और तुम्हारी कहीं खोज-खबर नहीं मिली तब से तो उनका बड़ा बुरा हाल है। रात-दिन तुम्हारी चिन्ता में डूबे रहते हैं।'' -ब्राह्मण ने स्नेह से गद्‌गद् होकर कहा।

दमयंती सकुचाती हुई इधर-उधर देखने लगी कि कहीं कोई सुन तो नहीं रहा है। उसने झट से बात बदली- ''हाँ, हाँ, बाबाजी! आप भोजन तो कीजिए।''

माता-पिता की चिन्ता के समाचारों से दमयंती का हृदय बेचैन हो गया। वह सोचने लगी- ''अब क्या करना चाहिए, कैसे कुण्डिनपुर पहुँचू?'' तभी देखा कि रानी चन्द्रयशा दौड़ती हुई उसकी ओर आ रही है- ''बेटी दमयंती! मुझे माफ कर दो। तुमने मुझसे यह क्यों छिपाया?'' कहती-कहती रानी ने दमयंती को गले से लिपटा लिया। दमयंती अवाक्-सी रह गई। ब्राह्मण की बातचीत हवा में तैरती कैसे उसके कानों तक पहुँच गई। वह झट से मौसी के चरणों में गिरी और आँसुओं से उसे भिगो दिया।

''बेटी! तुमने मुझे अपना परिचय क्यों नहीं दिया? क्या मैं इतनी पराई हो गई? बड़ा अनर्थ हुआ मुझसे! दासी समझकर मैंने कितने कष्ट दिए हैं तुझे? मुझे माफ कर देना।''

दमयंती ने धीरज के साथ कहा- ''मौसी! पति की कुछ खबर न हो और मैं राजमहलों में आनन्द के साथ रहूँ, क्या यह उचित होता? मैंने इसीलिए अपने को छिपाया...।''

चन्द्रयशा ने बार-बार उसे छाती से लगाया- ''बेटी! चिन्ता नहीं करो। राजा नल की भी खोज हो रही है। तुम्हारी खोज में ही कुण्डिनपुर से ये विप्रदेव यहाँ आए हैं। अब चिन्ता न करो। नल राजा का भी शीघ्र ही पता मिल जाएगा। समझो, अब रात बीत गई, प्रभात होने वाला है। सौभाग्य का सूर्य प्रकाश मण्डल में चमकने वाला है।'' रानी पूरे सम्मान के साथ दमयंती को अपने महलों में ले आई और बड़े प्रेम के साथ रखा। कुछ दिन बाद दमयंती कुण्डिनपुर चली आई। माता-पिता की आधी चिन्ता तो कम हो गई, पर राजा नल का अब तक कोई भी समाचार कहीं से नहीं मिल पा रहा था।

कुछ दिन बीते। एक दिन सुंसुमारपुर नगर का एक व्यापारी कुण्डिनपुर आया। राजा भीम ने अपने हजारों सेवकों और दूतों को चारों ओर भेजा था, पर कहीं से कोई खबर नहीं आई। नगर में आने-जाने वाले प्रत्येक प्रवासी और व्यापारी से राजा भीम 'नल' के विषय में पूछते रहते। सुंसुमारपुर का व्यापारी जब राजसभा में पहुँचा तो भीम ने उससे भी 'नल' के गुणों की चर्चा करते हुए पूछा। व्यापारी ने बताया- ''महाराज! नल राजा का तो कुछ पता नहीं, पर आप नल राजा की जिन विशेषताओं की चर्चा कर रहे हैं वे सब विशेषताएँ हमारे महाराज के सेवक कुब्ज महाराज में हैं। वे सूर्यपाक रसवती जानते हैं और गजदमनी विद्या में भी कुशल हैं। एक बार तो उन्होंने मदोन्मत्त हाथी के उपद्रव से नगर की रक्षा भी की थी। वे कहते हैं कि किसी समय राजा नल के रसोइये थे और उन्हीं से ये विद्याएँ सीखी हैं।''

राजा भीम के पास ही बैठी दमयंती ने यह सुना तो उसके समूचे शरीर में बिजली-सी दौड़ गई। वह चौंककर बोल पड़ी- ''पिताजी! हों न हों, कूबड़े के रूप में वही हैं महाराज नल! उनके सिवाय इस भारतवर्ष में इन विद्याओं का ज्ञाता कोई नहीं है और किसी रसोइये को आज तक उन्होंने ये विद्याएँ नहीं सिखाई है। मेरा हृदय कहता है कि हमें पता लग चुका है, अब जल्दी से जल्दी उनके पास दूत

भेजना चाहिए। किसी कारणवश उन्होंने कूबड़े का रूप धारण किया है, किन्तु समय पर वे अवश्य ही अपने को प्रकट कर देंगे।''

दमयंती की बात उसकी माँ पुष्पवती को भी जँच गई। तभी राज्य के विश्वस्त मंत्री ने कहा- ''महाराज! हो सकता है कि हमारा भाग्य सितारा शीघ्र ही चमक उठे और हम नल महाराज को पा लें, किन्तु अनुमान से कोई निर्णय नहीं हो सकता। हमें एक गुप्त परीक्षा और करनी चाहिए।''

राजा भीम ने कुछ आतुरतापूर्वक कहा- ''हाँ, जरूर! आप भी बताइये परीक्षा कैसे करें?''

मंत्री ने कहा- ''राजा नल अश्वविद्या में भी बड़े निपुण हैं। एक रात्रि में वे सैंकड़ों योजन चल सकते हैं। अत: दधिपर्ण के पास दमयंती के पुनर्विवाह का निमंत्रण भेजना चाहिए, किन्तु यह निमंत्रण निश्चित तिथि से एक दिन पहले ही वहाँ पहुँचना चाहिए। यदि वह कुब्ज महाराज स्वयं नल होंगे तो किसी भी प्रकार इस प्रसंग को सहन नहीं कर पाएँगे और अपनी अश्वविद्या के बल पर दधिपर्ण को लेकर एक रात्रि में ही यहाँ पहुँच जाएँगे। तब हमें दृढ़ विश्वास हो जाएगा कि वह रसोइया ही राजा नल हैं।''

वृद्ध मंत्री की युक्ति सबके गले उतर गई। राजा भीम ने उसी प्रकार की तैयारी की और एक दूत को सुंसुमारपुर भेजा। दूत राजा दधिपर्ण के पास पत्रिका लेकर पहुँचा। राजा ने पत्रिका पढ़ी- ''अयोध्या नरेश नल वनवास को निकल गए और बहुत खोजबीन करने पर भी आज तक उनका कोई पता नहीं चला। अत: अब दमयंती का पुनर्विवाह करने का निश्चय किया गया है। इस स्वयंवर में आपको साग्रह आमंत्रित करते हैं।

दधिपर्ण कुछ क्षण अवाक्-सा रह गया। क्या दमयंती पुनर्विवाह करेगी? और सचमुच मेरी बहुत पुरानी स्नेहाकांक्षा अब सफल हो जाएगी? उसका हृदय मानों उछल पड़ा- ''बस! अब तो दमयंती मुझे वरण करेगी ही! अवश्य करेगी। मुझ-सा धीर-वीर अन्य राजा है भी कौन?'' किन्तु विवाह की तिथि पर नजर पड़ते ही दधिपर्ण की खुशी गायब हो गई। उसका चेहरा कुछ मलिन हो गया। उसने दूत से कहा- ''क्या यह मजाक कर रहे हो? कल का स्वयंवर है और आज निमंत्रण! यह सैंकड़ों योजन की दूरी तय करके एक रात में वहाँ पहुँचना क्या सम्भव है?''

दूत ने क्षमा माँग कर विनम्रतापूर्वक कहा- ''महाराज! वहाँ से तो समय पर ही चला था, पर मार्ग में चलते-चलते विलम्ब हो गया। क्षमा करें। आप जैसे धीर-वीर राजाओं के लिए कुछ भी तो असम्भव नहीं है।''

दधिपर्ण ने इधर-उधर दृष्टि दौड़ाते हुए सामने बैठे कुब्जराज की ओर देखा, वह बड़े ध्यान से सब सुन रहा था। ''दमयंती का स्वयंवर!'' सुनते ही उसके हृदय में भूचाल उठ गया। उसका रोम-रोम जैसे जल उठा। ''क्या मेरे जीते-जी दमयंती पुनर्विवाह करेगी? असम्भव! सूर्य प्रकाश फैलाना भूल सकता है, मेघ जल बरसाना छोड़ सकते हैं, किन्तु दमयंती अपना धर्म नहीं छोड़ सकती! तो फिर क्या यह प्रपंच है? कोई छल है?'' नल का हृदय बेचैन हो उठा।

अवसर देखकर उसने तपाक से राजा दधिपर्ण से कहा- ''महाराज! एक दिन रहा तो क्या, आप अवश्य ही वहाँ पहुँचेंगे। मनुष्य के लिए असम्भव कुछ नहीं है। मैं कल प्रात: सूर्योदय होने से पहले-पहले आपको कुण्डिनपुन की भूमि पर पहुँचा सकता हूँ। जरा मेरी अश्व-विद्या का चमत्कार तो देखिए।''

राजा के चेहरे पर एक अपूर्व मुस्कान चमक उठी- ''कुब्जराज! क्या कहते हो? क्या एक रात्रि में इतनी लम्बी मंजिल तय हो सकती है? तुम रथ लेकर चल सकते हो?''

''हाँ महाराज! अवश्य।'' -कुब्ज ने सीना फुलाकर कहा और दधिपर्ण ने निमंत्रण स्वीकार कर तैयार होने का आदेश दिया। कुछ ही क्षणों में रथ तैयार हो गया। दधिपर्ण रथ में बैठा और घोड़े हवा से बातें करने लगे। पवन वेग से

उड़ता हुआ रथ नियत समय से पूर्व ही कुण्डिनपुर के राजद्वार पर पहुँच गया।

राजा भीम पूर्व तैयारी के अनुसार दधिपर्ण के स्वागत के लिए नगर द्वार पर आए। नगर में स्वयंवर की कोई चहल-पहल नहीं देखकर दधिपर्ण को आश्चर्य हुआ। कुछ पूछना ठीक नहीं समझकर वह सीधे राजमहल में अपने आवास स्थान की ओर चले गए।

राजा भीम ने कूबड़े सारथी को गौर से देखा तो उनका अन्तर्हृदय पुकार उठा- ''यही है नल! फिर भी राजा भीम ने मौका देखकर कूबड़े को राजमहल में बुलाया। सूर्यपाक रसवती बनवाई, जिसे राजा नल के सिवाय कोई नहीं जानता था। अब तो सभी परिवारजनों को दृढ़विश्वास हो गया कि यही राजा नल है, जो कूबड़े का रूप बनाकर अपने को छिपाए हुए हैं। भीम ने दमयंती को बुलाया। कुब्ज ने जैसे ही दमयंती को उदास, थकी हुई, कुम्हलाई हुई-सी देखी तो उसका रोम-रोम एक बार सिहर उठा। कुब्ज का यह रोमांच भीम से छिपा हुआ नहीं रहा। दमयंती ने विनम्रतापूर्वक प्रणाम किया, कुब्ज के चरणों में सिर रखा तो वह सहम कर कुछ पीछे हटने लगा। भीम के संकेत से सब लोग दूर हट गए। एकान्त पाकर दमयंती ने करुणस्वर में कहा- ''अब बहुत हो गया देव! इस अबला को अब अधिक मत छलो। कितना समय बीत गया शोक और चिन्ता में डूबे-डूबे! मुझे तो यह जीवन शोक का महासागर ही लगने लगा है। मुझे भीषण वन में अकेली सोई हुई छोड़कर जाने में भी आप नहीं सकुचाए। इतने दिन कहाँ-कहाँ की ठोकरें खाई, कुछ भी सुध नहीं ली! खैर जाने दीजिए। पर आज अब मेरे सामने आप आ गए हैं, अब मुझे मत तरसाइए। अपने को प्रकट कीजिए। देखिए आपके विरह में आपके सब स्वजन कितने कल्प रहे हैं। अपने स्वजनों का और अपनी सजनी (पत्नी) का कष्ट दूर करने के लिए अब आप अपने मूल में प्रकट होइए।'' - कहते-कहते दमयंती का गला भर आया।

''दमयंती! तुम भूल रही हो! मैं तो राजा दधिपर्ण का रसोइया हूँ। नल के भ्रम में धोखा खा रही हो।'' नल ने अपने को छिपाने की चेष्टा करते हुए कहा।

पर दमयंती अब इस धोखे में नहीं आ सकती थी। उसकी आँखें, मन, हृदय और आत्मा सब एक साथ पुकार रहे थे- ''यही है नल!'' दमयंती के स्नेह-विह्वल व्यवहार को आखिर नल धोखा नहीं दे सका। उन्होंने पिता देव द्वारा दी हुई रूपपरिवर्तिनी विद्या को याद किया और तत्क्षण अपने पूर्व रूप में प्रकट हो गए। यह देखकर दमयंती का हृदय मारे खुशी से उछल उठा। तभी राजा भीम, रानी पुष्पवती आदि स्वजन एकत्रित हुए। नल को देखकर सबकी आत्मा पुलक उठी। चारों ओर खुशी की लहर दौड़ गई। राजा दधिपर्ण को यह समाचार मिला तो वह भी दौड़ा-दौड़ा आया और नल से क्षमा माँगने लगा। कुण्डिनपुर में जब यह खबर पहुँची तो पूरी नगरी हर्ष से नाच उठी। अयोध्या में नल के छोटे भाई कुबेर को भी यह संवाद मिला। उसके अत्याचारों से प्रजाजन उत्पीड़ित हो उठे थे। स्वयं कुबेर भी अपनी दुर्बुद्धि पर पछताता रहता। वह भी अब पवनवेग से दौड़कर कुण्डिनपुर आया। नल और दमयंती के चरणों में गिरकर क्षमा माँगी। नल ने उसे गले लगाया। भ्रातृ-प्रेम का यह मनभावन दृश्य सबको मुग्ध कर गया। कुबेर के आग्रह पर नल पुनः अयोध्या आए। अयोध्यावासी नल को देखकर नाच उठे। नल आनन्द से प्रजा का पालन करने लगे।

कुछ दिनों बाद दमयंती के एक पुत्र हुआ। बड़े समारोह के साथ उसका नाम 'पुष्कर' रखा गया। पुष्कर के युवा होने पर नल ने उसे राज्यभार सौंपा और स्वयं दमयंती के साथ सांसारिक सुखों से मुँह मोड़कर आत्मसाधना के पथ पर चल पड़े।

दमयंती के सतीत्व का अपूर्व तेज, कष्टों में साहस और धैर्य आज भी हमारे हृदय में उच्च प्रेरणाएँ जगा रहा है। धन्य है धैर्य की देवी महासती दमयंती!

**साभार- जैन कथामाला-1**

**-क्रमशः**

# समकित के 67 बोल

गतांक 15-16 मार्च 2022 से आगे...

संकलनकर्ता–शकुन्तला लोढ़ा, ब्यावर

**3. व्यापन्न वर्जन–** व्यापन्न जिसने सम्यक्त्व को छोड़ दिया है। उनकी संगति नहीं करे जो व्यक्ति धर्म को छोड़कर गलत मार्ग पर चला जाता है। वह व्यक्ति धर्म का ज्यादा विरोध करता है जितना कि जो व्यक्ति शुरु से अधार्मिक होता है वह करता है। पर अपनी बात को सही साबित करने की कोशिश करता है व धर्म के विरूद्ध बोलता है अत: ऐसे लोगों की संगति नहीं करनी है। व्यापन्नमति अर्थात् जिसने सुदेव, सुगुरु, सुधर्म की श्रद्धा को प्राप्त किया, लेकिन आगे चलकर मोहदशा के कारण या संसार के भटकाव के कारण या और किसी कारण से प्राप्त सम्यक्त्व को या सही श्रद्धा को जिन्होंने छोड़ दिया, वमन कर दिया उनकी संगति नहीं करें क्योंकि जिन्होंने स्वयं त्याग कर दिया है, शुद्ध सम्यक्त्व को छोड़ दिया है यदि उनकी संगति की जाए तो निश्चित है कि हमारी श्रद्धा भी विकृत हो जाएगी। इसलिए संगति का बहुत बड़ा महत्व है। अच्छी संगति में बैठने से, नवतत्त्व के सुज्ञाता और सुदृष्टा का सान्निध्य प्राप्त करने से परमार्थ का परिचय होता है, श्रद्धा का विकास होता है और सम्यकज्ञान, दर्शन का विकास होकर के चारित्र की तरफ कदम बढ़ते हैं लेकिन अगर व्यापन्नमति है जिन्होंने सम्यक्त्व का त्याग किया है, शुद्ध आचरण का त्याग कर दिया है उनकी संगति की जाएगी तो हमारे पतन के ही भाव जागेंगे। इसलिए कहा गया है कि जिन्होंने सम्यक्त्व का वमन कर दिया उनकी संगति नहीं करें। जैसे लहसुन खाने से मुख से बदबू आती है इसी प्रकार इनकी संगति करने से सम्यक्त्व मलिन होता है।

**जमाली की कथा–** ब्राह्मण-कुण्ड के पश्चिम में क्षत्रिय कुण्ड नगर था। वहाँ जमाली नाम का क्षत्रिय कुमार रहता था। उनका भगवान श्री महावीर स्वामी की पुत्री से विवाह हुआ। वह सुखभोग करता हुआ जीवन व्यतीत कर रहा था। एक समय वहाँ भगवान महावीर पधारे। भगवान का धर्मोपदेश सुनकर जमाली प्रभावित हुए और माता-पिता से दीक्षा की अनुमति मांगी। अनुमति प्राप्त होने पर 500 क्षत्रिय कुमारों के साथ दीक्षा ग्रहण की। जमाली की पत्नी प्रियदर्शना ने 1000 महिलाओं के साथ दीक्षा ग्रहण की और चन्दनबाला की शिष्या हुई।

एक दिन जमाली अणगार ने भगवान को वन्दना करके निवेदन किया- ''भगवन्! यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं अपने 500 श्रमणों के साथ पृथक् विहार कर ग्रामानुग्राम विचरना चाहता हूँ।'' भगवान ने जमाली अणगार की मांग स्वीकार नहीं की और मौन रहे। भगवान के मौन को भी जमाली ने अनुमति मानी और अपने 500 साधुओं के साथ विहार कर चल दिए। विहार कर श्रावस्ती नगरी के कोष्ठक उद्यान में पधारे। श्रमण पर्याय में अरस-विरस-रूक्ष-तुच्छ और असमय तथा अपूर्ण आहारादि तथा शीत-तापादि कष्टों व तपस्या से उनका शरीर रोग का घर बन गया। उन्हें तीव्र दाह-ज्वर हो गया। उन्होंने श्रमणों से कहा- ''मेरे लिए बिछौना बिछाओ''। श्रमण आज्ञा शिरोधार्य करके विधिपूर्वक प्रमार्जन करके संथारा बिछाने लगे। जमाली अणगार ने संतों से पूछा- ''देवानुप्रिय! मेरे लिए संथारा बिछा दिया या बिछाया जा रहा है''। संतों ने कहा- ''देवानुप्रिय! अभी बिछाया नहीं, बिछाया जा रहा है,'' श्रमणों की बात सुनकर जमाली अणगार को विचार आया कि श्रमण भगवान महावीर का कथन मिथ्या है। जो चलायमान है, वह चलित है। मैं यहाँ प्रत्यक्ष देख रहा हूँ कि मेरे लिए शय्या-संस्तारक बिछाया जा रहा है, अभी बिछा नहीं है। जब तक बिछाने की क्रिया चल रही है तब तक वह 'बिछाया' ऐसा नहीं कहा जा सकता। इसलिए भगवान का कथन असत्य है, मिथ्या है। जमाली की बात जिन श्रमणों को असत्य लगी वे उसे छोड़कर भगवान के पास चले गए और शेष जमाली के साथ रहे। साध्वी प्रियदर्शना भी अज्ञान व मोह के उदय से जमाली की समर्थक होकर उसके पक्ष में चली गई। भगवान महावीर प्रभु की बात पर जमाली ने श्रद्धा नहीं की और चला गया तथा कई प्रकार

की मिथ्या प्ररूपणा करता हुआ वह अन्य जीवों को भी भ्रमित करता रहा। एक बार जमाली और प्रियदर्शना अपने शिष्यों सहित श्रावस्ती नगरी में पधारे। ढंक ऋद्धि सम्पन्न श्रमणोपासक था। ढंक ने सोचा कि किसी युक्ति से प्रियदर्शना साध्वी का भ्रम दूर करूँ। उसने चुपके से एक अंगारा प्रियदर्शना के वस्त्र पर रख दिया। प्रियदर्शना बोली- ''ढंक! तुमारे प्रमाद से मेरा वस्त्र जल गया''। तत्काल ढंक बोला- ''आपके मत से वस्त्र जला नहीं, जल रहा है। भगवान के मत से वस्त्र जला है, आपके मत से नहीं।'' प्रियदर्शना का भ्रम मिटा। उन्हें पश्चात्ताप हुआ और प्रायश्चित्त लेकर शुद्ध हुई। यह प्रसंग जमाली के साधुओं के जानने में आया तो वे भी भगवान के पास चले गए और जमाली अकेला रह गया। साध्वी प्रियदर्शना ने जमाली को प्रतिबोध कराया, परन्तु वह समझा नहीं। उसने बहुत तपस्या की, परन्तु संसार घटाने की जगह और बढ़ा लिया। हमें भी यदि अपने सम्यक्त्व को सुरक्षित रखना है तो जिन्होंने सम्यक्त्व का वमन कर दिया है ऐसे व्यक्तियों की संगति नहीं करें।

**4. कुदर्शन विवर्जन-** कुतीर्थियों की संगति से दूर रहें। कुदर्शन अर्थात् मिथ्या दर्शन मतलब ऐसी मान्यताएँ, ऐसी धारणाएँ, धर्म के नाम से ऐसी व्यवस्थाएँ, जिनमें हिंसा आदि में धर्म माना जाता है, जहाँ धर्म के नाम से हिंसा को स्वीकार किया जाता है, जहाँ कर्म सिद्धांत पर विश्वास न करके और भ्रामक मिथ्या धारणाओं को जीवन का आधार बनाया जाता है जैसे स्नान करने से पाप धुल जाते हैं, पशुबलि चढ़ाने से स्वर्ग मिलता है या ऐसी अनेक प्रकार की मिथ्या धारणाएँ जहाँ हिंसा को, पाप को, धर्म के नाम से प्रोत्साहित किया जाता है ऐसी मान्यताओं को कुतीर्थियों की मान्यताएँ कहा जाता है। ऐसे कुतीर्थियों की संगति से दूर रहे, उनकी संगति न करे जब तक हमारा मन परिपक्व नहीं हो जाता क्योंकि उससे पहले हमारा मन अन्य बातों से प्रभावित हो सकता है, और हम भटक सकते हैं।

उत्तम बुद्धि वाले जीव यानी (परिपक्व व्यक्ति) को मिथ्यात्व की संगति का असर नहीं होता है जैसे सर्प के मणि में सर्प के दाँत का विष नहीं लगता है बल्कि वह मणि विष को उतार देती है अर्थात् उस पर संगति का असर नहीं होता है। बल्कि वह कुतीर्थि के जीवन को बदल देता है उसे सही मार्ग पर लेकर आ जाता है। वाद-विवाद करके उसे धर्म में स्थापित कर सकता है। शर्त है कि पहले स्वयं इतना दृढ़ और परिपक्व हो लेकिन जो व्यक्ति परिपक्व नहीं है दृढ़ता की कमी है प्रारंभिक दशा में है तो पहले उसे अपनी सुरक्षा करनी चाहिए। यदि खुद सुरक्षित नहीं है और दूसरों को समझाने के लिए जाएगा तो हो सकता है कि वह उसे कुछ समझा नहीं पाए और उल्टा स्वयं की ही धारणाओं में विकृति आ जाए। वस्त्र को जैसा रंग लगाते हैं वैसे ही रंग में रंग जाता है उसी प्रकार वह मनुष्य (अपरिपक्व अवस्था वाला) जहाँ जाता है। (मिथ्यात्वी के पास, कुतीर्थी के पास) उसी प्रकार का हो जाता है।

**'गिरीशुक और पुष्पशुक की कथा'-** कादम्बरी की अटवी में वटवृक्ष के ऊपर दो तोते थे। दोनों सहोदर थे। उनमें से एक बच्चे को भील ले गया और उसे पर्वत की पाली में रखा, इसलिए इसे गिरीशुक कहते थे और दूसरे बच्चे को तापस ले गया और उसे पुष्पवाड़ी में रखा, इसलिए उसे पुष्पशुक कहते थे। एक दिन बसंतपुर का राजा जो घोड़े पर सवार था रास्ता भटक जाने से जंगल में पहुँच गया था। उस राजा को देखकर भीलों के द्वारा पाला हुआ तोता बोला- ''हे भीलों होशियार हो जाओ, कोई असवार सुन्दर आभूषण से अलंकृत होकर अकेला जा रहा है। इसलिए उसको मारो, लूटो, काटो।'' उस वचन को सुनकर राजा भयभीत हो गया और घोड़े को तेज चलाकर आगे तापस के आश्रम में आया। उसे दूर से आता हुआ देखकर पुष्पशुक कहने लगा- ''हे स्वामी! कोई एक सुन्दर असवार अतिथि अपने पास आ रहा है। उसको आसन दो, खाने-पीने और आराम कराने की तैयारी करो।'' यह सुनकर तापस सावचेत हुए और राजा को आसन देकर उसके आगे वनफल आदि रखे। राजा वनफल खाकर स्वस्थ हो गया। दोनों तोतों के बोलने में अन्तर देखकर राजा ने आश्चर्यचकित होकर तापस से पूछा कि दोनों तोते समान दिखाई दे रहे हैं, फिर भी गुण-

दोष में अन्तर कैसे? यह सुनकर पुष्पशुक कहने लगा- ''राजन्! हमारे माता-पिता एक हैं, लेकिन जैसी संगति होती है वैसी बुद्धि हो जाती है। ऐसे वचन सुनकर राजा को हर्ष हुआ। इतने में राजा का लश्कर भी वहाँ पहुँच गया। राजा तापस से आज्ञा लेकर स्वयं की नगरी में आया और संगति के कारण जो गुण-दोष की प्राप्ति हुई उसकी प्रशंसा करने लगा। हमें भी कुतीर्थियों की संगति से बचना चाहिए, क्योंकि हम जैसी संगति में रहेंगे हमारे विचार भी वैसे ही होंगे। सम्यक्त्व को सुरक्षित रखने के लिए यह अतिआवश्यक है।

प्रथम दो बोलों से सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है। प्राप्त सम्यक्त्व में निखार आता है। सम्यक्त्व मजबूत होता है। क्योंकि सम्यक्त्वी का सान्निध्य रखने से श्रद्धा मजबूत होती है। जब ज्ञानियों के सान्निध्य में बैठते हैं तो ज्ञान सुदृढ़ होता है। श्रद्धा सुदृढ़ होती है। एक तरह से ये दोनों बोल प्रॉडिक्टिव है जो सम्यक्त्व प्रॉडक्शन के लिए हैं, लेकिन तीसरा और चौथा बोल सुरक्षा के लिए है अर्थात् प्रोटेक्टिव के लिए है। एक बार महापुरुषों का सान्निध्य प्राप्त किया, सम्यक्त्व प्राप्त हो गया। लेकिन बाद में हमने उसके चारों तरफ सुरक्षा चक्र का घेरा नहीं रखा तो प्राप्त सम्यक्त्व का पतन होते भी देर नहीं लगेगी।

**तमेव सच्चं णीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं**

जो जिनेश्वर देवों ने कहा है वही सत्य है निशंक है।

जैसे पर्वत के ऊपर वर्षा होने पर पानी जल्दी सूख जाता है अत: उस पर कोई भी फसल पैदा नहीं होती है दूसरी तरफ मालवा की स्निग्ध चिकनी भूमि में वर्षा होती है तो वहाँ पर पानी जल्दी नहीं सूखता है और वहाँ पर नाना प्रकार की अच्छी-अच्छी फसलें पैदा होती हैं। उसी प्रकार हमें भी नव तत्त्व के स्वरूप को जानने के लिए उसको बार-बार श्रवण करना चाहिए, चिंतन-मनन करना चाहिए। पर्वत की भूमि जैसा नहीं अपितु मालवा की भूमि जैसा बनना चाहिए अर्थात् हमें ऐसा अभ्यास बार-बार करते रहना चाहिए और उस ज्ञान को टिकाए रखना चाहिए, जिससे सम्यक्त्व की प्राप्ति हो और उसमें निरंतर वृद्धि होती रहे और हम क्रमश: देशविरति, सर्वविरति, उपशम श्रेणी, क्षपक श्रेणी, केवलज्ञान प्राप्त कर सकें।

-क्रमश:

## पौषध ग्रहण करने के बाद निम्नांकित 12 बातों की शुद्धता रखनी चाहिए।

1. पौषध में अव्रती को सत्कार नहीं देना, आसन नहीं देना, वैय्यावृत्य नहीं करना।
2. शरीर का श्रृँगार जैसे बाल संवारना, दाढ़ी मूंछ संवारना, धोती की पटली जमाना आदि नहीं करना।
3. स्वयं या दूसरे के शरीर का मैल नहीं उतारना।
4. दिन में नींद नहीं लेना तथा रात्रि में दो प्रहर से अधिक नींद नहीं लेना।
5. पूंजनी से पूंजे बिना खाज नहीं खुजलाना।
6. विकथाएँ नहीं करना।
7. चुगली, निंदा, हंसी-मजाक आदि नहीं करना या गप्पे नहीं मारना।
8. व्यापार संबंधी, हिसाब संबंधी बातें नहीं करना या गप्पे नहीं मारना।
9. अपने शरीर को या स्त्री के शरीर को राग दृष्टि से नहीं देखना।
10. गौत्र, जाति, नाते आदि नहीं मिलाना, जैसे आप हमारे अमुक रिश्तेदार हैं आदि कहना।
11. खुले मुँह बोलने वाले तथा जिसके पास सचित्त वस्तु हो, उससे वार्तालाप नहीं करना।
12. रुदन नहीं करना, शोक संताप नहीं करना।

इन बारह बोलों का पालन करने वाला साधक पौषध व्रत का शुद्ध आचरण करता है अन्यथा ये दोष लगते हैं। इन दोषों से अवश्य ही बचना चाहिए।

# जागरुक बनें हम तो हिंसा होगी कम

-विनुषी जैन, इन्दौर

**इस आलेख को पढ़ते समय कृपया अपने हाथ में एक पेन्सिल जरूर रखें, और देखे-देखे हम कितना जागरुक हैं और कितना बनना बाकी है, उपरोक्त जिन विषयों पर आप जागरुक नहीं है कृपया जागे और इस भगवान महावीर जन्म-कल्याणक पर पूर्णतया जागरुक बनने का निर्णय करें।**

क्रं सं. ✔ ✘

1. ..... .....अपने हाथ से मक्खी, मच्छर आदि मारने की दवा नहीं छिड़कना या इलैक्ट्रिक बैट व कोईल आदि नहीं वापरना।
2. ..... ..... गर्भपात नहीं करना व करने की सलाह नहीं देना।
3. ..... ..... जिस होटल, रेस्टोरेन्ट या रेल आदि में माँसाहारी भोजन भी बनता हो, वहाँ का भोजन नहीं करना, ना ही मंगाना।
4. ..... ..... माँसाहारी व्यक्ति के साथ एक प्लेट या एक थाली में नाश्ता या भोजन नहीं करना।
5. ..... ..... कुछ विदेशी चॉकलेट्स जिनमें माँसाहार का भी उपयोग होता है,पर हम बिना देखे ही उनका सेवन कर लेते हैं।
6. ..... ..... सौन्दर्य प्रसाधन कॉस्मेटिक में भी माँस आदि नॉनवेज पदार्थों का उपयोग किया जाता है, पर हम जागरुक नहीं हैं।
7. ..... ..... टैटू बनवाने की कुछ स्याही जानवरों की हड्डियों से बनाई जाती है।
8. ..... ..... कितने ही दिनों के डिब्बा बंद खाद्य पदार्थ, जिनमें जीवों की उत्पत्ति की सम्भावना रहती है, उनका सेवन नहीं करना।
9. ..... ..... जो कपड़े जानवरों की खाल से बनते हैं उनका उपयोग नहीं करना। जैसे- सिल्क एवं लेदर आदि के कपड़े।
10. ..... ..... मनोरंजन हेतु घुड़-सवारी, ऊँट की सवारी नहीं करना या घर में कुत्ता, बिल्ली आदि पशु-पक्षियों को नहीं पालना एवं बिल्लियों व कुत्तों का खाना नहीं खरीदना। जैसे- पेडीग्री।
11. ..... ..... अधिक समय तक कर्मचारी से काम लेकर उसका वेतन नहीं काटना।
12. ..... ..... पक्षी आदि के अण्डे नहीं फोड़ना तथा ऐसी सलाह नहीं देना।

क्रं सं. ✔ ✘

13. ..... ..... जिस पढ़ाई में मेंढ़क आदि जानवरों की चीरफाड़ आदि की जाती है ऐसी पढ़ाई नहीं करना व किसी को प्रेरणा नहीं देना।
14. ..... ..... आत्महत्या नहीं करना व ऐसी सलाह नहीं देना।
15. ..... ..... बिना छाना पानी नहीं पीना।
16. ..... ..... घी, तेल, दूध, दही, पानी, झूठे बर्तन आदि खुले नहीं रखना
17. ..... ..... गर्म-गर्म या अत्यधिक ठण्डा पानी नाली में नहीं बहाना।
18. ..... ..... मधुमक्खी का छत्ता नहीं तोड़ना और जहाँ तक हो सके शहद काम में नहीं लेना।
19. ..... ..... झाड़ू, बुहारी कठोर नहीं रखना, क्योंकि इससे कोमल जीव मरते हैं।
20. ..... ..... विकलेन्द्रिय जीव उत्पन्न न हो ऐसा उपाय करना। उत्पत्ति होने पर उन जीवों को सुरक्षित स्थान में छोड़ना।
21. ..... ..... घोड़े, बैल आदि को शर्त लगाकर नहीं दौड़ाना।
22. ..... ..... शिकार नहीं खेलना।
23. ..... ..... मोबाइल में ऐसे गेम्स नहीं खेलना जिनमें किसी का वध हो रहा हो। जैसे- फ्री फायर असेशियन आदि।
24. ..... ..... तैयार भोजन में ऊपर से स्वाद हेतु नमक नहीं डालना।
25. ..... ..... कुएँ, समुद्र, नदी, तालाब, वाटर पार्क, स्विमिंग पूल आदि में नहाना नहीं।

..... ..... 26.बोटिंग या क्रूज आदि में नहीं बैठना।

27. ..... ..... घर की शोभा के लिए पानी के फव्वारे नहीं लगाना।
28. ..... ..... कपड़े सुखाते वक्त जोर-जोर से झटकना नहीं।
29. ..... ..... जान-बूझकर बरसात में नहाना नहीं।
30. ..... ..... जितना पानी पीना हो उतना ही ग्लास में लेना।
31. ..... ..... होली आदि त्योहारों पर पानी का उपयोग नहीं करना।

क्रं सं. ✔ ✘

32. ..... ..... बाथरूम में पानी का नल चालू करके नहीं रखना।
33. ..... ..... शॉवर से स्नान की जगह बाल्टी का उपयोग कर सकते हैं।
34. ..... ..... गार्डन, घास आदि वनस्पति पर पाँव नहीं रखना।
35. ..... ..... मनोरंजन हेतु बोनफायर, लाईटिंग्स, डेकोरेशन आदि नहीं करना।
36. ..... ..... कचरा, रावण, होलिका आदि नहीं जलाना।
37. ..... ..... बिना कारण फूँक नहीं मारना, ताली नहीं बजाना।
38. ..... ..... खड़े-खड़े या ऊँचाई से कोई वस्तु नहीं गिराना या नहीं फेंकना।
39. ..... ..... वृक्ष, पौधे, फूल आदि को बेवजह नहीं तोड़ना या कष्ट नहीं देना।
40. ..... ..... सचित्त फूल के बुके, फूलमाला आदि का उपयोग नहीं करना।
41. ..... ..... सलाद के डेकोरेशन में पशु-पक्षी आदि का आकार नहीं बनाना।
42. ..... ..... घर में लगाए हुए साग-सब्जी आदि के अलावा बाहर की वनस्पति आदि बिना कारण नहीं तोड़ना।
43. ..... ..... कम दूरी पर जाने के लिए वाहन का उपयोग नहीं करना।
44. ..... ..... कैण्डल लाईट डिनर पार्टी या बार्बेक्यू डिनर नहीं करना।
45. ..... ..... बेली डांस शॉ आदि नहीं देखना।
46. ..... ..... कुव्यसनों का सेवन नहीं करना।
47. ..... ..... छत पर पक्षियों के लिए पानी भरकर रखना चाहिए।
48. ..... ..... अपनों से बड़ों के प्रतिदिन चरणस्पर्श करने व जय जिनेन्द्र बोलना चाहिए।
49. ..... ..... भोजन से पहले सुपात्रदान की भावना भाना।
50. ..... ..... प्रतिदिन तीन मनोरथ का चिन्तन करना।

# पर्व-दिवस की प्रेरणाएँ

-संकलित

भारत देश पर्व और त्योहारों का देश है। प्रत्येक पर्व का अपना इतिहास है। हर एक पर्व के साथ कोई न कोई घटना जुड़ी हुई है। कुछ पर्व महापुरुषों के जीवन से जुड़कर उनके आदर्शों का स्मरण कराते हैं तो कुछ का सम्बन्ध ऋतु परिवर्तन से होता है, तो कुछ पर्व धार्मिक परम्पराओं से जुड़कर जीवन के उदात्त मूल्यों का स्मरण दिलाते हैं। पर्व और त्योहार प्रत्येक व्यक्ति अपनी जातीय परम्पराओं, धार्मिक विश्वासों के आधार पर भाँति-भाँति से मनाते हैं। जैन पर्वों को मनाने की अपनी अलग विशिष्टता, अलग पहचान है। जैन पर्वों के आयोजन में खेलकूद, आमोद-प्रमोद, भोग-विलास, नाच-गान आदि कार्यक्रमों का आयोजन नहीं होता। ये पर्व जीवन में सरलता, सादगी, तप-त्याग, स्वाध्याय, अहिंसा, सत्य, प्रेम, दया, दान, शील, मैत्री आदि भावों के विकास की अन्त: प्रेरणाएँ देते हैं। श्रमणोपासक का प्रस्तुत अंक आपके हाथों में पहुँचेगा तब तक हम ओलीजी तप, महावीर जयन्ती, आचार्य श्री रामलालजी म.सा. का जन्मदिवस आदि पर्व मना चुके होंगे एवं अक्षय तृतीया सम्मुख ही परिलक्षित होगी।

**जैन परम्परा में ओलीजी पर्व** (8 अप्रैल से 16 अप्रैल 2022) का विशेष महत्त्व है। यह पर्व वर्ष में दो बार मनाया जाता है। चैत्र और आसोज माह में सप्तमी से पूर्णिमा तक नौ दिन आयम्बिल तप की साधना की जाती है। **आयम्बिल तप का अर्थ है- दिन में एक ही बार एक ही स्थान पर बैठकर विगय रहित गेहूँ, चावल, मक्का, बाजरा, मूँग, उड़द, तुअर, चना आदि धान्य से निर्मित रोटी, थूली, दलिया, खिचड़ी, खाखरा आदि अचित्त पदार्थ ही ग्रहण करना। आयम्बिल में सभी तरह के विगय, सभी तरह के नमक, मिर्च-मसालों अथवा मिर्च, काली मिर्च, नीबू, हरी सब्जी, फल (फ्रूट), ड्राईफ्रूट, मुखवास, पापड़, चिप्स, कैर, मैथी व दवाई का सेवन वर्जित है।** यह अस्वाद-साधना तप है। इस तप से साधक के जीवन में इन्द्रियासक्ति कम होती है, जिससे कषायिक प्रवृत्ति क्षीण होती है। जीवन में शुभ संस्कार जागृत होते हैं।

**चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म कल्याणक** चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को मनाया जाता है, जो इस वर्ष 14 अप्रैल 2022 को है। समस्त जैन समाज इस पर्व को बड़े हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाता है। विशाल आमसभाओं, प्रभातफेरियों, भक्ति संगीत आदि का आयोजन कर प्रभु महावीर के आदर्शों, उपदेशों, सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अनेकान्त के सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुँचाकर पीड़ित एवं दलित मानवता को ऊँचा उठाने की प्रेरणा दी जाती है। अंडे, माँस, शराब की दुकानें बंद रखी जाती हैं तथा जैन व्यापारी भाई भी अपने व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद रखते हैं।

चैत्र शुक्ला चतुर्दशी तदनुसार दिनांक 15 अप्रैल 2022 को **आचार्य श्री रामलालजी म.सा. का जन्मदिवस** है। आप महान तेजस्वी एवं प्रभावक आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के सुशिष्य हैं। आचार्यश्री ने मुनि प्रवर श्री रामलालजी म.सा. को वि.सं. 2048 फाल्गुन सुदी तीज को बीकानेर में अपने उत्तराधिकारी के रूप में युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। पण्डितरत्न श्री रामलालजी म.सा. संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषाओं के ज्ञाता हैं। आप प्रखर विद्वान्, जन-जन को आध्यात्मिक प्रेरणा देने वाले, सरल, सौम्य, विनय, विवेक, धैर्य, संयममय व्यक्तित्व के धनी हैं। मुनिश्री चतुर्विध संघ के स्नेह और श्रद्धा के पात्र रहे हैं। ''श्रमणोपासक'' के सभी पाठक आपके जन्मदिवस के शुभ प्रसंग पर हार्दिक मंगलकामनाएँ एवं आपके स्वस्थ एवं संयममय जीवन की सुख-साता पूछते हुए अपनी

श्रद्धासिक्त वंदना करते हैं।

वैशाख सुदी तीज को **अक्षय तृतीया या आखातीज** कहते हैं, जो इस वर्ष 3 मई 2022 को मनाई जाएगी। जैन एवं वैदिक दोनों परम्पराओं में इस पर्व का बड़ा महत्त्व है। वैदिक ग्रन्थों के अनुसार त्रेता युग का प्रारम्भ आज ही के दिन हुआ था। आज ही के दिन नर-नारायण का अवतार हुआ। आज का दिन जप, तप, दान, पुण्य आदि को अक्षय फल देने वाला तथा अबूझ शुभ मुहूर्त्त माना जाता है।

जैन परम्परा के अनुसार आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने 400 दिन के सुदीर्घ, कठोर तप:श्चरण के पश्चात् अक्षय तृतीया के दिन इक्षुरस का पान करके वर्षीतप का पारणा किया था। हस्तिनापुर के राजकुमार श्रेयांस ने आज ही के दिन प्रभु आदिनाथ को इक्षुरस का प्रथम दान दिया था। श्रेयांस ने प्रभु को वर्षीतप का पारणा करवाकर महान् पुण्य का संचय किया और अशुभ कर्म की निर्जरा की। उस युग के वे प्रथम भिक्षादाता हुए। प्रभु आदिनाथ ने जगत् को सबसे पहले तप का पाठ पढ़ाया तो श्रेयांसकुमार ने अनजान मानव समाज को भिक्षादान की विधि बताई। प्रभु के पारणे का वैशाख शुक्ला तृतीया का वह दिन अक्षय करणी के कारण लोक में आखातीज या अक्षय तृतीया के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

हजारों, लाखों वर्षों से इस परम्परा का पालन आज भी जैन समाज में हो रहा है। हजारों श्रावक-श्राविकाएँ प्रतिवर्ष वर्षीतप की आराधना करते हैं। तप की पूर्णाहुति के अवसर पर तपस्वी जन गुरुदेव के चरणों में जाकर भक्तिभाव तथा धर्म तथा धर्म प्रभावना करते हैं।

इस पावन पर्व पर ज्योतिषी से मुहूर्त्त पूछे बिना ही गृहप्रवेश, सगाई, विवाह आदि मांगलिक कार्य सम्पन्न कर लिए जाते हैं। इस दिन घरों में सात धान- चावल, गेहूँ, बाजरा, ज्वार, मक्की, मूंग व मोठ की खीचड़ी बनाकर खाने का भी रिवाज है। ऋतुचक्र की दृष्टि से भी इस पर्व का बड़ा महत्त्व है। एक तरफ सूर्य के प्रचण्ड ताप से तप कर पृथ्वी विकार रहित बनती है तो दूसरी तरफ आषाढ़ का स्पर्श पाकर हरी-भरी हो उठती है। ठीक इसी प्रकार इन पर्वों पर की गई तपस्याएँ तब सार्थक बनती हैं जब शरीर में रही आत्म-चेतना निर्मल, निर्विकार और विशुद्ध बन आत्मकल्याण करती हैं।

आज-कल देखने में यह आता है कि तप-त्याग का भाव आत्मा से न जुड़कर बाह्य प्रदर्शन से जुड़ गया है। आज तपस्याएँ आत्मशुद्धि, इन्द्रिय दमन के लिए न होकर एक होड़ाहोड़ी की बात हो गई हैं। साधक भूखा इसलिए रहता है कि वह मन और इन्द्रियों पर नियंत्रण रख सके, तभी सच्चे अर्थों में कर सकें। तपस्या करके भी यदि मन में दोषों के प्रति प्रायश्चित्त का भाव नहीं जगा, बड़ों के प्रति विनय का भाव पैदा नहीं हुआ, दुखियों और असहायों के प्रति सेवा और सहयोग के भाव न उमड़े तो हमारा भूखा रहना निरर्थक है। तप साधना करते समय फल की इच्छा नहीं होनी चाहिए।

हमें समझना चाहिए कि अक्षय तृतीया के दिन इक्षुरस से वर्षीतप का पारणा करना एक मांगलिक विधान है। इसकी सार्थकता तभी है जब हम अपनी आत्मा की अक्षय शक्ति को पहचान कर उसको कलुषित करने वाले विकारों को दग्ध करें और जीवन में इक्षुरस के समान मधुरता लाएँ। हमारे पर्व दिवस हमारी अन्त:प्रेरणाओं के वाहक बनें। शरीर से आत्मा की ओर तथा अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ें।

## करें धर्म-ध्यान चरणार्पित

**चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म कल्याणक** चैत्र शुक्ला त्रयोदशी 14 अप्रैल 2022 को एवं रत्नत्रय के महान आराधक **आचार्य श्री रामलालजी म.सा. का जन्मदिवस** चैत्र शुक्ला चतुर्दशी 15 अप्रैल 2022 को हम सभी के समक्ष उपस्थित है। श्रमणोपासक की पूरी टीम सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित कर इन शुभ दिवस को तप-त्याग के साथ मनाकर जीवन को ज्यादा मर्यादित कर निर्णायक बनाने का निवेदन करती है।

# निदान का परिणाम

-रत्ना ओस्तवाल, राजनांदगाँव

सत्य, शाश्वत, अहिंसा, अनेकान्त, अपरिग्रह की अमूल्य धरा पर जैन धर्म में निदान शब्द बहुत प्रचलित है। निदान कौन करता है, कैसे करता है और कब करता है, इसकी बहुत ही मार्मिक विवेचना के साथ दशाश्रुतस्कंन्ध सूत्र की दसवीं दशा में नवनिदान का वर्णन है।

निर्ग्रन्थ, निर्ग्रन्थी, श्रमणोपासक, श्रावक, सम्यक्त्वी को अपने जीवन में निदान का उपयोग कैसे करना बतलाया गया है? यह निदान संसारी जीव के मनोपटल पर छाया हुआ है। चमत्कार को नमस्कार और किए हुए कार्यों के 'रिटर्न गिफ्ट' के लालसा समाई हुई है।

निदान रहित आत्माएँ वे भव्य आत्माएँ होती हैं जो अपने किए हुए कृत्यों का फल और उससे प्राप्त होने वाले लाभ की लालसा से दूर होती हैं। प्रभु महावीर ने निदान के कई उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। उसमें से एक है- एक बार श्रमण भगवान महावीर ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए राजगृही नगरी के गुणशील उद्यान में पधारे। उस परिषद् में राजा श्रेणिक व महारानी चेलना ने धर्मोपदेश सुना और अपने स्थान पर लौट गए। श्रेणिक राजा एवं चेलना महारानी के रूप को देखकर कुछ साधु-साध्वियों के मन में यह संकल्प हुआ- ''अहो! ये श्रेणिक राजा महान ऋद्धि सम्पन्न और बहुत सुखी हैं। यह महारानी चेलना के साथ देवोपम सुख भोग रहा है। यदि हमारे तप, संयम, नियम और ब्रह्मचर्य पालन का कोई कल्याणकारी विशिष्ट फल हो तो हम भी भविष्य में इस प्रकार देवोपम मानवीय सुखों का भोग भोगें। भगवान महावीर ने साधु-साध्वियों को अपने पास बुलाकर इस विषय में पूछा तो साधु-साध्वियों ने कहा- हाँ, हमने ऐसा सोचा। ये बात सत्य है, हमने ऐसा निदान किया।

वास्तव में निदान शब्द का अर्थ छेदन करना या काटना है, जिससे ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना का छेदन होता है। निदान का सामान्य अर्थ यह भी है कि तप, संयम के महाफल के बदले अल्पफल की कामना करना। शाश्वत मोक्ष सुख देने वाली तप संयम की विशाल साधना के फल से मानुषिक या दैविक तुच्छ भोगों को प्राप्त करना महत्त्व की बात नहीं होती।

दशाश्रुतस्कन्ध की दसवीं दशा में नवनिदान इस प्रकार हैं-

1. निर्ग्रन्थ का मनुष्य सम्बन्धी भोगों के लिए निदान।
2. निर्ग्रन्थी का मनुष्य सम्बन्धी भोगों के लिए निदान।
3. निर्ग्रन्थ का स्त्रीत्व के लिए निदान।
4. निर्ग्रन्थी का पुरुषत्व के लिए निदान।
5. निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी द्वारा परदेवी परिचारणा का निदान।
6. निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी का स्वदेशी परिचारणा का निदान।
7. निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी द्वारा सहज दिव्य भोगों का निदान।
8. श्रमणोपासक होने के लिए निदान करना।
9. श्रमण होने के लिए निदान करना।

ये नव (नौ) तरह के निदान जीवन को दु:खमय करते हैं। ऐसे जीव नरक में भी उत्पन्न होते हैं और इनको सम्यक्त्व की प्राप्ति दुर्लभ होती है। ये केवली प्ररूपित धर्म को सुन भी नहीं सकते।

इन नौ में से एक का उदाहरण प्रस्तुत कर रही हूँ- **निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी द्वारा परदेवी परिचायणा का निदान-** साधु-साध्वीजी धर्म की आराधना करते हुए, संयम में पराक्रम करते हुए सांसारिक कार्यों से विरक्त हो यह सोचें कि मानव सम्बन्धी कामभोग अशाश्वत हैं। मानव शरीर दुर्गन्धयुक्त, वात-पित्त-कफ से परिपूर्ण, आगे-पीछे छोड़ने योग्य है, परन्तु देवलोक देव अन्य देवियों को भी अपने वश में करके उनके साथ विषय सेवन करते हैं। साथ ही स्वयं की देवियों के साथ भी विषय-सेवन करते हैं। यदि मेरे तप, नियम, ब्रह्मचर्य का फल सुआचरित हो तो मैं भी भविष्य में इन देवियों के साथ दिव्य भोगों को भोगूं। ऐसा कोई भी साधु-साध्वी निदान

करके देवलोक में उत्पन्न हो, अपनी महाऋद्धि के साथ विषय-सेवन करे, वहाँ से काल करके पुरुष रूप में उत्पन्न हो, वहाँ भी सभी सुखों को प्राप्त करता है, परन्तु साधु धर्म सुनाएँ तो सुनता नहीं, धर्म पर श्रद्धा-रुचि नहीं करता। ऐसा जीव कृष्णपाक्षिक नरक में उत्पन्न होता है और भविष्य में दुर्लभ बोधि होता है।

अत: इस उदाहरण से यह स्पष्ट है कि नरक के द्वार निश्चित खुले हैं। अत: साधक को, श्रमणोपासक को, धर्म आराधक को निदान रहित तप-संयम की आराधना करनी चाहिए। ऐसा साधक काम-राग से सर्वथा विरक्त हो उत्कृष्ट ज्ञान, दर्शन, चारित्र से अपनी आत्मा को भावित करता है और निश्चित केवलज्ञान, केवलदर्शन को प्राप्त कर अनेक वर्षों तक केवली पर्याय का पालन करके सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो सभी दु:खों का अंत करता है।

वृहद्कल्प सूत्र के छठे उद्देशक में बताया गया है कि निदान करने वाला स्वयं के मोक्ष मार्ग का नाश करता है। नव-निदानों के सिवाय और भी निदान होते हैं। जैसे- किसी को दु:ख देने वाला बनूं, बदला लेने वाला बनूं। जैसे श्रेणिक के लिए कौणिक का दु:खदायी होना, वासुदेव का प्रतिवासुदेव को मारना, द्वैपायन ऋषि का द्वारिका-नाश करना, द्रौपदी के पाँच पति होना व ब्रह्मदत्त का चक्रवर्ती होना आदि। अत: निदान यानी नियाणा पाप है। यह नरक का द्वार खोलता है और पुरुषार्थ में कमी लाता है। यह निदान जीवन का अभिशाप है, लेकिन जीव निदान करने के बाद अगर प्रायश्चित्त-आलोचना कर लेता है तो वह आराधक बन सता है और उसका मोक्ष का मार्ग खुल जाता है।


# I JAIN MY JAIN

धर्मनिष्ठ सुज्ञजन,
सादर जय जिनेन्द्र।

वर्तमान के प्रतिस्पर्द्धात्मक युग में बहुत से समूह और संस्थाओं द्वारा व्यक्तित्व विकास के अनेक प्रकल्प प्रचलित हैं, जिनके माध्यम से बहुत सी जानकारियाँ, डिग्री, डिप्लोमा, सर्टीफिकेट देकर व्यक्ति के बाहरी व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने का प्रयास किया जाता है। इस प्रदर्शन और प्रतिस्पर्द्धा की दौड़ में शामिल होकर व्यक्ति का मन अशांत हो जाता है।

साथ ही व्यक्तित्व विकास के इन बाहरी उपक्रमों को अपनाकर व्यक्ति का मन धर्म के सामान्य ज्ञान, धार्मिक गौरव ज्ञान को विस्मृत करता जा रहा है।

आरुग्गबोहिलाभं द्वारा **I JAIN MY JAIN** शिविर देश के विभिन्न अंचलों में समय-समय पर आयोजित किया जा रहा है। इस शिविर का उद्देश्य युवाओं में संस्कार निर्माण करने के साथ ही युवाओं को धार्मिक गौरव और उसके वैभवशाली इतिहास से परिचय कराना है। साथ ही इस शिविर के माध्यम से जैन युवा प्रतिभाओं को सामाजिक क्षेत्र के विस्तृत मंच पर लाने का कार्य भी किया जाता है।

**आगामी सात दिवसीय शिविर भारत के दक्षिण क्षेत्र में होने जा रहा है। जिसका विवरण है-**

| | | |
|---|---|---|
| दिनांक | - | **15 मई 2022 रविवार से 22 मई 2022 रविवार तक** |
| स्थान | - | **विनय अतिथि भवन, (बैंगलोर, कर्नाटक)** |
| आयु सीमा | - | **15 से 30 वर्ष की अविवाहित बहिनें** |
| सीटें | - | **60** |
| आवेदन का माध्यम | - | **ऑनलाइन/ऑफलाइन** |
| आवेदन की अंतम तिथि | - | **30 अप्रेल 2022** |

जल्द से जल्द आवेदन कर अपना प्रवेश सुनिश्चित करें।
आवेदन करने अथवा अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 7877883784

# जीवन को संकीर्ण नहीं सर्वांगीण बनाएँ

-आभाकिरण गांधी, धागड़मऊ

**जीवन जीना अबोधता है
उससे ऊपर शोधता है उठना
समझ और होशपूर्वक जीना
निर्विकल्पता में प्रबोधता है।**

जीवन का शुद्धिकरण कर सर्वांगीण विकास की ओर बढ़ना, स्वबोध में जीना जीवन में सुमन खिलाना है। जहाँ सुमन खिलते हैं वहाँ भँवरों का गुंजन होता है, वातावरण में सुगन्ध की लहर फैलती है। कीचड़ की गन्दगी में मक्खी, मच्छर भिनभिनाते हैं, दुर्गन्ध आती है, वहाँ कोई आना पसन्द नहीं करता। यही घटनाक्रम है हमारे जीवन का। हमारा मन संकीर्ण दायरे में कैद है। यह संकीर्णता हमारे जीवन को दुर्गन्ध से भर देती है। बहता पानी स्वच्छ-निर्मल होता है। उसकी गति रुकते ही पानी में कीड़े व दुर्गन्ध दोनों पैदा होने की संभावना होती है। ऐसे ही हमारे जीवन संकीर्ण की गति होते ही जीवन में तनाव, टेंशन, निराशा, हताशा आदि भाव पैदा होने लगते हैं।

जीवन का सर्वांगीण विकास यदि हम चाहते हैं तो हमारी दृष्टि को हमें विशाल बनाना होगा। विशालता विराटता की जननी है। समुद्र में सभी नदियों का समावेश होता है। ऐसे ही जिसका मन विराट बन गया वहाँ सभी मत, पंथ, सम्प्रदायों का समावेश हो जाता है। वर्तमान में हमने हमारे मन को खण्ड-खण्ड में विभाजित कर दिया है। अखण्डता की कहीं भी सुगन्ध नहीं है। सुगन्ध के बिना जीवन नीरस है। निरसता ही जीवन का अभिशाप है। परिवार, समाज, राष्ट्र में समरसता लाना है तो हृदय को विशाल एवं विराट बनाना पड़ेगा, तभी हम सर्वांगीणता के शिखर पर पहुँच पाएँगे।

**मंजिल वे ही पाते हैं,
जिनके संकल्पों में जान होती है।
विराट विशाल हृदय वालों की
इस जग में पहचान होती है।।**

संकीर्णता में जीना, पशुता को प्राप्त करना है। प्रभुता को प्राप्त कर पशुता की ओर जाना कितने खेद की बात है। जीवन की किताब का हर पन्ना, हर शब्द, हर अध्याय बहुत ही अद्भुत और रसमय है। जब हम जीवन की किताब को प्यार से पढ़ते हैं तो लगता है कि जगह-जगह प्रभु का मन्दिर है, झरनों की कल-कल में आगम झर रहे हैं, पात-पात में वेदों की ऋचाएँ हैं, प्रकृति की हर घटना हमें सन्देश देती है। उगता हुआ सूर्य जीवन के प्रारम्भ का एवं ढ़लता सूर्य जीवन के समापन का सन्देश देता है। जब हर एक की मृत्यु निश्चित है तो जीवन में इतनी आपाधापी किसके लिए है। जीवन के मूल्यों को समझना होगा।

पक्षी दो पंखों से उड़ान भरता है, ऊँचे आकाश को छूता है, ऐसे ही हमें भी ज्ञान व क्रिया (संकल्पों) के बल पर उड़ान भरते हुए जीवन को सर्वांगीण बनाना है।

**उड़ते वही हैं जिनके पंख मजबूत व सशक्त हैं,
विकास वही कर पाते हैं जो सजग व जागृत हैं।।**

जीवन के हर कदम पर जागृति हमें विकास की ओर ले जाती है। जहाँ विकास है वहाँ विनाश नहीं। विकास में अनन्त संभावनाएँ छुपी हैं। उन्हीं संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए सर्वांगीणता की ओर गतिशील बनें। गतिशीलता हमें निरन्तर आगे बढ़ने का संकेत देती है। वेद वाक्य भी है- **''चरैवेति-चरैवेति''** चलते रहो - चलते रहो। चलना ही जीवन है, रुकना मृत्यु है। मृत्यु से उस पार हमारा स्वभाव शाश्वत है। जो कभी मिटता नहीं उस अमिट की खोज में लग जाएँ तो जीवन महक जाए।

मनुष्य चार प्रकार के होते हैं। इस गणित के फार्मूले में देखें-

- कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो तोड़ने का काम करते हैं।
+ कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो जोड़ने का काम करते हैं।
÷ कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो विभाजन का काम करते हैं।

X कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो बढ़ाने (अभिवृद्धि) का काम करते हैं।

इन चारों में से हम कौनसी कैटेगरी में हैं, यह हमें सोचना है। चिन्तन-मनन करना है कि हम जोड़ने एवं अभिवृद्धि का काम करते हैं तो ह्रास से विकास की यात्रा में जुड़ते हैं। विकास ही विश्वास की नींव है। नींव पर मंजिल का निर्माण होता है।

निर्माण वे ही कर पाते हैं,
जिसके संकल्पों में जान होती है।
एकाग्र दृष्टि से ही स्वयं ही पहचान होती है,
मनोविजेता ही इस सृष्टि की शान होता है।।

हम इंसान कहलाते हैं। इंसान शब्द पर चिन्तन करें तो मालूम होता है कि इंसान का अर्थ है- अन्दर। जो अपने भीतर चला गया उसकी शान बढ़ जाती है। हमारी भी शान हमें बढ़ानी है तो हमें अन्दर जाना होगा, अन्तरावलोकन करना होगा तभी सर्वांगीण विकास संभव है।

मन को सदा निर्मल व पवित्र रखना है। मन में जितना दोष होगा उसे उतना ही धोना पड़ेगा। आखिर दूध में जितना पानी होगा, रबड़ी बनाने के लिए उसको उतना ही उबालना पड़ेगा। पत्थर एक बार मंदिर जाता है और भगवान बनकर पूजा जाता है, जबकि आदमी हजार बार मंदिर जाकर भी अगर पत्थर ही बना रह जाए तो यह मन का ही प्रगाढ़ दोष है। मन को बड़ा बनाएँ, संकीर्ण विचारों के मकड़जाल से बाहर निकलकर ही उदारता के विराट आकाश में प्रवेश कर सकेंगे। प्राय: दो भाई तब अलग नहीं होते, जब मकान छोटा होता है, वे तब अलग होते हैं। जबतक मन छोटा होता है। प्लीज! अपने मन को न तो छोटा कीजिए और न ही खोटा।

विराटता के आँगन में
अपनत्व के सुमन खिलाईए।
संकीर्णता की जंजीरों को तोड़
प्रेम का संगीत गाईए।

# रचनाएँ आमंत्रित

भगवान महावीर के अहिंसा सन्देश को जन-जन के हृदय पटल पर जागृत करने एवं समाजोत्थान के साथ-साथ समाज कल्याण को समर्पित आपकी अपनी श्रमणोपासक पत्रिका का अंक आपके करकमलों में है। आप संघ के मुखपृष्ठ के नियमित पाठक है यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। हम आतुर हैं आपके सुझावों को जानने के लिए। कृपया श्रमणोपासक के सम्बन्ध में आप अपने सुझाव हमें नि:संकोच भिजवाएँ ताकि इसे और अधिक जनोपयोगी व रुचिकर बनाया जा सके। आपके सुझाव हमारा मार्गदर्शन करेंगे ऐसा हमारा विश्वास है।

श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। इसी प्रकार आगामी **15-16 मई 2022** के धार्मिक अंक **1. ''आज की जीवन शैली : खराब या अच्छी भली'' 2. आर्त-ध्यान, रौद्र-ध्यान व धर्म-ध्यान, शुक्ल-ध्यान (अर्थ व समीक्षण) 3. जैन धर्म के सिद्धांतों पर आधारित सत्य घटनाएँ (आपके आस-पास घटित हुई है तो) 4. क्या हम कहीं भी गलत नहीं (माता-पिता)** विषय पर प्रकाशित किए जाएंगे। सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि मो. **9314055390** एवं ईमेल : **news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाओं के लिए श्रमणोपासक टीम सदैव आतुर हैं।

**-श्रमणोपासक टीम**

# वर्तमान संदर्भ में महावीर-दर्शन की प्रासंगिकता

-ऋषभकुमार मुरड़िया, कानोड़

महावीर-दर्शन से आप्लावित बन,
समृद्धि दीप सदा जलते जाएँ,
जीवन पथ पर सुख के बादल,
संग सदा ही चलते जाएँ।
सर्वशक्तिमान की अनुपम रश्मि से,
हो जाए जगमग दुनिया,
करुणा, प्रेम, परोपकार से,
विश्व शान्तिमय बनता जाए।।

हम परम सौभाग्यशाली हैं कि हमने जिस देश में जन्म लिया उस देश में भगवान महावीर जैसे महामानव ने जन्म लेकर अपने जीवन दर्शन से जो मार्ग प्रशस्त किया, वह आधुनिक युग की विषम परिस्थितियों से परित्राण पाने के लिए परम आवश्यक, उपयोगी एवं सार्थक सिद्ध हो रहा है। 'महावीर' चार अक्षर, एक शब्द के स्मरण मात्र से स्मृतिपटल पर चित्र उभरता है, जिसमें राजपाट, सुख-ऐश्वर्य एवं भोग-विलास को तजकर तीस वर्ष का राजकुमार मुनि बनता है। महावीर के नाम से उनके जीवन की वे समस्त स्थितियाँ, घटनाएँ एवं प्रेरक प्रसंग चलचित्र की भाँति नयनों के समक्ष प्रतिबिम्बित होने लगते हैं, जिनमें उनकी वीरता, क्षमा, धैर्य, दृढ़ मनोबल, त्याग एवं कैवल्य इत्यादि के अनेकानेक प्रसंग दृष्टिपटल पर उभरने लगते हैं। महावीर अपने युग के प्रखरतम क्रान्तिकारी थे और वर्तमान युग की इस पीढ़ी के लिए आदर्श है।

वर्तमान के इस विवेकरहित अन्धाधुन्ध वैज्ञानिकीकरण के परिणामस्वरूप हिंसामय वातावरण एवं भौतिकवाद के दुष्परिणाम से ग्रस्त, सुख-शान्ति की खोज में भटक रहे मानव मात्र के लिए भगवान महावीर का दर्शन प्रासंगिक बना हुआ है। महावीर दर्शन में अकाट्य, मौलिक एवं त्रैकालिक है। यह न कभी पुराना हुआ है, न ही विस्मृत हो पाया और न ही कभी महत्त्वहीन होगा। यह महावीर दर्शन विश्व की समस्त समस्याओं का समाधान कर विश्व को सन्मार्ग पर लाने का सफल सूत्र है। वर्तमान युग की महत्ती आवश्यकता है कि हम महावीर की वाणी को अन्वेषक की दृष्टि से समझें, सहेजें और अपने जीवन में उतार कर जीवन के अंधियारे पथ के भटकाव से बचाकर सुख-शान्ति एवं आनन्द की पावन धारा आप्लावित करें।

सर्वशक्तिमान भगवान महावीर ने अपने दर्शन में जो अहिंसावाद, अनेकान्तवाद, अपरिग्रहवाद, समतावाद एवं आत्मनिर्भरता की साधना का जीवन दर्शन प्रतिपादित किया, वह वर्तमान मानव की सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं का अहिंसात्मक समाधान प्रस्तुत करता है। इसकी विवेचना इस प्रकार है-

**अहिंसा दर्शन-** वर्तमान के वैज्ञानिक एवं भौतिकतावादी जीवन मूल्यों के समुचित विकास के लिए भगवान महावीर का अहिंसा दर्शन एक त्रैकालिक, शाश्वत, सार्वभौमिक विचार है। इसकी उपादेयता सर्वकालिक है। इस युग की समस्त समस्याओं का समाधान अहिंसा से ही है। इसकी प्रासंगिकता असंदिग्ध है। यदि विश्व विनाश से बचेगा तो इसी अहिंसा दर्शन से बचेगा। अहिंसा भारतीय संस्कृति का हृदय है तथा इसे आजीवन अपनाकर सम्पूर्ण विश्व को आलोकित किया जा सकता है। भगवान महावीर को अहिंसा से आशा है और अहिंसा को भगवान महावीर पर गर्व। भगवान महावीर के अहिंसा दर्शन में समस्त जीवों की हिंसा का परित्याग, राग-द्वेषजनित आत्मिक हिंसा का भी पूर्णतया परित्याग मानकर इसके फलक को पर्याप्त व्यापक बनाया है। जीवन में जो भी वरेण्य है, जीवन का जो उत्तमांश है, वह समस्त अहिंसा की श्रेणी में आता है। यदि मानव को इस धरती पर सुख एवं शान्तिपूर्वक रहने की अभिलाषा है तो उसे अहिंसा को ऊर्ध्वमुखी विराट चिन्तन का सर्वोत्तम

विकास बिन्दू मानकर अपनाना होगा।

**अनेकान्त दर्शन–** भगवान महावीर का अनेकान्त दर्शन जैन धर्म की आधारशिला है। किसी भी वस्तु को भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से देखना, समझना एवं अपनी वैचारिक सोच, चिन्तन के साथ दूसरे व्यक्ति के वैचारिक चिन्तन को सहृदयता एवं नैतिकता के साथ समझना अनेकान्त दर्शन का मूल स्वरूप है। अनेकान्त दर्शन में अन्यमति, सहिष्णुता, सौहार्द्र एवं सद्भाव है। भगवान महावीर के अनेकान्त दर्शन में अपने विचारों के साथ दूसरों के विचारों का सम्मान है। इसमें भिन्न-भिन्न तर्कों, दृष्टिकोणों को अपने जीवन का अंग बनाना होगा। इसमें वस्तुत: एकात्मक अर्थात् 'ऐसा ही है' के स्थान पर ''ऐसा भी है'' यानी 'ही' के स्थान पर 'भी' को अपनाना होगा। इससे ध्वनित होता है कि वस्तु का स्वरूप 'ऐसा भी है' मानने से संघर्ष के स्थान पर समता एवं सौहार्द्रता का मधुरतम वातावरण निर्मित हो सकेगा। अत: वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में महावीर स्वामी का अनेकान्तवाद से एकता एवं समन्वय की प्राप्ति के साथ विश्वशान्ति की कल्पना को साकार बनाने में मददगार बनेगा।

**अपरिग्रह दर्शन–** भारतीय संस्कृति त्याग प्रधान रही है। जीवन मूल्यों का सार ''दयतां, दोयतां और दस्यताम्'' में निहित है। इच्छाएँ अनन्त हैं और वर्तमान मानव इसका गुलाम बनता जा रहा है। परिग्रह अर्थात् धन-दौलत में अभिवृद्धि, संग्रहवृत्ति इत्यादि से है। अपरिग्रह अर्थात् अपनी आवश्यकताओं को सीमित बनाना एवं आवश्यकता से अधिक संग्रह न करना, समाजोत्थान में मुक्तहस्त से दान देकर धन का सदुपयोग करना। यह अपरिग्रह प्रवृत्ति एक ओर छीना-झपटी, संचयवृत्ति को नियंत्रित कर सकती है तो दूसरी ओर भौतिकता से परे आध्यात्मिकता का मार्ग प्रशस्त कराती है। महावीर का अपरिग्रह चिन्तन है- मुझसे छोटा कोई न हो अर्थात् मेरे पास जो कुछ भी है वह सबके लिए है। अपरिग्रह सम्पत्ति की उपयोग की सामान्य अनुभूति बताता है, स्वामित्व नहीं। परिग्रहरूपी वृक्ष के तने लोभ, लालच, क्लेश एवं कषाय है और उसकी चिन्तारूपी सैंकड़ों सघन और विस्तृत शाखाएँ हैं। मूर्च्छा, ममत्व ही परिग्रह है। यह परिग्रह अनन्त है, अनित्य है, अस्थिर है और अशाश्वत है। यह पाप कर्म की जड़ के साथ अनन्त दु:खों का घर है। अत: हमें अपरिग्रह की महत्ता जानकर महावीर के अपरिग्रह दर्शन को हृदयांगम बनाना होगा ताकि हमारा वर्तमान समाज खुशहाल बन सके।

**समता दर्शन–** भगवान महावीर स्वामी ने **'किं जीवनम्'** एवं **'सम्यक् निर्णायकम् समतामयं च'** के माध्यम से जीवन दर्शन की दार्शनिक, आध्यात्मिक विवेचना कर समता दर्शन को प्रतिपादित किया। समता दर्शन जातिगत भावना से परे, आर्थिक, सामाजिक एवं अन्य विषमताओं से पृथक् सबको समान समझने का उद्देश्य प्राप्त करने की भावना का दर्शन है। समता समाज के कुछ मौलिक अंश मात्र से व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं विश्व में तनाव, हिंसा एवं अपराधों में कमी लाई जा सकती है। समता दर्शन विश्वबन्धुत्व की प्रयोगात्मक विधि है। इसको अपनाने से सम्पूर्ण विश्व को समतामय बनाया जाकर प्रत्येक मानव-जीवन को एक महकते गुलाब की भाँति खुशबू से परिपूर्ण बनाकर सम्पूर्ण विश्व को आनन्दस्थली बनाया जा सकेगा।

**आत्मनिर्भरता की साधना–** भगवान महावीर ने धार्मिक क्षेत्र में सबसे बड़ी देन आत्मनिर्भरता की साधना को जीवन में उतारने की दी है। आज का वैज्ञानिक ईश्वर से छुट्टी ले रहा है। 'गॉड इज डैड' का नारा बुलन्द हो रहा है किन्तु लगभग 2600 से भी अधिक वर्षों पूर्व भगवान महावीर स्वामी का उपदेश ही नहीं बल्कि आचरण भी इसी नारे पर आधारित था। उन्होंने कहा था कि समस्त संसार में जो कुछ भी हो रहा है, वह जीव के कर्म एवं क्रिया के फलस्वरूप हो रहा है। कोई ईश्वर संसार का निर्माण नहीं करता। जीव अपने कर्म से ही संसार का निर्माण करता है। महावीर ने अपनी साधना अकेले रहकर करने की प्रतिज्ञा की थी। इन्द्र ने इनकी साधना में मदद करनी चाही तो इन्होंने इन्कार कर दिया और कहा कि मुझे

अपनी स्वयं की साधना शक्ति पर अटल विश्वास है। आत्मनिर्भर होकर साधना करने दिया जाए। महावीर की साधना में आत्म-निरीक्षण की अर्थात् अपनी आत्मा में रहते हुए राग-द्वेष को दूर कर आत्मा को विशुद्ध करने की तमन्ना थी। यही आत्मनिर्भरता की साधना वर्तमान युग के व्यावहारिक जीवन के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हो रही है। कर्मवाद पर आधारित यह आत्मनिर्भरता का संदेश हमें अच्छे कर्म करने की प्रवृत्ति की प्रेरणा देकर अपने जीवन को संयमित कर अपने आचरण को शुद्धता के शिखर पर प्रतिष्ठित बना सकेगा।

भगवान महावीर की **'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय'** की उन्नत भावना से परिपूर्ण महावीर दर्शन वर्तमान के प्रजातन्त्रात्मक शासन व्यवस्था एवं वैज्ञानिक सापेक्षवादी चिन्तन के अनुरूप अहिंसात्मक पद्धति से समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करने का अमोघ शस्त्र है। यह अमोघ शस्त्र वर्तमान समाज एवं समुदाय के लिए अमूल्य उपकार एवं वरदान सिद्ध हो रहा है। महावीर का यह दिव्य सन्देश किसी सम्प्रदाय अथवा जाति विशेष के लिए न होकर समग्र मानव जाति के लिए है। उनका दिव्यबोध सामाजिक नहीं, शाश्वत है। यह सदासर्वदा अम्लान रहने वाला चिर युवा सत्य है, जो देशकाल की क्षुद्र सीमाओं को लांघकर सम्पूर्ण मानव जगत् के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सुख-शान्ति की पावन धारा आप्लावित करता रहा है व करता रहेगा।

आवश्यकता है हम महावीर दर्शन के वास्तविक स्वरूप को हृदयांगम बना विश्व के समस्त प्राणियों में प्रेम, सद्भाव एवं दया के सुरभित सुमन प्रस्फुटित होकर विश्वमैत्री के मधुर फल जन-जन के तृप्त मन को परितृप्त कर आह्लादित एवं सौहार्द्रतापूर्ण वातावरण से पूरित हो सम्पूर्ण विश्व में सुख व शान्ति की प्रतिस्थापना में सहायक बनेंगे।

# सर्वशक्तिमान : महावीर के मौलिक सिद्धान्त

-प्रतिभा तिलकराज सहलोत, निम्बाहेड़ा

अध्यात्म के उच्चतम आलय की मंजिल पर आरोहण के सोपान।
जीवन की सही दिशा निर्धारण के दिशासूचक यंत्र।
आत्मा की लक्षित विशुद्ध गति के लिए अतुल्य सहचर।
विरासत में प्राप्त हुई शान्ति और आनन्द की दिव्य देन।
यह मन हमारा बिना पैरों के भी लगाता है दौड़।
बिना आँखों के भी देख लेता है पूरा जहान।
बिना पंख के भी पूरे नभमण्डल का लगाता है चक्कर।
पल में यहाँ पल में वहाँ पवन वेग को कैसे रोकें।
करें अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह की सम्यक् आराधना।
महावीर के सिद्धान्त जन-जन को देते हैं सही दिशा-निर्देश।
व्यष्टि सुधार में है समष्टि सुधार का समावेश।
मैत्री और करुणा देती है विश्वशान्ति का सन्देश।
चारित्र निर्माण हेतु होता है अनीति का प्रतिकार।
जाग उठती है मानवता होता है समाज में सुधार।
कहते हैं महावीर जीवन जीओ मर्यादित, संयमित।
संयम वह मशाल है जो जीवन को प्रकाशित करती है।
संयम वह पतवार है जो जीवन नैया को भवसागर से पार लगाती है।
संयम वह तपस्या है जिससे व्यक्ति का जीवन कंचन बन जाता है।
संयम वह कवच है जो भोगों के बाण शरीर के नहीं लगने देता है।
जो दूसरों के पास है उस पर नहीं डालें दृष्टि।
व्रत-नियमों की सुवास करती है जीवन में सुखवृष्टि।
स्वार्थ, तृष्णा, लोभ, कपट और मोह को छोड़कर।
चलें हम महावीर के सिद्धान्तों पर दृढ़ होकर।
अहिंसा है दया की जननी, सत्य है सारभूत शुचिता।
अस्तेय व्रत आराधना से खिलती है मन की पवित्रता।
करें आत्मा में रमण सर्वोत्तम तप ब्रह्म को अपनाकर।
बनें अपरिग्रही ''प्रतिभा'' यही महावीर सिद्धान्तों का प्रयोजन।

# नमक की व्यथा

-संध्या धाड़ीवाल, रायपुर

सुनो श्रावकों!
कहता है क्या उजला नमक हम से।
तुम सुनना उसे ध्यान से।
कहता है वह देखता हूँ अपने पिछले भवों को।
क्या ऐसे कर्म किए थे मैंने।
पृथ्वीकायिक जीव बना और खारापन मेरे तन में।

पत्थर-सा था अत्यन्त कठोर मेरा हृदय।
तनिक न थी करुणा मेरे मन में।
पल-पल कटु वचनों के बाण चलाता।
छेद कर देता अपनों के दिल में।

थोड़ा पुण्य जब उदय में आया।
गुरु-भगवन्तों का संग था पाया।
वाणी उनकी उतरी ही थी मन में।
और बदलना चाहता था अपना जीवन मैं।

उससे पहले कि मैं कुछ समझूँ।
आकर काल ने मुझको दबोच लिया।
ले करके मुझको खारे सागर में फेंक दिया।
पत्थर था जो मेरा हृदय लो पत्थर ही मैं बन गया।

रोता रहा मैं गिड़गिड़ाता रहा मांगता रहा भीख।
पर कर्म कहाँ पसीजते हैं देते हमको सच्ची सीख।
तुम्हारी रसोई में आने के लिए नारकीय वेदना मैं सहता हूँ।
उबलता हूँ, पीसा जाता हूँ फिर भी न मैं नष्ट हो पाता हूँ।
इन्द्रिय एक मिली मुझको, मानव तुम पंचेन्द्रिय कहलाते हो।

महावीर की संतान हो तुम, श्रावक हो ये जान लो।
सादा नमक व सेंधा नमक दोनों सचित्त ही होते हैं।
सेक कर रखो तो अचित्त हम हो जाते हैं यह मान लो।
कुछ नमी पानी की, फिर हम में प्राण फूंक जाती है।
इसे पहचान लो...।।

कितने ही समुद्री जीवों की हिंसा का
कारण मैं बनता हूँ।
हृदय रोग, बी.पी. आदि बीमारी का
कारण भी मैं होता हूँ।
कहता हूँ आप बीती अपनी सुनो
मानव मान लो मेरी बात।
काला नमक अचित्त ही होता
ध्यान रखना यह बात।
बहुत सारे गुण होते उसमें, नहीं
पहुँचाता कुछ नुकसान।
हिंसा के पाप से भी बच जाओगे,
नीच गति में न जाओगे।

पीड़ा तो मुझको भी होती है पर व्यक्त नहीं कर पाता हूँ।
हाथ लगाते हो जब भी तुम मुझको, तडप कर रह जाता हूँ।
मुझ पर रखा चम्मच भी भारी पहाड़-सा लगता है।
अपने ही कर्मों का फल भोग रहा,
अपनी व्यथा मैं कहता हूँ।
इसलिए इसिलिए तो कहते हैं
न दुखाना कभी हृदय किसी का।
कटु वचनों के न चलाना बाण।
राम गुरु कहते हैं- हे मानव!
नमक से ले लेना यह संज्ञान।।

संस्कार सौरभ

# करुणाहीन होता मानव (भाग-2)

-सजग, नीमच

15-16 फरवरी 2022 के अंक में 'करुणाहीन होता मानव' शीर्षक से प्रकाशित लेख पढ़ने के बाद आप यह समझ गए होंगे कि किसी मानव के मन में आने वाले भावों पर उसकी विचारधारा का गंभीर प्रभाव पड़ता है।

पिछले लेख में मानव के मन में करुणा कम होने के कई कारण बताए गए थे, जिनमें से एक कारण है- 'दिखावा (शो ऑफ) या प्रदर्शन करने की आदत तथा प्रशंसा की अपेक्षा'। वर्तमान में दिखावा, प्रदर्शन या शो ऑफ करने की आदत के चलते महिलाएँ तथा पुरुष अपने दैनिक जीवन में कई ऐसी वस्तुओं का प्रयोग कर लेते हैं जिनका निर्माण मूलत: जीव हिंसा से ही होता है। सौंदर्य प्रसाधन में प्रयोग की जाने वाली लगभग सभी वस्तुओं का निर्माण जीव हिंसा से ही होता है। लिपस्टिक, नेल पॉलिश, फेस क्रीम, पाऊडर, फेस वॉश, परफ्यूम आदि के निर्माण में अलग-अलग जीवों की हिंसा की जाती है।

पिछले कई वर्षों में हुए अध्ययनों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं कि लिपस्टिक बनाने में भेड़ व खरगोश की चर्बी मिलाई जाती है तथा कई जीवों के रक्त का उपयोग किया जाता है। कई सौंदर्य प्रसाधनों में चिकनाई बढ़ाने के लिए कछुए का तेल प्रयोग किया जाता है। यह जानकारी इनका प्रयोग करने वाली अधिकांश महिलाओं को पता है। किन्तु यह जानने के बाद कि इनके निर्माण के लिए किसी जीव को पीड़ा दी जाती है, हिंसा की जाती है; अधिकांश महिलाएँ इनका प्रयोग करना बंद नहीं करती है। सौंदर्य प्रसाधन निर्माण के पीछे अनेक निरीह जीवों की हिंसा तथा पीड़ा दबी हुई होती है, जिसकी जानकारी होने के बाद भी लोग इनका प्रयोग करते हैं। इसके साथ ही कई अध्ययनों में यह प्रमाणित हो चुका है कि सौंदर्य प्रसाधनों के निर्माण में अनेक हानिकारक रसायनों का प्रयोग किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप त्वचा पर तथा शरीर के अन्य अंगों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

व्यवहार में जब किसी महिला को सौंदर्य प्रसाधनों के निर्माण में होने वाले हिंसा के संबंध में अवगत करवाया जाता है तो वे कहती हैं कि ''हम इनका प्रयोग प्रतिदिन नहीं करती हैं, केवल किसी विशेष अवसर पर ही प्रयोग करती हैं।'' लेकिन यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि भले ही कभी-कभी ही प्रयोग की जाए, लेकिन उसके लिए भी सौंदर्य सामग्री की न्यूनतम मात्रा तो खरीदनी ही पड़ती है और उपयोग के अभाव में एक निश्चित समय के बाद यह सामग्री खराब हो जाती है तथा इसे फेंकना पड़ता है। अब ऐसी स्थिति में सौंदर्य सामग्री का उपयोग ना करने पर भी उसके उपयोग का दोष लग जाता है।

पुरुष वर्ग के उपयोग में आने वाले बेल्ट, पर्स, जूते, जैकेट तथा महिलाओं के पर्स, जूते चमड़े के बने हुए होते हैं। यह बात अधिकांश लोगों को पता है, पर इसके बाद भी वे लोग इन वस्तुओं का प्रयोग करते हैं। उन्हें लगता है कि वर्षों से उनके बुजुर्ग इन वस्तुओं का प्रयोग करते आ रहे हैं तो इनका प्रयोग करना गलत नहीं है। उनकी इस धारणा को अधिक बल मिल जाता है जब कोई बड़ा उन्हें इन वस्तुओं का प्रयोग करने से रोकता नहीं है। रोके भी तो कैसे रोके? वे स्वयं भी इन वस्तुओं का उपयोग करते हैं।

इसके अलावा कई बार कुछ युवतियाँ सौंदर्य प्रसाधनों का उपयोग नहीं करती है तो उनको उनके परिवार की महिलाएँ सौन्दर्य सामग्री का प्रयोग करने के लिए दबाव बनाती है। इसके कारण उन्हें ना चाहकर भी इनका उपयोग करना पड़ता है। यह एक तथ्य है और इसके पीछे परिवार की महिलाओं का मत होता है कि युवतियों को शृंगार सामग्री का प्रयोग करना ही चाहिए। उनकी इस सोच का मुख्य कारण है प्रदर्शन की आदत तथा अपेक्षा दृष्टि कि देखने वाला हमारी प्रशंसा करे।

इस लेख के सार में मुख्य यह बात है कि प्रदर्शन की इच्छा तथा प्रशंसा की अपेक्षा, बाहरी सौन्दर्य का मोह इन

कारणों से ही महिला व पुरूष वर्ग अनेक वस्तुओं के निर्माण में होने वाली हिंसा को जानकर भी अनदेखा कर देते हैं तथा निरंतर इनका प्रयोग करते रहते हैं। इस प्रकार की धारणा के कारण ही महिला तथा पुरुष वर्ग द्वारा उपरोक्त वस्तुओं का प्रतिदिन उपयोग किया जा रहा है। प्रदर्शन (शो ऑफ) और प्रशंसा की अपेक्षा में उनके मन की करूणा समाप्त हो गई है और उनका ध्यान बाहरी चमक-दमक पर ही रह गया है।

इनके अलावा भी अन्य कई कारण हैं जिनके चलते मानव के मन से करूणा कम होती जा रही है। जिन पर आगे के भाग में चर्चा की जाएगी।

# नवपद की महिमा

भक्ति रस

**-दीपमाला नितिन कुमार जैन, खिरकिया**

नवपद की महिमा भारी, गुण गाएँ देव-देवी, नर और नारी,
तप में है शक्ति भारी, तप कर्म निर्जरा हेतु तप जन-मन कल्याणी।
नवपद की महिमा भारी।।

लूखा, सूखा, नीरस आहार, कहाँ किसी को भाता है,
नवपद की आराधना कर, तपस्वी तप से आनन्द मनाता है।
तप है महा मंगलकारी, नवपद की महिमा भारी।।1।।

नवपद की करके आराधना, श्रीपाल का कुष्ठ रोग मिटा भारी,
तन मन से करके साधना, निर्मल बन गई काया सारी।
तप से मिटते सब कष्ट संकट, नवपद की महिमा भारी।।2।।

आयंबिल तप से ने ही विनाश को रखा था रोक,
द्वैपायन ऋषि का द्वारिका नगरी पर था जो प्रकोप।
तप ही बना कल्याणकारी, नवपद की महिमा भारी।।3।।

सुन्दरीजी ने 60 हजार वर्ष की करके तपस्या, अपनी देह सुखाई थी,
तप को तपाया, मनोबल बढ़ाया, भरत चक्री ने भी शील की महिमा गाई थी।
तप को अपनाने वाला शाश्वत सुख का अधिकारी, नवपद की महिमा भारी।।4।।

श्रेणिक राजा की रानी ने वर्धमान तप को ठाया था,
काया को कृश करके, मुक्ति मंजिल को पाया था।
अंतगढ़सूत्र में जिनकी महिमा विस्तारी, नवपद की महिमा भारी।।5।।

धन्ना मुनि के उत्कृष्ट तप की वीर प्रभु ने गुण गरिमा गाई,
सर्वार्थ सिद्ध जा विराजे, तप की महिमा सवाई।
तप की राह चलने वाला, करता मोक्ष पथ की तैयारी।
नवपद की महिमा भारी।।6।।

रसना का दासपना जिनको नहीं सुहाया है,
काया को कसकर, देह सुखाकर, आत्मबल को दृढ़ बनाया है।
सारी दुनिया जिस रसना के स्वाद के आगे हारी है,
रस रसना को गुलाम बनाकर महापुरुषों ने तप का इतिहास रचाया है।
तपस्वी के चरणों में नतमस्तक दुनिया सारी।
नवपद की महिमा भारी, आयंबिल तप की महिमा न्यारी।।7।।

**जय जिनेन्द्र बच्चों!**

आईए, आपको कुछ इन्टरेस्टिंग बताते हैं। क्या आपको मालूम है कि आप सब बच्चे कितने इम्पोर्टेन्ट हैं। आप इस संघ मतलब श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ का एक हिस्सा हो और ये कोई छोटी-मोटी बात नहीं है। अब आप सोच रहे होंगे क्यों? तो आईए, मैं आपको बताती हूँ।

देखो, आप सबने अपने घर में मम्मी-पापा, दादा-दादी को प्रतिदिन स्थानक जाते देखा होगा और शायद सब बच्चे भी प्रतिदिन महाराज सा. के दर्शन करने जाते होंगे। जाते हैं? नहीं, तो अब से डिटरमाईन हो जाए कि कम से कम सण्डे को तो महाराज सा. के दर्शन करने जाएँगे ही।

अब सुनो, आप लोग देखते होंगे कि कैसे हमारी दादी, मम्मी, चाची पूर्ण सावधानी से धोवन पानी बनाती हैं। महाराज सा. आते हैं तो सुझता-असुझता (सुसता-असुसता) का ध्यान रखकर विवेकपूर्वक गोचरी बहराती है। कभी-कभी शिविर में जाती है और आप लोगों की तरह आपकी माताएँ भी धार्मिक परीक्षाएँ देती हैं। ये सबको पता है ना! और हाँ आप लोग भी दे रहे हो ना जैन संस्कार पाठ्यक्रम की परीक्षा? मम्मी ने नो एण्ड ग्रो में आपका रजिस्ट्रेशन करवाया कि नहीं? अरे! ऑनलाईन शिविर नहीं कराया। ओह गोड! अभी ये पढ़ते ही जाईए अपनी मम्मी-पापा के पास और कहिए कि साधुमार्गी की इन सब एक्टिविटी में आप सभी को एनरोल करवाएँ और हाँ पाठशाला तो भेजे ही भेजे। क्योंकि नहीं जाएँगे तो आप बड़े होकर संघ के लिए काम कैसे कर पाएँगे? करेंगे कि नहीं? करेंगे, क्योंकि जो मजा संघ के लिए काम करने में है, वो किसी भी चीज में नहीं। ये बात अपने दादा-पापा, नाना से जरूर पूछें। बोलें कि हमें संघ के बारे में बताओ। जानें कि आप जिस संघ का एक भाग हो वो संघ परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. के आशीर्वाद से कितने बड़े-बड़े काम जैन/अजैन के लिए उज्ज्वल भविष्य के लिए कर रहा है।

अरे, क्या सोच रहे हो? गो! मूव! पूछो अपने पैरेन्ट्स से और हाँ "Don't forget to read Shramanopasak every month" क्योंकि हम ला रहे हैं किड्स कॉर्नर, जो कि होगा 'आपका ज्ञान आपके लिए'! Wait..... wait don't be so excited...

श्रमणोपासक के हर अंक में हम देंगे आपके द्वारा भेजा गया कुछ जैन धर्म से सम्बन्धित ज्ञान, स्टोरी एण्ड **What is Jainism... then go to your family members & ask them about Jainism, Sadhumargi Sangh and our 9 Acharyas etc.**

## NOT TO WORRY!

अगर आपको कुछ ऐसा नहीं मिल रहा तो **You can ask us for your doubts** आपके **genuine questions** के उत्तर हम देंगे श्रमणोपासक में, **but the cost is you have to connect with श्रमणोपासक**।

So kids! be prepare for a Jain बच्चा

A Sadhumargi बच्चा

आज का थोड़ा ज्ञान, आपको कल साधुमार्ग की शान बनाएगा

**मिलते हैं अगले अंक में...**

इस बार के लिए आप सब बच्चे अपने माता-पिता के साथ बैठकर संघ के बारे में चर्चा करें और **"हु शि उ चौ श्री ज ग नाना, राम चमक रहे भानु समाना"** अर्थात् 9 आचार्यों के बारे में पूछें - **& share your thoughts with us on 9314055390, can mail on news@sadhumargi.com.**

**जय जिनेन्द्र!**

गुरुचरण विहार

# युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश की पावन चरणरज से केकड़ी का कण-कण हुआ पावन : 2022 का चातुर्मास उदयपुर के लिए घोषित : सर्वत्र खुशी की लहर : उदयपुर के लिए दीक्षाओं की भी घोषणा : वर्षों की तमन्ना पूरी हुई, केकड़ी की धरती पावन हुई

**हम समस्या का नहीं, समाधान का अंग बनें -आचार्य श्री रामेश**

**मन को हल्का बनाना है -उपाध्याय प्रवर**

राम गुरु हुए अवतारी, उत्तम पुरुषों की बात है न्यारी।
शुद्धाचार का बिगुल बजाया, चौथे आरे की झलक दिखलाई।।

**केकड़ी।** 1. रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक, नानेश पट्टधर, दृढ़ प्रतिज्ञ, आराध्यदेव आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा., बेले-बेले के तपस्वी, बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा इस भीषण भौतिक गर्मी में निरन्तर आध्यात्मिक अमृत वर्षा कर रहे हैं। गाँव-गाँव, नगर-नगर में जनता आत्मतृप्त हो रही है। देश-विदेश से श्रद्धालु आराध्यदेव के पावन दर्शन व प्रवचन श्रवण कर धन्यता महसूस कर रहे हैं।

2. **साधुमर्यादा में रखे जाने वाले समस्त आगारों सहित वर्ष 2022 का चातुर्मास झीलों की नगरी उदयपुर के लिए घोषित होने के साथ ही मेवाड़ के साथ-साथ सम्पूर्ण देश हर्षित व पुलकित हो गया।**

3. अन्य अनेक स्थानों के चातुर्मासों की घोषणाएँ भी हुई।

4. आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की उत्कृष्ट संयम साधना से प्रभावित होकर अनेक आत्माएँ संयम मार्ग की ओर अपना कदम बढ़ा रही हैं।

5. इसी कड़ी में मुमुक्षु कु. कविता मोतीलालजी बुच्चा-देशनोक व मुमुक्षु कु. दिव्या हनुमानमलजी पारख-गंगाशहर की जैन भागवती दीक्षा 22 अगस्त 2022 को उदयपुर में एवं मुमुक्षु मुस्कान आशकरणजी बरड़िया-देशनोक की जैन भागवती दीक्षा 11 अक्टूबर 2022 के लिए जैसे ही स्वीकृत हुई, सम्पूर्ण धर्मसभा जय-जयकारों सहित हर्षध्वनि से गूंज उठी।

6. **''राम गुरु का है सन्देश, व्यसनमुक्त हो सारा देश''** कार्यक्रम को निरन्तर अच्छा प्रतिसाद मिल रहा है। व्यसनमुक्ति संस्कार जागरण अभियान शिक्षण संस्थानों में गतिशील है।

7. नानेश पट्टधर आचार्य श्री रामेश के **''सुवर्ण दीक्षा महोत्सव''** को गंगाशहर में श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा., श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने **''महत्तम महोत्सव''** के रूप में घोषित कर हम पर महान उपकार किया है। पूरा जैन समाज और विश्व आचार्य श्री रामेश का ऋणी है।

**16 मार्च 2022, केकड़ी।** जैन स्थानक में प्रात: प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा मंगल प्रार्थना करवाई गई।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि **''विषय और कषाय से हमारी आत्मा क्षीण व कमजोर हो गई है। इसको सही बनाने का काम धर्म करता है। विषयों का मतलब पाँच इन्द्रियों का विषय सुनना, देखना, सूंघना, चखना और स्पर्श का आनन्द लेना है। यह हमारे मन को मुग्ध बनाते हैं। इससे हमारी आत्मा की शक्ति कमजोर होती है। इसका मतलब है स्वयं को कमजोर बनाना। यह शरीर जीर्ण होने वाला है। हर सुविधा के पीछे दुविधा खड़ी है। हर सुख के पीछे दु:ख है। केवल आत्मा के पीछे दु:ख नहीं है। शरीर की राख होने से पहले तक हमारी साख बनी रहे।''**

श्री गौरवमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि भौतिक पदार्थों व साधनों में सच्चा सुख नहीं है। सच्चा सुख आत्मा में है। हमें शुभ कार्य में देरी नहीं करनी चाहिए। महिला मंडल ने **''गुरु को वंदन है, अभिनंदन है''** गीतिका प्रस्तुत की। भीलवाड़ा, सवाईमाधोपुर ने श्रीचरणों में विनती प्रस्तुत की। चौमासी पर्व के उपलक्ष्य में बड़ा स्नान का त्याग लगभग पूरी सभा ने ग्रहण किया एवं रात्रि चौविहार का प्रत्याख्यान कई लोगों ने लिया।

| | |
|---|---|
| वर्ष में 250 दिन बड़े स्नान का त्याग | प्रभाजी टाटिया-राजनांदगाँव |
| वर्ष में 20 दिन मोबाइल का त्याग | पुष्पाजी गांधी-कांकेर |
| सप्ताह में एक दिन मोबाइल का त्याग | पूर्णिमाजी ओस्तवाल-रायपुर |
| 24 एकासना | मधुबालाजी पिपाड़ा |
| जमीकन्द, कोल्डड्रिंक्स का त्याग | धर्मेन्द्रजी गांधी-कांकेर |
| बाजार की मिठाई का त्याग | संतोषजी खटोड़-रायपुर |
| माह में एक दिन मोबाइल का त्याग | वीर भ्राता टीकमजी गांधी-कांकेर, नवरतनजी ओस्तवाल-रायपुर |
| 12 एकासन | अंकिताजी पीपाड़ा, वनिताजी लोढ़ा, प्रकाशजी चिप्पड़, पारसबाईजी बोरदिया |

दोपहर में उभय गुरु-भगवन्तों के पावन सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा आदि कार्यक्रम हुए।

श्री नि:श्रेयशमुनिजी म.सा. ने उत्तराध्ययन सूत्र की सुन्दर व्याख्या की। राजनांदगाँव, रायपुर, भीलवाड़ा, सवाईमाधोपुर, कांकेर, रामसर, ब्यावर, मुम्बई, निम्बाहेड़ा, इन्दौर, जयपुर, गंगाशहर, भीनासर, दुर्ग, दिल्ली, श्रीगंगानगर आदि अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

**17 मार्च, केकड़ी।** जैन स्थानक में प्रात: प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। आराध्यदेव आचार्य भगवन् ने आशीर्वाद स्वरूप मंगलपाठ श्रद्धालुओं को प्रदान किया। विभिन्न क्षेत्रों से श्रद्धालु आराध्यदेव से आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त करने के लिए चातुर्मासिक के पावन अवसर पर उपस्थित हुए।

आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए फरमाया कि **''धर्म की महिमा अपरम्पार है। धर्म की बहुत सारी व्याख्या की गई है। स्थानांगसूत्र में दस प्रकार के धर्म बताए गए हैं। नगर-धर्म, ग्राम-धर्म, राष्ट्र-धर्म को भी धर्म कहा गया है। संघ की रीति-नीति, नियम-कानून को भी धर्म कहा गया है। किन्तु अहिंसा, संयम, तप रूपी धर्म में रूढ़ हो गया है। ये हमारी आत्मा का मैनेजमेंट करने वाला धर्म है। इसको दुनिया से कोई लेना-देना नहीं है। आत्मा जो अव्यवस्थित है उसको व्यवस्थित करने के लिए अहिंसा, संयम, तप रूपी धर्म है। शरीर का भार कोई भी कम कर सकता है, किन्तु मन का भार कम करने वाला धर्म है। आज चौमासी पर्व है। पर्व का अर्थ होता है जोड़ना। पर्व की आराधना सम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा, आस्था से होती है। धर्म की सच्ची आराधना तब होगी जब कोई भी परिस्थिति मेरे मन को विचलित करने वाली नहीं हो।**

**क्रोध, अहंकार, छल-कपट से दूर हटकर सर्वप्रथम नैतिकता की नींव को मजबूत करें। शान्त भाव में रहना ही धर्म है। दुनिया को समझाने के बजाय अपने मन को समझाएँ।''**

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **शरीर के भार की अपेक्षा मन के भार को हटाना बहुत कठिन है। सम्यग्ज्ञान मन की पकड़ को ढीला करने वाला है। पकड़ को ढीला करने से बोध जागृत होता है। भारीपन को दूर करने का उपाय एक मात्र आत्मा की अनुभूति है। पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन् सबके बीच रहते हुए भी सबसे अलग है। चातुर्मास जीवन में बदलाव लाने के लिए स्वर्णिम अवसर है।**

श्री नि:श्रेयशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि धन-परिवार आदि कोई मेरा नहीं है। ममत्व भाव, लगाव, आसक्ति से हम दूर रहें। आरंभ-परिग्रह को निरन्तर कम करने का प्रयास करें।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुभद्राश्रीजी म.सा., साध्वी श्री जागृतिश्रीजी म.सा. आदि का गुरुचरणों में पधारना हुआ। अनेक भाई-बहिनों ने होली खेलने का त्याग ग्रहण किया। घर में रहते हुए एक गिलास धोवन पानी पीने एवं चार पक्की नवकारसी करने का संकल्प भी अनेक जनों ने लिया।

| | |
|---|---|
| जमीकन्द त्याग | कलाबाई कटारिया-जावरा |
| बाजार की मिठाई का त्याग | चांदकँवरजी मेड़तवाल, दिव्यानी कड़ावत-भवानीमण्डी |
| 50 पक्की नवकारसी | मोहितजी डागा-गुड़गाँव |
| वर्ष में 200 दिन बड़े स्नान का त्याग | अंजनाजी पोखरना-बेगूं |
| वर्ष में 150 दिन बड़े स्नान का त्याग | विजयकांताजी पामेचा-जावरा |
| वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग | स्नेहलताजी सांखला |
| वर्ष में 300 दिन टी.वी. का त्याग | कन्हैयालालजी बाफना-लखनपुरी |
| वर्ष में 200 दिन मोबाइल का त्याग | ऊषाजी बागावत-पांढरकवड़ा |
| सप्ताह में एक दिन मोबाइल का त्याग | योगिता फलोदिया-वरोरा |
| माह में एक दिन मोबाइल का त्याग | पंकजजी बांठिया, प्रेमलताजी-रामसर, उर्मिलाजी ओस्तवाल, अंजलिजी चण्डालिया, नरेशजी चेतनाजी मेहता-जावरा, चैनरामजी धर्मपाल |
| 365 सामायिक | निर्मलजी सामरा |
| 12 उपवास, 12 एकासन | अनिताजी नाहटा, मधुबालाजी पिपाड़ा |

दोपहर में उभय गुरु-भगवन्तों के सान्निध्य में आगम वांचनी, समाचारी विवेचन व ज्ञानचर्चा आदि हुए। श्री लाघवमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में आलोयणा पाठ हुआ। श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र की कुछ गाथाओं का विवेचन भी किया। मुनिश्री ने फरमाया कि चार माह में कौन-कौन से पापों का सेवन किया, इसके लिए अन्तर्हृदय से गुरुदेव के समक्ष पश्चात्ताप-आलोचना करनी चाहिए। आलोचना वही करता है जो निर्दोष बनना चाहता है। हर पूर्णिमा को गुरुदर्शन करने वाले इन्दौर, दिल्ली, बीकानेर, जावद, निम्बाहेड़ा आदि अनेक स्थानों के श्रद्धालु उपस्थित थे।

**18 मार्च, केकड़ी।** प्रात: मंगलमय बेला में श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने सुमधुर प्रार्थना करवाई।

विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''स्वयं का स्वयं पर नियंत्रण संयम है। स्वयं का स्वयं पर अनुशासन संयम है। तप करना आसान है, पर सबसे ज्यादा**

**दुरूह अपने मन को नियंत्रित करना है। अपने मनरूपी घोड़े की लगाम अपने हाथ में लेना और जैसे चाहें उसे चलाना बहुत कठिन है। धर्म कहता है कि तुम्हारा मन तुम्हारे नियंत्रण में होना चाहिए। भारत की संस्कृति सदा संयम प्रधान रही है। भारत की सोच अहिंसा प्रधान रही है। दुनिया को नियंत्रित करने से पहले अपने मन को कंट्रोल करें। बिखरा हुआ मन और मस्तिष्क कुछ भी उपलब्धि हासिल नहीं कर सकता। आज हमारे मन पर पैसों का नियंत्रण है। हमारी आँखों पर पैसों की चमक है। पैसा कमाने के लिए नीति-अनीति कुछ भी नहीं देखा जा रहा है। हर जगह पैसे वालों को ज्यादा महत्त्व दिया जा रहा है। धर्म की चर्चा करना बहुत आसान है किन्तु धर्म पर चलना बहुत कठिन है।''**

श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि गुरु के इंगित इशारे पर चलने वाला विनीत शिष्य है। हम गुरु की आज्ञा की आराधना करें।

साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा. ने अपने उद्‌बोधन में फरमाया कि महान सत्‌गुरु राम गुरु का हमें पावन सान्निध्य मिला है। इसका लाभ उठाकर आदर्श साधु-साध्वी व आदर्श श्रावक-श्राविकाएँ बनें। ऊँची सोच से जीवन ऊँचा बनता है। साध्वीवृन्द ने **''गुरु स्वस्थ रहें, अलमस्त रहें''** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। सभा में उपस्थित अनेक भाई-बहिनों, युवक-युवतियों ने माता-पिता, सास-ससुर से कभी अलग नहीं होने का संकल्प लिया।

| | |
|---|---|
| 50 हजार गाथा का स्वाध्याय | निर्मलाजी पोरवाल-मन्दसौर |
| वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग | राजेन्द्रजी जैन-विजयनगर, गोदावरीजी बाफना-रायपुर, देवबाई चण्डालिया |
| कोल्डड्रिंक्स, बेकरी त्याग | प्रभाजी टांटिया-राजनांदगाँव |
| होटल का त्याग | अनिलजी बाफना, पुष्पाजी गांधी-कांकेर |
| एक दिन मोबाइल का त्याग | अशोकजी देशलहरा, राजेन्द्रजी जैन |
| 12 आयंबिल | पुष्पाजी गांधी |
| 700 सामायिक | विद्याजी ओस्तवाल-मुम्बई |
| 50 पोरसी | प्रकाशजी सांखला |
| बाजार की मिठाई का त्याग | लताजी देशलहरा |
| वर्ष में 250 दिन बड़े स्नान का त्याग | नथमलजी गिड़िया |
| 365 सामायिक | सुरेन्द्रजी चिप्पड़ |
| चाय का त्याग | शीतलजी तातेड़-गेवराई |
| 12 उपवास | संजूजी मीनूजी लोढ़ा |
| 600 सामायिक | विद्याजी ओस्तवाल |

देश के अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। दोपहर में ज्ञानचर्चा हुई।

**19 मार्च, केकड़ी।** प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना जैन स्थानक में श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई।

स्थानक में आयोजित विशाल जनमेदिनी को अमृतपान कराते हुए आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''धर्म हमारे जीवन का अंग तब बनेगा जब हमारे कषाय मंद हो जाएंगे। यदि कषाय को हम मंद नहीं कर पाते हैं तो धर्म की अनुभूति नहीं हो पाएगी। धर्म-क्रियाएँ हो जाएंगी किन्तु धर्म प्रकट नहीं होगा। धर्म-क्रियाएँ अभवी आत्मा भी करती है किन्तु आत्मसंतुष्टि, आत्मतृप्ति नहीं होती। धर्म हमें आत्मतृप्त करने वाला होना चाहिए। अतृप्त व्यक्ति परेशानी और समस्याओं से घिरा रहता है। जहाँ तृप्ति की अनुभूति हो जाती है वहाँ समस्या नहीं, वहाँ समाधान मौजूद रहता है। हम समस्या का नहीं समाधान का अंग बनें। अनुकूल-**

**प्रतिकूल वातावरण हमें परेशान करने वाले नहीं बने। लक्ष्यपूर्वक जो गतिशीलता होती है वह मंजिल दिलाती है। धर्म कहता है- तुम अपने कदम मोक्ष की ओर बढ़ाओगे तो तुम्हारा कल्याण होगा। चातुर्मासिक भावना बहुत लोगों की होती है कि हमारे यहाँ होना चाहिए, हमारे यहाँ होना चाहिए, लेकिन किसलिए, क्या आधार है? चातुर्मास का लक्ष्य हमारा कषाय कम होने का होना चाहिए। विषय-आसक्ति को खोजना नहीं है। कोई ऐसी चीज नहीं मिले तो यह मेरे लिए जरूरी है, इसके बिना मेरा भोजन नहीं होता, यह खाना जरूरी है, पहनने के लिए यह कपड़ा होना चाहिए। किसी के प्रति कोई कषाय भाव नहीं रहे। इसी प्रकार से यदि हम अपने आपको साध लेते हैं तो हमें चातुर्मास मिले या नहीं मिले कोई फर्क नहीं पड़ेगा। बस मुझे मेरी आत्मा को साधना है।''**

श्री जयप्रभमुनिजी म.सा. ने अपने उद्‌बोधन में फरमाया कि सुख के लिए हम इधर-उधर भटकते रहते हैं। यह सुखाभास है। शाश्वत सुख कर्मों के क्षय से प्राप्त होता है। नौ तत्त्व का हम बोध करें।

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने अपने उद्‌गार में कहा कि आचार्य भगवन् ने अनेक आयाम देकर संघ, समाज को लाभान्वित किया है। केकड़ी के मूर्धन्य श्रावक श्री लालचन्दजी नाहटा ने आचार्य भगवन् को **''परमागम रहस्यज्ञाता''** उपाधि से कई वर्षों पूर्व ही विभूषित कर दिया है। आचार्य भगवन् की उत्कृष्ट साधना से जन-जन प्रभावित है।

स्थानीय मंत्री श्री रिषभजी सोनी ने कहा कि आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके हमें होली चातुर्मास प्रदान किया है। केकड़ी संघ हमेशा ऋणी रहेगा।

चारित्रात्माओं के एकासन, आयंबिल, उपवास, बेला-तेला तप की आराधना के साथ श्रावक-श्राविकाओं में भी प्रचुर मात्रा में तपाराधना हुई। पौषध, संवर, सामायिक में लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

| | |
|---|---|
| तेला | सीमाजी पोखरणा-सरवाड़, पुष्पाजी गांधी-कांकेर, प्रेमलताजी ललवानी |
| आजीवन क्रोध करने का त्याग | कोमलजी पोखरणा-चित्तौड़गढ़ |
| जमीकन्द का त्याग | अशोकजी पुगलिया-हैदराबाद |
| टी.वी. का त्याग | जमनाबाई चण्डालिया-कपासन |
| 50 उपवास | राजेशजी बांठिया-अहमदाबाद |
| 50 नमोत्थु णं | सोनालीजी गोरेचा-रतलाम |

दोपहर में आगम वांचनी हुई।

**20 मार्च, केकड़ी।** प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई।

विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्यदेव ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''संत-संगति से सोई हुई आत्मा जागृत हो जाती है। चातुर्मास साधु-साध्वियों की अपनी व्यवस्था है। तीर्थंकर देवों की आज्ञा है। अहिंसा की आराधना के लिए मुनि को चार महीने एक स्थान पर निवास करना होता है। एक चातुर्मास के बाद दूसरे चातुर्मास में मुनियों को कम से कम नौकल्पी विहार करने चाहिए। अहिंसा की आज्ञा पालते हुए अपने भावों को निष्पृह बनाएँ। मान-सम्मान के कामी नहीं बनें। यह विचार नहीं करें कि लोग मुझे मान दे रहे हैं या नहीं। मेरी पूजा-प्रतिष्ठा होगी, जय-जयकार होगा, लोगों से जितना सम्पर्क बढ़ाऊँगा वे उतने ही प्रभावित होंगे। इस प्रकार का लक्ष्य मुनि को नहीं बनाना चाहिए। धर्म प्रचार का काम श्रावक वर्ग का होता है। आगमों और तत्त्वों को खोजने के लिए मुनि जीवन होता है। साधना की गहराइयों में उतरना उसका लक्ष्य होता है। यदि मुनि प्रचार-प्रसार में लग जाएगा, जन सम्पर्क में लग जाएगा तो साधना कब करेगा? संघ इस बात का**

**ध्यान रखे कि साधु-साध्वी साधना में अधिक लगे। जितना हमें वे समय दें उतने में हम संतोष करें। हम भी अधिक से अधिक संत-संगति में स्वाध्याय करने का लक्ष्य रखें। श्रावक संघ साधु-साध्वियों की साधना में सहयोगी बनें।**

**द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव आदि आगारों का उल्लेख करते हुए अपने श्रीसंघों द्वारा की गई चातुर्मासों की विनती की जानकारी सभा में दी। संत-सतियों के चातुर्मासों की घोषणा जैसे ही आचार्य भगवन् ने की सभा हर्षित व पुलकित हो गई। जैसे ही आचार्य भगवन् ने अपने चातुर्मास की घोषणा झीलों की नगरी उदयपुर के लिए की तो जय-जयकारों व केसरिया-केसरिया गीत से सभा गूंज उठी। 2022 के चातुर्मास के लिए सभा में अपूर्व उमंग और उत्साह था।''**

इसी बीच श्री नीरजमुनिजी म.सा. ने चातुर्मास के लिए 32 सूत्री नियमावली का सभा में पठन किया।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **एक शरीर का भार व दूसरा मन का भार होता है। शरीर पर रखे जाने वाले भार को हल्का बनाना सरल है, पर मन का भार हल्का बनाना कठिन है। शरीर से मन की पकड़ मजबूत होती है। मन की पकड़ को ढ़ीला करेगा ज्ञान। अनुभवयुक्त ज्ञान में वह ताकत है कि हमारी पकड़ को हल्का कर सकता है। मन को हल्का बनाना चाहते हैं तो प्रतिपल चलने वाली अपनी भावनाओं का ध्यान रखना जरूरी है। आत्मतत्त्व का जहाँ शोध होता है वहाँ हल्कापन महसूस होता है। हमें ऐसे महापुरुष मिले है। जिनके जीवन में साधना की पराकाष्ठा है। जो सबके बीच में होते हुए भी अकेले रहते हैं। समत्व की बहुत ऊँची साधना करते हैं।**

शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने **''तूं सांचो थारो सांचो रे दरबार रे''** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। देश के अनेक क्षेत्रों से आए हुए संघों की विनतियों का क्रम प्रारम्भ हो गया। महेश नाहटा ने उभय गुरु-भगवन्तों के अतिशय का बखान करते हुए संघ प्रमुखों को श्रीचरणों में विनती प्रस्तुत करने हेतु आमंत्रित किया। चित्तौड़गढ़, जोधपुर, ब्यावर, अहमदाबाद, निम्बाहेड़ा, नीमच, रतलाम, कपासन, उदयपुर, सवाईमाधोपुर, दिल्ली, जयपुर आदि संघों के प्रमुखजनों ने विनतियाँ प्रस्तुत की। संघ मंत्रीजी ने कहा कि आचार्य भगवन् की असीम कृपा से केकड़ी संघ को होली चातुर्मास का अपूर्व लाभ प्राप्त हुआ। साथ ही श्री अ.भा.सा. जैन संघ, महिला समिति, युवा संघ की कार्यसमिति सभा का भव्य आयोजन हुआ। उदयपुर संघ अध्यक्षजी ने कहा कि उदयपुर मेवाड़ संघ जन्मों-जन्मों तक आपके उपकारों के प्रति ऋणी रहेगा। वर्द्धमान स्थानकवासी श्रावक संघ-केकड़ी के अध्यक्ष अरविन्दजी नाहटा आदि ने केकड़ी में पूरे एक कल्प विराजने की भाव भरी विनती प्रस्तुत की।

| | |
|---|---|
| आजीवन शीलव्रत | सुशीलजी मंजूजी मेहता-ब्यावर, राजेन्द्रजी बोथरा-रतलाम |
| 100 एकासन | सुशीलजी गोरेचा-रतलाम, राकेशजी देवड़ा-रतलाम |
| 100 बियासन | पूजाजी सांखला-दुर्ग |
| 100 पोरसी | त्रिलोकजी चौपड़ा-रायपुर |
| वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग | संगीतजी सिंघवी-इन्दौर, नरेन्द्रजी जैन-सवाईमाधोपुर |
| एक लाख गाथा स्वाध्याय | पुष्पाजी भण्डारी |
| 50 पक्की नवकारसी | गुड़िया छाजेड़, अभिषेकजी पितलिया-उदयपुर, प्रकाशजी भण्डारी, अशोकजी मोगरा, अरविन्दजी-नीमच, किरणजी चण्डालिया-इन्दौर |
| प्रतिदिन पाँच सामायिक के बिना मुँह में पानी नहीं लेना | तेजकुमारजी तातेड़-इन्दौर |

| | |
|---|---|
| माह में एक दिन मोबाइल का त्याग | संजयजी कांठेड़-रतलाम, प्रकाशजी सिपाणी, प्रकाशजी नांदेचा, धर्मचन्दजी सिसोदिया-रतलाम, हमीरमलजी नाहटा-बालोद |

दोपहर में आगम वांचनी व ज्ञानचर्चा आदि कार्यक्रम हुए।

**21 मार्च, केकड़ी।** प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने सुमधुर स्वरों में करवाई।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''कोई प्रशंसा, निन्दा करे तो विचलित नहीं होना चाहिए। धर्म हमें समभाव, तटस्थ भाव में रहना सिखाता है। ''न काहूँ से दोस्ती न काहूँ से बैर''। धर्म कहता है कि यह शरीर तुम्हारा नहीं है और आत्मा का कभी नाश होने वाला नहीं है। परिवार में जीओ पर ट्रस्टी बनकर जीओ। अधिकार किसी का नहीं रहा है। मालिक बनकर मत जीओ। वीर वह है जो बंधी हुई आत्मा को मुक्त कर दे।''**

श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि कब हमारा आयुष्य पूर्ण हो जाए पता नहीं। समय रहते संयम, वीतरागता व अच्छे कर्मों की ओर हमारे कदम बढ़ने चाहिए।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा. ने **''सौ-सौ बार वंदन''** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। श्री संदीपजी देशलहरा-दुर्ग ने सामाजिक उत्क्रान्ति की नियमावली की जानकारी दी।

| | |
|---|---|
| दो लाख गाथा का स्वाध्याय | पुष्पाजी सेठिया-बड़नगर |
| एक लाख गाथा का स्वाध्याय | मनोरमाजी चौपड़ा-उज्जैन, सोहनबाई सिंघवी-नीमच |
| 100 पक्की नवकारसी | स्नेहलताजी सांखला |
| वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग | मधुजी घोटा-रतलाम, नरेन्द्रजी कोठारी-रतलाम |
| 50 पक्की नवकारसी | अंजूजी नलवाया-उदयपुर |
| माह में एक दिन मोबाइल का त्याग | मांगीलालजी छल्लाणी-चैन्नई, प्रेमदेवी बोरदिया, मानबाई मुहणोत |
| 500 सामायिक | जतनबाई बम्ब-टोंक |

कई लोगों ने 12 एकासन, 27 लोगस्स करने का नियम लिया। दोपहर में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा एवं प्रश्नोत्तरी आदि हुए। श्री लाघवमुनिजी म.सा. प्रतिदिन दोपहर में तत्त्वज्ञान का बोध करा रहे हैं। स्कूलों में व्यसनमुक्ति कार्यक्रम चल रहे हैं।

**22 मार्च, केकड़ी।** प्रात:कालीन प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने अपने प्रेरक उद्बोधन में फरमाया कि सुख बाहर नहीं हमारे भीतर ही है। भूत-भविष्य की चिन्ता छोड़ें और वर्तमान में जीएँ। पुद्गलों पर आसक्ति नहीं रखें।

| | |
|---|---|
| 100 दिन बड़े स्नान का त्याग | भागचन्दजी बोरदिया |
| कोल्डड्रिंक्स त्याग | प्रियंकाजी बोरदिया |
| माह में एक दिन मोबाइल का त्याग | तारादेवी आंचलिया, अनिलजी कर्नावट |
| 50 पक्की नवकारसी | चन्द्रेशजी लोढ़ा-शाहपुरा |

पटेल आदर्श विद्या निकेतन-केकड़ी में व्यसनमुक्ति संस्कार जागरण का कार्यक्रम हुआ। दोपहर में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा व तत्त्वज्ञान बोध कार्यक्रम सम्पन्न हुए। बाहर के दर्शनार्थियों का आवागमन निरन्तर जारी रहा।

**23 मार्च, केकड़ी।** प्रात: मंगलमय प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने सुमधुर स्वर लहरी में करवाई।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्यदेव ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''शरीर और**

**आत्मा अलग-अलग हैं। शरीर भिन्न है, आत्मा भिन्न है। आत्मा की अनुभूति मैं कर पा रहा हूँ या नहीं? देह में रहते हुए भी जो देहातीत अवस्था में चले जाएँ उनकी बलिहारी है। भगवान महावीर के कानों में कीलें ठोकी गई, पर उन्हें दु:ख नहीं हुआ और ना ही मुँह से कोई आवाज निकली। गजसुकुमाल के सिर पर अंगारे रखे गए। अंगारे सिर पर होते हुए भी उनको अहसास नहीं हुआ कि मेरे सिर पर अंगारे हैं। यह अवस्था होती है देह में रहते हुए भी देहातीत हो जाने की। जो मेरे साथ जाने वाला नहीं है उसकी ममता किसलिए? यह ज्ञान अपने भीतर में जागृत हो जाए तो इसी का नाम धर्म है। जिसने अपने आपको जान लिया उसने सारी दुनिया को जान लिया।''**

श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि ज्ञान और ज्ञानी की आशातना कभी नहीं करनी चाहिए।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा., साध्वी श्री सुभद्राश्रीजी म.सा., साध्वी श्री ललिताश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने गुरुभक्ति गीत का संगान किया। आचार्य भगवन् के श्रीचरणों में आईदानजी झंवरीदेवी बुच्चा-देशनोक की पौत्री, मोतीलालजी चन्द्रादेवी बुच्चा की लाडली 28 वर्षीय **मुमुक्षु कु. कविताजी बुच्चा** एवं पुनमचन्दजी सूरजदेवी बरड़िया-देशनोक की पौत्री, आसकरणजी-तारादेवी बरड़िया की लाडली 28 वर्षीय **मुमुक्षु कु. मुस्कान बरड़िया** की दीक्षा हेतु परिजनों ने सहर्ष अनुज्ञा-पत्र श्रीचरणों में प्रस्तुत किया। दोनों मुमुक्षु बहिनों ने प्रतिज्ञा-पत्र का पठन किया। आशीषजी बुच्चा व दीपकजी बरड़िया ने अनुज्ञा-पत्र का पठन किया।

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मुमुक्षु कविताजी बुच्चा-देशनोक, मुमुक्षु दिव्याजी पारख-गंगाशहर की जैन भागवती दीक्षा 22 अगस्त 2022 को एवं मुमुक्षु मुस्कान आसकरणजी बरड़िया-देशनोक की दीक्षा 11 अक्टूबर 2022 के लिए जैसे ही घोषित हुई, चारों ओर खुशियों की लहर दौड़ गई। जय-जयकारों से माहौल गूंजायमान हो गया। ''राम गुरु विराट है दीक्षाओं का ठाठ है'' आदि नारे सम्पूर्ण वातावरण में गूंज उठे।

एक अलग कार्यक्रम में मुमुक्षु बहिनों व परिजनों का श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन संघ-केकड़ी की ओर से संरक्षक ज्ञानचन्दजी सुराना, अध्यक्ष अरविन्दजी नाहटा, मंत्री रिखबचन्दजी सोनी, प्रकाश नाहटा सहित संघ प्रमुखों ने तिलक, माला व शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया।

**24 मार्च, केकड़ी।** जैन स्थानक भवन में प्रात:कालीन प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए श्री नीरजमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि ''कर्मबन्ध के कार्य को सदा विलंब करना और कर्मनिर्जरा का कार्य हो तो तुरन्त करना चाहिए। लक्ष्य के अनुसार जीवन को आगे बढ़ाना चाहिए। जो आप कर रहे हो वही मिलेगा और कुछ हट कर करेंगे तो बहुत कुछ मिलेगा। शरीर की परवाह न कर एक मात्र आत्मा की ओर लक्ष्य रखना चाहिए। सभा में चैन्नई, ब्यावर, दुर्ग, भीलवाड़ा, बीकानेर सहित अनेक स्थानों के श्रद्धालु उपस्थित थे।''

शासन दीपिका साध्वी श्री सुजाताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुमेधाश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मण्डल का गुरुचरणों में पधारना हुआ।

50 पक्की नवकारसी
500 सामायिक एवं वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग
माह में 20 दिन मोबाइल का त्याग, 100 एकासन
200 पक्की नवकारसी
वर्ष में 200 दिन बड़े स्नान का त्याग
माह में एक दिन मोबाइल का त्याग

अशोकजी सांखला
चन्द्राजी छाजेड़-दुर्ग

कान्तीदेवी सांखला-दुर्ग
सुभाषजी छाजेड़-दुर्ग
कैलाशदेवी बांठिया-दुर्ग, अशोकजी लसोड़-भीलवाड़ा, बसंतजी सेठिया-भीलवाड़ा, सुनीलजी लसोड़-भीलवाड़ा,

| | |
|---|---|
| | गौतमजी सांखला-दुर्ग, ललिताजी श्री श्रीमाल, पदमजी श्रीश्रीमाल |
| पाँच तिथि मोबाइल का त्याग | राखीजी श्रीश्रीमाल-दुर्ग |
| 100 बियासना, वर्ष में 200 दिन बड़े स्नान का त्याग | वर्द्धमान कोटड़िया-भीलवाड़ा |

स्कूलों में व्यसनमुक्ति के कार्यक्रम हुए। दोपहर में श्री नीरजमुनिजी म.सा., श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने तत्त्वज्ञान का बोध कराया।

**25 मार्च, केकड़ी।** जैन स्थानक में श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना करवाई। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए श्री नीरजमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि ''तीर्थंकर देवों की वाणी पर देव-गुरु-धर्म पर अटूट श्रद्धा होनी चाहिए। **तीर्थंकरों की वाणी सत्य है, नि:शंक है, तर्कसंगत है।''**

श्री इभ्यमुनिजी म.सा. ने अपने उद्बोधन में गीत **''कैसे हो कल्याण करनी काली है, नहीं होगा भुगतान हुण्डी जाली है''** के माध्यम से फरमाया कि राम गुरु की हुण्डी से कल्याण निश्चित है। हम ऐसे सच्चे गुरु की शरण में आकर स्वयं का कल्याण करें।

साध्वी श्री समीक्षणाश्रीजी म.सा. ने जड़दृष्टि से अलग हटकर आत्मदृष्टि अपनाने की प्रेरणा देते हुए फरमाया कि संसार के कष्टों का अंत करने के लिए दृष्टि में बदलाव जरूरी है।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द भी सभा में शोभायमान थे। भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, बेगूं, चिकारड़ा, रायपुर, सूरत, बीकानेर, देशनोक, उदयपुर आदि अनेक स्थानों के श्रद्धालु गुरुभक्त उपस्थित थे। दीक्षा एवं अक्षय तृतीया आदि प्रसंगों की विनती श्रीचरणों में हुई।

| | |
|---|---|
| वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग | पन्नालालजी लोढ़ा-चिकारड़ा, वरदीचन्दजी कोठारी-बेगूं |
| 51 पोरसी | पानाबाई नौलखा-बीकानेर |
| 180 दिन शीलव्रत का पच्चक्खाण | सुशीलजी मेड़तवाल |
| 50 पक्की नवकारसी | वीर पिता इन्द्रचन्दजी बोथरा-सूरत, अशोकजी बोहरा-चिकारड़ा |
| टी.वी. का त्याग | पवनकुमारजी नाहटा |
| 4 माह जमीकन्द त्याग | ज्योतिजी सांखला, इन्द्राजी चिप्पड़ |
| 12 उपवास, 30 नमोत्थु णं जाप | प्रहलादजी लोढ़ा-चिकारड़ा |
| माह में एक दिन मोबाइल का त्याग | चंचलजी तातेड़ |
| वर्ष में 50 दिन बड़े स्नान का त्याग | प्रेमदेवी बोरदिया |
| 27 लोगस्स | मुकेशजी पोखरना-बेगूं |

आरुग्गबोहिलाभं में सेवारत भाई-बहिनों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। दोपहर में श्री नीरजमुनिजी म.सा., श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने आगम वांचनी, तत्त्वज्ञान का बोध कराया। स्कूलों में व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण के कार्यक्रम हुए।

**26 मार्च, केकड़ी।** जैन स्थानक भवन में प्रात: प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने मंगलमय उच्चारण के साथ करवाई। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए श्री नीरजमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि ''ज्ञान, दर्शन, चारित्र ये तीनों मोक्ष मार्ग के साधन हैं। सर्वप्रथम श्रद्धा, फिर ज्ञान और उसके बाद चारित्र का चरण होना चाहिए। मुनिश्री ने ज्ञान सीखने में पाँच बाधक तत्त्व- अहंकार, क्रोध, प्रमाद, रोग और आलस्य को दूर करने की प्रेरणा दी।''

श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि शरीर से हमारा सबसे ज्यादा लगाव होता है, पर शरीर साथ जाने वाला

नहीं है। आत्मा ही मेरी है। आत्मतत्त्व से ही लगाव करें। सच्चा सुख आत्मा का सुख है। महिला मण्डल-केकड़ी ने **''जिनशासन के वीरों को वंदन है, अभिनन्दन है''** गीतिका प्रस्तुत की।

शासन दीपिका साध्वी श्री चन्द्रप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा का गुरुचरणों में पधारना हुआ।

| | |
|---|---|
| आजीवन चौविहार व वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग | विकासजी सुराणा-नोखा |
| 100 गाथा का स्वाध्याय | लताजी बोथरा-कवर्धा |
| 50 पोरसी | ऋतुजी शाह |
| 12 एकासन | तेजसजी शाह |
| माह में एक दिन मोबाइल का त्याग | सुशीलजी जैन, जीवनप्रभाजी बैद, कुसुमजी भूरा-बीकानेर |
| 250 सामायिक | अशोकजी चिप्पड़-केकड़ी |
| 27 लोगस्स | वन्दनाजी सिपानी-गुवाहाटी, धर्मचन्दजी बैद-बीकानेर, अर्चितजी चण्डालिया-भीलवाड़ा |
| टी.वी. का त्याग एवं माह में चार दिन मोबाइल का त्याग | शर्मिलाजी लोढ़ा |

दोपहर में उभय गुरु-भगवन्तों के पावन सान्निध्य में ज्ञानचर्चा हुई। श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने जिज्ञासु भाई-बहिनों को तत्त्वज्ञान का बोध कराया। ब्यावर, बीकानेर, गुवाहाटी, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, सूरत आदि अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

**27 मार्च, केकड़ी।** जैन स्थानक में प्रात: मंगलमय समता शाखा पाठ श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाए।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि **''धर्म करने से शान्ति और समाधि प्राप्त होती है। समाधि का अर्थ है मन की ऊहापोह शान्त हो जाना। क्रोध, भय, लोभ, हास्य आदि समाधि के लिए बाधक तत्त्व हैं। क्रोध से विचार शुद्ध नहीं हो पाते हैं। धर्म की अगर आराधना की हो तो क्रोध नहीं आएगा। धर्म का सम्बन्ध समाधि के साथ जुड़ा हुआ है। धर्म जितना गहरा होगा उतनी ही आत्म-समाधि होगी और वह समाधि ऐसी होगी कि कोई आपका कितना भी बुरा कर दे फिर भी आप उसके लिए तैयार नहीं होंगे। मेरा मन बुरा होने के लिए तैयार नहीं है तो मेरा कोई बुरा कर ही नहीं सकता। जब मैं बुरा होऊँगा तब मेरे साथ बुरा होगा और मैं बुरा नहीं हूँ तो मेरे साथ बुरा नहीं हो सकता। मैं कोई भी कार्य छुपाकर नहीं करूँगा। छुपाने से भय होता है। मुझे किसी दूसरे के दुर्गुण नहीं देखने हैं। लोभ-लालच हमारे भीतर भय पैदा करते हैं। व्यर्थ हंसी-मजाक गंभीरता को खत्म करता है।''**

श्री नीरजमुनिजी म.सा. ने सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन की सुन्दर विवेचना की। शासन दीपिका साध्वी श्री चन्द्रप्रभाजी म.सा. ने ''गुरु ज्ञान के दिवाकर है, सौ-सौ बार वन्दन है'' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। सभा में उपस्थित भाई-बहिनों ने माह में कम से कम दो दिन प्रतिक्रमण करने का संकल्प लिया।

| | |
|---|---|
| वर्ष में 150 दिन बड़े स्नान का त्याग | कंचनजी तातेड़ |
| 50 पक्की नवकारसी | राजेशजी सिंघवी-जावरा |
| वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग | विमलाजी बम्ब-देवली |
| वर्ष में 75 दिन बड़े स्नान का त्याग | अंजलीजी चौधरी-कोटा |
| वर्ष में 50 दिन बड़े स्नान का त्याग | रेखाजी हिंगड़, कान्तिदेवी जैन, रानीजी जैन, राजकुमारजी जैन |
| बाजार की मिठाई का त्याग | अरुणजी समताजी कांकरिया-सूरत |
| माह में 1 दिन मोबाइल का त्याग | ऊषाजी कांकरिया-सूरत, अनिलजी जैन-कोटा |

| | |
|---|---|
| 11 माह टी.वी. का त्याग | मधुबालाजी पिपाड़ा |
| 12 एकासन | अश्विनजी भण्डारी, मुकेशजी पंचारिया, संजयजी-जावरा |

भीलवाड़ा, टोंक, देवली, अजमेर, विजयनगर कोटा, रामपुरा कोटा आदि अनेक क्षेत्रों को स्पर्शने सहित अन्य विनतियाँ श्रीचरणों में प्रस्तुत हुई।

निवर्तमान राष्ट्रीय महामंत्रीजी ने टोंक पधारने की पुरजोर विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की। दोपहर में उभय गुरु-भगवन्तों के पावन सान्निध्य में पावन ज्ञानचर्चा हुई। श्री लाघवमुनिजी म.सा. द्वारा तत्त्वज्ञान बोध कराया गया। रात्रि में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

**28 मार्च, केकड़ी।** प्रात: मंगलमय प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई।

धर्मसभा में अपूर्व संयम गर्जना में परम प्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''हमारा लक्ष्य कर्मनिर्जरा का होना चाहिए। आज का दिन वीतरागता को प्रकट करने में लगाना है। शरीर की नहीं आत्मा की चिन्ता करना है। राग-द्वेष को हटाने की जरूरत है। थोड़ा-सा सोचने का तरीका बदल दें तो संक्लेश उत्पन्न नहीं होगा। सोच को थोड़ा बदलने से बहुत बड़ा रहस्य प्रकट हो सकता है।''**

श्री इभ्यमुनिजी म.सा. ने 14 पूर्वों का सार महामंत्र नवकार की महिमा का बखान किया। शासन दीपिका साध्वी श्री चन्द्रप्रभाजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने ''छत्तीस गुणों के धारी, गुरुवर तुम हो महान'' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

| | |
|---|---|
| वर्ष में 200 संवर | रिषभजी सांखला |
| 50 पक्की नवकारसी | अमृताजी मेड़तवाल |
| 51 एकासन | पानाबाई नवलखा |
| वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग | सुशीलाजी लोढ़ा |
| 27 लोगस्स | सविताजी पोखरना |
| वर्ष में 50 दिन बड़े स्नान का त्याग | नरेन्द्रजी कोठारी |

किशनगढ़, अजमेर, भीलवाड़ा, रतलाम, बीकानेर, इन्दौर आदि अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। दोपहर व रात्रि में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

**29 मार्च, केकड़ी।** जैन स्थानक भवन में प्रात:कालीन प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने सुमधुर स्वरों में करवाई। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए श्री नीरजमुनिजी म.सा. ने ''सत्कर्म करो, सत्कर्म करो, सत्कर्म सदा शुभ फल देता है'' गीतिका के माध्यम से अपने उद्बोधन में फरमाया कि- हमारे अन्दर अनन्त शक्ति है, पर उस शक्ति को पहचानने, प्रकट करने और उसे सही दिशा में ले जाने की जरूरत है। परम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भागीरथी पुरुषार्थ करना होगा। आचरण-क्रिया समझपूर्वक, ज्ञानपूर्वक अगर नहीं होगी तो वह परिणाम देने वाली नहीं हो सकती। भावशून्य क्रिया का कोई मूल्य नहीं है। गुरु आज्ञा शिरोधार्य होनी चाहिए। तपस्या हो धार्मिक क्रिया मात्र कर्मनिर्जरा के लिए होनी चाहिए।

श्री इभ्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि- हम जैसा कर्म करते हैं वैसा ही हमें फल प्राप्त होता है। शुभ कार्यों में देरी नहीं करनी चाहिए। अशुभ कार्य को टाल देना चाहिए। महिला मण्डल ने ''जिनशासन को वन्दन है, अभिनन्दन है, महावीर के सपूतों को वंदन है, अभिनन्दन है'' गीतिका प्रस्तुत की। हर घर में ग्यारह नवकार मंत्र का जाप करने का नियम अनेक भाई-बहिनों ने लिया।

| | |
|---|---|
| आजीवन शीलव्रत | विजयजी निशादेवी सांड-इन्दौर |

| | |
|---|---|
| आजीवन डेढ़ पोरसी व चौविहार का नियम | चन्द्राकँवर मेड़तवाल |
| माह में चार दिन मोबाइल का त्याग | वीरमाता कस्तूरीजी गुलगुलिया-बीकानेर |
| माह में एक दिन मोबाइल का त्याग | विजयजी निशादेवी सांड-इन्दौर, चन्द्राकँवर मेड़तवाल |
| 50 पक्की नवकारसी | शान्तिदेवी सुकलेचा |
| कोल्डड्रिंक्स का त्याग | अनिताजी सांखला |
| पिज्जा, बर्गर त्याग | आर.बी. सांखला |
| 100 संवर | विमलाजी पारख-नोखा |
| वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग | नीलमजी बोथरा-गंगाशहर, पिंकी गुलगुलिया-गंगाशहर |
| 12 आयंबिल | उर्मिलाजी बोथरा-गंगाशहर |
| वर्ष में डेढ़ लाख गाथा का स्वाध्याय | निशाजी सांड-इन्दौर |
| माह में 4 पक्की नवकारसी | अलीगढ़ महिला मण्डल |

उदयपुर, सवाईमाधोपुर, अलीगढ़, ब्यावर, विजयनगर, नोखा, कोलकाता, अजमेर, किशनगढ़, इन्दौर, दिल्ली, बीकानेर, गंगाशहर सहित अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का अपूर्व लाभ लिया।

प्रवचन एवं मंगलपाठ के बाद आचार्य भगवन् का अपनी सान्निध्यवर्ती चारित्रात्माओं सहित **जगदीशपुरा** में महावीरजी जाट के निवास स्थान पर इस तपतपाती धूप में पदार्पण हुआ। दिनभर दर्शनार्थियों का तांता लगा रहा। रात्रि में श्री मनीषमुनिजी म.सा. एवं श्री इभ्यमुनिजी म.सा. ने ग्रामीणों को भजन के माध्यम से धर्म की शिक्षा देते हुए मानव जीवन की दुर्लभता, सत्यनिष्ठा एवं ईमानदारी पूर्वक व्यसनमुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। कई शुभ संकल्प हुए।

जगदीशपुरा से आराध्यदेव आचार्य भगवन् आदि ठाणा-5 का **रामपाली** में जय-जयकारों के साथ नौरतजी बिहाणी के निवास स्थल पर पधारना हुआ। गुर्जर, ब्राह्मण, बैरवा व माहेश्वरी आदि समाज के लोगों ने सेवा-भक्ति का परिचय दिया। स्थानीय सरपंच सीमादेवी साँवरलालजी गुर्जर एवं मेवदा खुर्द के सरपंच ज्ञानचंदजी लोढ़ा ने अपने-अपने गाँव में माँस-मछली-अण्डा आदि की बिक्री खुले रूप में करने पर प्रतिबंध लगाने की बात कही। स्कूलों में व्यसनमुक्ति कार्यक्रम हुए। लुधियाना (पंजाब), सूरत, कोलकाता, दिल्ली, केकड़ी, मुम्बई, बिजयनगर, मेवदा, बीकानेर आदि अनेक क्षेत्रों के श्रद्धालुओं ने आचार्य भगवन् के पावन दर्शन-सेवा का लाभ लिया।

**31 मार्च, जालिया।** जालिया में किशनलालजी जाट के निवास स्थान पर आचार्य भगवन् आदि चारित्रात्माओं का जय-जयकारों के साथ मंगलमय पदार्पण हुआ। जाट, गुर्जर भाइयों की सेवाएँ अनुपम रही। बिजयनगर, भीलवाड़ा, उदयपुर, केकड़ी, फूलिया, नागोला, देशनोक, कोलकाता, मुम्बई आदि अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से धर्मबोध प्राप्त कर विभिन्न संकल्प श्रद्धालुओं ने ग्रहण किए। व्यसनमुक्ति, गुणशील के संकल्प हुए। स्कूलों में व्यसनमुक्ति संस्कार जागरण अभियान हुए।

गाँव-गाँव में आचार्य भगवन् का प्रभावी विचरण होने से जनसामान्य को धर्म लाभ निरन्तर प्राप्त हो रहा है। महावीर जयन्ती, अक्षय तृतीया, दीक्षा प्रसंग हेतु विभिन्न संघों की विनतियाँ निरन्तर श्रीचरणों में हो रही हैं। उदयपुर संघ वर्ष 2022 का चातुर्मास खुलने से अतिउत्साहित है।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-3 केकड़ी में निरन्तर धर्म की अद्भुत प्रभावना कर रहे हैं। आचार्य प्रवर एवं उपाध्याय प्रवर के पावन चरण बिजयनगर, उदयपुर की ओर गतिशील हैं।

**(आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर व अन्य चारित्र आत्माओं के प्रवचन अंश पढ़कर चिन्तन करें जो कि निश्चय ही आत्मकल्याण का मार्ग दिखाएगा।)**

**-महेश नाहटा**

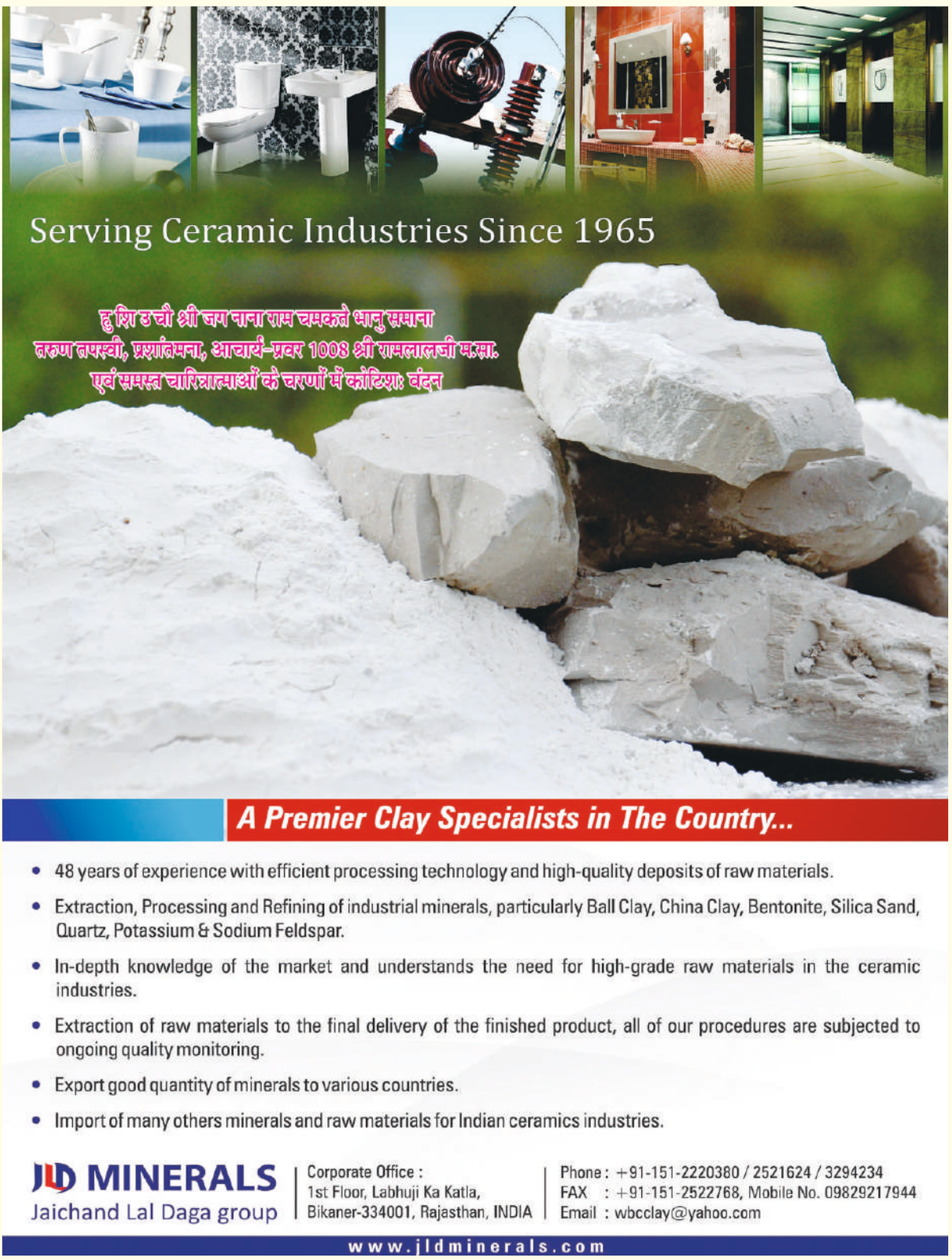
Serving Ceramic Industries Since 1965
हु शि उ चौ श्री जय नाना राम चमकते भानु समाना
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, आचार्य-प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिशः वंदन
A Premier Clay Specialists in The Country...
• 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
• Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
• In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
• Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
• Export good quantity of minerals to various countries.
• Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.
JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group
Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA
Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com
www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

# CONTRIBUTING TOWARDS THE CANCER TREATMENT

PATIENT ROOM

RECEPTION HALL WITH PARENTS' PHOTO

RK Sipani and Daga Family donated a 390 bed charitable hospital for the poor and needy at KIDWAI Memorial Institute of Oncology.

The block was inaugurated by Shri Kumaraswamy, the honourable Chief Minister of Karnataka on 22nd Dec 2018.

We look forward to contributing to a better world with our upcoming charitable ventures.

**RK Sipani Foundation**

#439, 18th Main, 6th Block, Koramangala, Bangalore - 560 095
Contact: Prakash 9448733298, Sipani Office: 08041158525 I Email: sipanigrand@gmail.com

# संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां


प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)
फोन : 0151-2270261, मो. : 9509081192
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

गौतम चन्द जैन, मुम्बई

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर


श्रमणोपासक सदस्यता

| | | |
|---|---|---|
| आजीवन (अर्द्ध मूल्य) | (केवल भारत में) | 500/- |
| | (विदेश हेतु) | 10,000/- |
| वार्षिक | (केवल भारत में) | 60/- |
| | (विदेश हेतु) | 1,000/- |
| वाचनालय वार्षिक | (केवल भारत में) | 50/- |
| प्रस्तुत अंक मूल्य | | 10/- |

संघ सदस्यता

| | |
|---|---|
| साधारण सदस्यता | 500/- |
| आजीवन सदस्यता | 5,000/- |

साहित्य सदस्यता

| | | |
|---|---|---|
| 15 वर्ष | (केवल भारत में) | 3,000/- |

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

## बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner
State Bank of India
SCAN & PAY

Account No. : 31264126681
IFSC Code : SBIN0003401
Branch : G.S. ROAD, Bikaner
Mob. : 7073311108
E-mail : accounts@sadhumargi.com

## व्हाट्सएप्प और ई-मेल आईडी

| | | |
|---|---|---|
| श्रमणोपासक | : 9799061990 : | |
| श्रमणोपासक समाचार | : 8955682153 : | news@sadhumargi.com |
| साहित्य | : 8209090748 : | publications@sadhumargi.com |
| महिला समिति | : 7231033008 : | ms@sadhumargi.com |
| समता युवा संघ | : 7073238777 : | yuva@sadhumargi.com |
| धार्मिक परीक्षा | : 7231933008 | examboard@sadhumargi.com |
| कर्म सिद्धान्त | : 7976519363 | |
| परिवारांजलि | : 7231933008 : | anjali@sadhumargi.com |
| विहार | : 8505053113 : | vihar@sadhumargi.com |
| पाठशाला | : 9982990507 : | Pathshala@sadhumargi.com |
| शिविर | : 7231833008 : | udaipur@sadhumargi.com |
| ग्लोबल कार्ड अपडेशन | : 6265311663 : | globalcard@sadhumargi.com |

**-: सूचना :-**

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें।
इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।
कार्यालय समय- प्रात: 10.00 से सायं 6.30 बजे तक
लंच- दोपहर 1.00 से 1.45 बजे तक

## आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें।

इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप्प करें।

जय गुरु नाना जय महावीर जय गुरु राम

YOUR TRUST

RAKSHA® PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
RAKSHA
SHAND GROUP
SINCE 1977

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand
SHAND GROUP OF INDUSTRIES
No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com

Diamond Duroflex
Diamond DUROLON
DURO RING
Now with new M.R.O. Technology Resists high Impact
LEAK PROOF
IS 15778 : 2007
CM/L NO : 2526149
ENVIRONMENT FRIENDLY LEAD FREE
cftri CERTIFIED
UV STABILIZED
LUCALOR FRANCE

FIRST TIME IN INDIA
ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

www.shandgroup.com रक्षा जीवन भर की सुरक्षा www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए भण्डारी ऑफसेट, जोधपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25000

प्रेषक :श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261